आर.एन.आई. नं. 3653/57
मुद्रण तिथि 5 से 8 नवम्बर, 2021
डाक प्रेषण तिथि 10 नवम्बर, 2021

वर्ष : 79 अंक : 11
कार्तिक, 2078 मूल्य : ₹ 10
पृष्ठ संख्या 104

डाक पंजीयन संख्या Jaipur City/413/2021-23
WPP Licence No. Jaipur City/WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नवम्बर, 2021

नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणं
नमो लोए सव्वसाहूणं
एसो पंच नमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

Website : www.jinwani.in

ज्ञानी होने का सार यही है कि वह किसी की हिंसा नहीं करता।
– प्रभु महावीर

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती

* * *

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा

* * *

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :

Rajeev Nita Daga Foundation Houston

जय गुरु हस्ती जय महावीर जय गुरु हीरा-मान

श्री कुशलरत्नगजेन्द्रहीरागणिभ्यो नमः

अंक सौजन्य

सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, अनन्त श्रद्धा के केन्द्र

आचार्यप्रवर 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा.

व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक

श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

के चरण कमलों में शत-शत वन्दन, नमन।

स्वर्गीय श्रीमती शान्ता नाहर
भोपाल (मध्यप्रदेश)
(18 अगस्त, 1956-09 अक्टूबर, 2021)

दृढ़धर्मी अनन्य गुरुभक्त

श्रावकरत्न स्व. श्री रतनलालजी नाहर
श्रावकरत्न स्व. श्री माणिकलालजी नाहर
श्राविकारत्न स्व. श्रीमती सरलाजी धर्मसहायिका
स्व. श्री माणिकलालजी नाहर
श्राविकारत्न स्व. श्रीमती शान्ताजी धर्मसहायिका
श्री राजेन्द्रजी नाहर

का पावन स्मरण

श्रद्धान्वित गुरुभक्त

नाहर परिवार (बरेली वाले)
राजेन्द्र
सचिन-अंशिता, रिया, ऋषभ
नितिन-पूजा, अर्णव, विहान
भोपाल-इन्दौर-बरेली

ई 2/118, अरेरा कॉलोनी,
महावीर नगर, भोपाल-462016
(मध्यप्रदेश)

जय गुरु हस्ती जय महावीर जय गुरु हीरा–महेन्द्र–मान

श्री कुशलरत्नगजेन्द्रहीरागणिभ्यो नमः

अंक सौजन्य

जीवन उन्नत करना चाहो तो
सामायिक स्वाध्याय करो

–आचार्यश्री हस्ती

61 दिवसीय संथारा साधिका
श्राविकारत्न स्वर्गीय
श्रीमती केलाबाईजी हीरावत

अनन्य
गुरुभक्त
दृढ़धर्मी
सरलमना

श्रावकरत्न, सरलमना
स्वर्गीय श्री महताबचन्दजी हीरावत
जयपुर (राज.)

श्रद्धान्वित परिवारजन

श्रीमती लाड़देवी हीरावत

सुपुत्र-सुपुत्रवधू :: अनिल-ललिता, सुनील-नीना हीरावत
सुपौत्र-सुपौत्रवधू :: निमिष-अर्चना, प्रपौत्र जीयान हीरावत
सुपुत्री-सुपुत्री दामाद :: नलिनी-सुरेन्द्रसिंहजी कर्णावट
सुपौत्री-सुपौत्री दामाद :: श्रेणा-कार्तिक सुकुमार, सुरैना-रौनक मेहता
दोहिते-दोहितेवधू :: आशीष-पूजा, आयुष-रोशनी, अर्पित-चेलना
प्रदोहिते-प्रदोहिती :: आरोही, काव्या, युवान, रीवा कर्णावट
कीयाना सुकुमार

एवं समस्त हीरावत परिवार

ISSN 2249 - 2011 हिन्दी-मासिक

जिनवाणी

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

卐 **संरक्षक**
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
प्लॉट नं. 2, नेहरुपार्क, जोधपुर (राज.), फोन-0291-2636763
E-mail : absjrhssangh@gmail.com

卐 **संस्थापक**
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 **प्रकाशक**
अशोककुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182, के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997
जिनवाणी वेबसाइट- www.jinwani.in

卐 **प्रधान सम्पादक**
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

卐 **सह-सम्पादक**
नौरतनमल मेहता, जोधपुर
मनोज कुमार जैन, जयपुर

卐 **सम्पादकीय कार्यालय**
ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.)
फोन : 0141-2705088
E-mail : editorjinvani@gmail.com

卐 **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2021-23
WPP Licence No. JaipurCity-WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

चिच्चाण धणं च भारियं,
पव्वइओ हि सि अणगारियं।
मा वंतं पुणो वि आविए,
समयं गोयम! मा पमायए।।
-उत्तराध्ययन सूत्र, 10.29

धन-पत्नी को छोड़, प्रव्रज्या,
से मुनिता के पथ (पर) बढ़कर।
वान्त भोग फिर मत पीना,
गौतम! प्रमाद क्षण का मतकर।।

नवम्बर, 2021
वीर निर्वाण सम्वत्, 2548
कार्तिक, 2078

वर्ष 79 अंक 11

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.
20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.
20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.
स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
संरक्षक सदस्यता : 11000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि ``JINWANI'' बैंक खाता संख्या SBI 51026632986 **IFSC No. SBIN** 0031843 में जमा कराकर जमापर्ची (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता **'जिनवाणी'**, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, E-mail : sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-4043938

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	धार्मिक व्यक्ति के लक्षण	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-डॉ. धर्मचन्द जैन	10
विचार-वारिधि-	आत्मशुद्धि के सूत्र	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	11
प्रवचन-	मैं कौन? मेरा स्वरूप क्या?	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	12
	मौत का समय ज्ञात नहीं, अत: चेत जाएँ	-भावी आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.	15
	सम्यग्ज्ञान की रोशनी में जगमगाएँ हम	-मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी	17
	धर्म के सहकार से पुण्य में उत्कृष्टता	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.	21
	ममकार और अहंकार के त्याग से अनन्त सुख	-श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.	27
शोधालेख-	जैन परम्परा में श्रावकाचार विषयक ग्रन्थ एवं उपासकदशाङ्गसूत्र का महत्त्व	-डॉ. धर्मचन्द जैन	30
	जैन दृष्टिकोण में सृष्टि	-डॉ. पी. सी. जैन	40
जीवन-व्यवहार-	व्यावहारिक जीवन के नीति वाक्य (10)	-श्री पी. शिखरमल सुराणा	42
चिन्तन-	जिनशासन की प्रभावशाली प्रभावना	-श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	43
English-section	**A Chance To Peace**	*-Sh. Jitendra Chaurdia*	48
संथारा-इतिवृत्त-	गौरवशाली रत्नसंघीय संथारे : एक महत्त्वपूर्ण विवरण	-श्री नौरतनमल मेहता	50
युवा-स्तम्भ-	मूल्य और सामाजिक अपेक्षाएँ	-श्री पदमचन्द गाँधी	57
तत्त्व-चर्चा-	आओ मिलकर कर्मों को समझें	-श्री धर्मचन्द जैन	60
रिपोर्ट-	आचार्य हस्ती-स्मृति वेबिनार रिपोर्ट	-डॉ. धर्मचन्द जैन	63
गीत/कविता-	बन्धनों से मुक्ति	-डॉ. रमेश 'मयंक'	20
	आचरण नहीं ढंग का	-श्री शिखरचन्द छाजेड़	20
	नवतत्त्व	-श्रीमती सेहल जैन (हरकावत)	29
	जलता समन्दर, तिरती नाव	-सुश्री स्वर्णिमा जैन	29
	गुरु वन्दन	-श्री नौरतमल चपलोत	47
	गुरु महेन्द्र सवैया	-महासती श्री रुचिताजी म.सा.	59
विचार/चिन्तन-	मैं अपने से प्रेम करता हूँ	-महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.	39
	कन्या, झुकना अच्छा है	-श्री पीरचन्द चोरड़िया	71
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-श्री गौतमचन्द जैन	65
पर्युषण रिपोर्ट-	श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर पर्युषण पर्वाराधना रिपोर्ट	-श्री सुभाष हुण्डीवाल	67
समाचार-विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	72
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	89
बाल-जिनवाणी -	विभिन्न आलेख/रचनाएँ	-विभिन्न लेखक	91

सम्पादकीय

धार्मिक व्यक्ति के लक्षण

डॉ. धर्मचन्द जैन

यह कैसे जाना जाय कि कोई व्यक्ति धार्मिक है? नियमित रूप से धर्मक्रियाएँ करना ही धार्मिक होने का लक्षण है, या अन्य भी कोई पहचान है, जिससे किसी को धार्मिक माना जा सके? धर्ममय जीवन जीने वाले के जीवन में अवश्य कोई ऐसा प्रभाव होना चाहिए, जिससे उसे धार्मिक समझा जा सके। धर्मक्रियाएँ करने पर भी किसी के जीवन में उसके लक्षण दृष्टिगोचर न हों, तो क्या उसे सचमुच में धार्मिक कहा जा सकता है? आचार्य हरिभद्रसूरि ने षोडशकप्रकरण (4.2) में धार्मिक व्यक्ति के पाँच लक्षण निरूपित किए हैं-

औदार्यं दाक्षिण्यं पापजुगुप्साऽथ निर्मलो बोधः।
लिङ्गानि धर्मसिद्धेः प्रायेण जनप्रियत्वं च।।

जिसके जीवन में धर्म उतर गया है अथवा जिसका जीवन धर्ममय है, उसमें औदार्य, दाक्षिण्य, पापजुगुप्सा, निर्मल बोध और जनप्रियता ये पाँच लक्षण अभिव्यक्त होते हैं।

हरिभद्रसूरि के अनुसार कृपणता या स्वार्थ का त्याग करके असंकुचितवृत्ति से गुरुजनों, दीनों एवं असहायों के प्रति औचित्यपूर्ण व्यवहार करना औदार्यगुण है। औचित्यपूर्ण व्यवहार का तात्पर्य है गुरुजनों के प्रति विनय का व्यवहार, दीनों को ससम्मान सहयोग करना आदि। उचित रीति से दान करना धार्मिकता का द्योतक है। इससे विश्व के पीड़ित, जरूरतमन्द एवं निर्धन मानव समुदाय के प्रति धर्मनिष्ठ व्यक्ति की उदारता का सन्देश प्राप्त होता है, जो सम्पूर्ण मानव-समाज में सौहार्द का सञ्चार करने में सहायक है। आज कई लोग धर्म के नाम पर दान आदि कार्यों को हेय मानते हैं, किन्तु जैनधर्म में 'दान' भी धर्म का एक अङ्ग स्वीकृत है।

परिजन, मित्र आदि के कार्यों में उत्साहपूर्वक धीरता एवं गम्भीरता के साथ सहयोग का शुभभाव दाक्षिण्य है। यह भाव मात्सर्य या ईर्ष्या का नाश करने वाला है। दूसरों की प्रशंसा को सहन नहीं कर पाना मात्सर्य है। मनुष्य प्रायः दूसरों के सुख को, दूसरों की प्रशंसा को सहन नहीं कर पाताहै। धर्मनिष्ठ व्यक्ति दूसरों की प्रशंसा में भी प्रसन्न होता है। यह धार्मिक व्यक्ति का दूसरा लक्षण है।

तीसरा लक्षण है-पापजुगुप्सा। मन, वचन एवं काया के स्तर पर सतत पाप का त्याग करना पापजुगुप्सा है। धार्मिक व्यक्ति पापक्रियाओं से दूर रहता है। वह मन से किसी के लिए बुरा नहीं चाहता, वचन से कटु एवं अपशब्दों का प्रयोग नहीं करता तथा काया से भी पाप का आचरण नहीं करता। वह न केवल धार्मिक स्थल पर पाप से विरति करता है, अपितु व्यवसाय एवं समाज में भी पाप की प्रवृत्ति करने से दूर रहता है। वह स्थूल रूप में हिंसा, झूठ, चोरी, व्यभिचार आदि पापों से विरत रहता है। किसी की धन-सम्पत्ति को हड़पने का प्रयत्न नहीं करता। बेतहासा लोभ-लालच में पड़कर दुष्प्रवृत्ति नहीं करता। किसी का शोषण नहीं करता एवं व्यर्थ में पीड़ा नहीं देता।

चतुर्थ लक्षण है-निर्मल बोध। जब कोई पाप प्रवृत्तियों से पृथक् रहता है तो उसका बोध भी निर्मल हो जाता है। निर्मल बोध के लिए शास्त्रों का एवं सत्साहित्य का स्वाध्याय सहायक है। गुरुवर्य सन्त-सतियों के पावन प्रवचन इसमें सहकारी हैं। कोई निर्मल चित्त वाला व्यक्ति संसार की घटनाओं को देखकर एवं अनित्य, अशरण, एकत्व, संसार आदि भावनाओं का आलम्बन लेकर भी बोध प्राप्त कर लेता है। निर्मल बोध वह है जो राग-द्वेष की मलिनता को उत्पन्न नहीं करता, अपितु उसे प्रक्षालित करने में सहयोगी होता है। यह निर्मल बोध भी आचार्य हरिभद्रसूरि ने तीन प्रकार का बताया है-

श्रुतमय, चिन्तामय एवं भावनामय। शास्त्र का श्रवण करने या स्वाध्याय करने से होने वाला ज्ञान श्रुतमय है। इसके अनन्तर जो अतिसूक्ष्म युक्तियों के चिन्तन से ज्ञान प्रकट होता है और जल में प्रसृत तेल-बिन्दु के समान व्यापक होता है वह चिन्तामय ज्ञान है। चिन्तन के कारण यह ज्ञान विस्तार को प्राप्त कर लेता है। भावनामय ज्ञान सर्वोत्कृष्ट होता है। भावनामय ज्ञान में भी जीवों के प्रति हितकारी वृत्ति होती है तथा यह अनित्यादि भावनाओं से जन्य होता है। इस ज्ञान के कारण धार्मिक व्यक्ति किसी का अहित नहीं चाहता और न अहित करता है। वह सर्वहितकारी प्रवृत्ति को उचित मानता है।

धार्मिक व्यक्ति का पञ्चम लक्षण है- जनप्रियत्व। वह लोगों को प्रिय लगता है, क्योंकि वह किसी का बुरा नहीं करता है। वह सबका हित चाहता है एवं दूसरों से अपने लिए विशेष अपेक्षा नहीं करता है। वह स्व-पर के प्रति राग-द्वेष एवं पक्षपात से रहित होकर व्यवहार करता है। जनप्रिय वैसे कोई नेता, अभिनेता एवं खिलाड़ी भी होता है, किन्तु उनका निजी जीवन निर्मल होना आवश्यक नहीं है। धर्ममय जीवन जीने वाले का निजी जीवन भी निर्मल होता है तथा व्यवहार भी प्रिय होता है।

समदर्शी आचार्य हरिभद्रसूरि ने धार्मिक व्यक्ति के इन पाँच लक्षणों में कहीं भी कर्मकाण्ड, बाह्य क्रिया या कट्टरता को आधार नहीं बताया है। उन्होंने धर्मक्रिया का जीवन में जो प्रभाव अंकित होता है उसे ही कुछ बिन्दुओं में वर्णित किया है।

युग प्रभावक आचार्य हरिभद्र ने उपर्युक्त पाँच लक्षणों के साथ षोडशकप्रकरण (4.9) धार्मिक व्यक्ति को चार पाप-विकारों से रहित भी प्रतिपादित किया है-

तन्नास्य विषयतृष्णा, प्रभवत्युच्चैर्न दृष्टिसम्मोहः।
अरुचिर्न धर्मपथ्ये न च पापक्रोधकण्डूतिः।।

धार्मिक मानव में विषयतृष्णा, दृष्टिसम्मोह, धर्ममार्ग में अरुचि तथा क्रोध की खुजली रूप पापविकार नहीं होते हैं। जिसमें ये चार विकार होते हैं, मानना चाहिए कि उसके जीवन में धर्म नहीं उतरा है। शब्द, रूप, गन्ध, रस, स्पर्श आदि विषयों में किसका कितना सेवन करना, इसके विवेक से हीन व्यक्ति विषय-भोगों में सदैव अतृप्त बना रहता है। वह इनके संग्रह में लगा रहता है तथा विषय-भोगों के प्रति तृष्णावान रहता है। समझना चाहिए कि वह अभी धार्मिक लक्षणों से युक्त नहीं है।

दूसरा पापविकार दृष्टिसम्मोह है। इसके कारण व्यक्ति पक्षपाती होता है एवं सही रूप से निष्पक्ष व्यवहार नहीं कर पाता है। वह समान गुण वाली वस्तु, व्यक्ति आदि के प्रति भेदभाव की दृष्टि रखता है। धार्मिक व्यक्ति इस प्रकार की दृष्टि से रहित होता है। वह सही को सही एवं गलत को गलत समझता है एवं तदनुरूप आचरण करता है। इस दृष्टिसम्मोह से रहित होने के कारण ही हरिभद्रसूरि कहते हैं-

पक्षपातो न मे वीरे, न द्वेषः कपिलादिषु।
युक्तिमद् वचनं यस्य, तस्य कार्यः परिग्रहः।।

न तो मेरा महावीर में पक्षपात है, न कपिल आदि ऋषियों के प्रति द्वेष है। जिसका वचन युक्तियुक्त है, उसको स्वीकार करना चाहिए।

तीसरा विकार है-धर्ममार्ग में अरुचि। धार्मिक व्यक्ति इस विकार से दूर होता है, क्योंकि उसकी धर्ममार्ग में रुचि होती है। वह धन का अर्जन भी न्याय-नीति से करता है एवं व्यय भी न्याय-नीति से करता है। वह कुव्यसनों से रहित होता है। नशा, चोरी, जुआ, व्यभिचार आदि व्यसनों से परे रहकर धर्म के पथ में दृढ़ता के साथ जीता है।

चतुर्थ विकार है क्रोधकण्डूति। बात-बात में क्रोध करना, नाराज़ होना विकार है। धर्ममय जीवन जीने वाला व्यक्ति इस विकार से रहित होताहै। कण्डूति का अर्थ है खुजली। जिस प्रकार खुजली को बार-बार खुजालना अच्छा लगता है वैसे ही जब कोई व्यक्ति हर बात पर क्रोध करने को उतारु रहता है, तो वह यदि प्रतिदिन सामायिक करे, मन्दिर जाए, तपस्या करे तो भी उसका जीवन धर्म से रहित होता है। क्रोध के कारण भीतर-बाहर में मनुष्य असन्तुलित होने के कारण कार्य के गुण-दोषों का विचार नहीं कर पाता है।

जैन परम्परा में योगविषयक ग्रन्थों के प्रथम प्रणेता

आचार्य हरिभद्र धार्मिक व्यक्ति में चार गुणों को आवश्यक मानते हैं–मैत्री, करुणा, मुदिता और उपेक्षा। षोडशकप्रकरण (4.15) में वे इनके स्वरूप का संक्षेप में कथन करते हैं–

परहितचिन्ता मैत्री, परदु:खविनाशिनी तथा करुणा।
परसुखतुष्टिर्मुदिता, परदोषोपेक्षणमुपेक्षा।।

दूसरे प्राणियों के हित का चिन्तन करना मैत्री है। जो ऐसी मैत्री रखता है वह कभी अन्य प्राणियों को हानि नहीं पहुँचा सकता। आगम का भी उद्घोष है–**मित्तिं भुएसु कप्पए।** प्रतिक्रमण में भी बोलते हैं–**मित्ती मे सव्वभुएसु**–समस्त प्राणियों के प्रति मेरी मैत्री है। जिसके प्रति मैत्री होती है, उससे वैर नहीं होता। धर्म का फल है समस्त प्राणियों के हित की चिन्ता रूप मैत्री भाव का प्रकटीकरण।

करुणा भी धार्मिक व्यक्ति का गुण है, जो पर दु:ख का विनाश करने वाली है। दूसरों के दु:ख को देखकर जो अनुकम्पा प्रकट होती है वही करुणा है। सहृदय व्यक्ति दूसरे के दु:ख को देखकर स्वयं अनुकम्पित हो जाता है तथा उसके दु:ख को दूर करने के लिए उद्यत रहता है। करुणा को धवलाटीका में जीव का स्वभाव कहा गया है–**करुणाए जीव सहावो।** साधु-साध्वी धर्मोपदेश कर दु:खी प्राणियों को सन्मार्ग पर चलने का मार्गदर्शन करते हैं। उनमें भी करुणा होती है, किन्तु वे मर्यादा में रहकर उसकी अभिव्यक्ति करते हैं।

तृतीय गुण है–मुदिता। आचार्य हरिभद्र ने दूसरे के सुख में प्रसन्नता के अनुभव को मुदिता कहा है। प्राय: जैन परम्परा में प्रमोद शब्द का प्रयोग मिलता है, जो गुणाधिक व्यक्ति के प्रति प्रसन्नता के रूप में प्रकट होता है, किन्तु हरिभद्रसूरि ने मुदिता शब्द का प्रयोग करके दूसरे के सुख में सुख का अनुभव करने की अवधारणा को ग्रहण किया है। प्राय: मनुष्य दूसरे के सुख से दु:खी होता है, किन्तु धर्मनिष्ठ व्यक्ति दूसरों के सुख में भी प्रसन्नता का अनुभव करता है और दूसरों के दु:ख में करुणित होता है।

धार्मिक व्यक्ति का चतुर्थ गुण है–उपेक्षा। वह दूसरे के अविनीतता, अभद्रता आदि दोषों से उद्विग्न नहीं होता, क्रोध नहीं करता, द्वेष नहीं करता, अपितु उनकी उपेक्षा करता है। उनके प्रति माध्यस्थ भाव रखता है। यह विशेषता धर्म को जीवन में उतारने पर स्वत: आ जाती है। यह उपेक्षा भाव निर्मल बोध, सबके प्रति आत्मीयता का भाव, सबके हित का भाव होने पर ही सम्भव है।

इस प्रकार जो धर्ममय जीवन जीता है उसका निजी जीवन भी पावन होता है एवं परिवार और समाज के प्रति भी उसका जीवन सौहार्द बढ़ाने वाला होता है। वह शान्तिमय जीवन जीता है एवं समाज में भी शान्ति को प्रोत्साहित करता है। वह मैत्रीभाव से सबको जोड़ता है, तोड़ता नहीं। वह किसी भी अन्य धर्म एवं धार्मिकों के प्रति द्वेष का भाव नहीं, अपितु अन्य सम्प्रदाय के लोगों के प्रति भी सद्भाव रखता है। वह परिवार एवं समाज में पारस्परिक सौहार्द की स्थापना का अङ्ग बनता है।

इस प्रकार धार्मिक होने की कसौटी हैं–निजी जीवन और सामाजिक व्यवहार। जो व्यक्ति मैत्री, करुणा, मुदिता आदि से सम्पन्न होता है, औदार्य, दाक्षिण्य, पापनिवारण, निर्मल बोध आदि से युक्त होता है तथा विषयतृष्णा, दृष्टिसम्मोह, धर्ममार्ग में अरुचि एवं क्रोध की खुजली के विकार से रहित होता है उसका निजी जीवन भी आन्तरिक शान्ति एवं सरसता से सम्पृक्त होता है तथा सामाजिक व्यवहार भी द्वेष, कटुता, कलह आदि से दूर होता है। धर्म की सभी क्रियाएँ सद्गुणों का पोषण करती हैं एवं दुर्गुणों का निवारण करती हैं। हरिभद्रसूरि ने इसीलिए शास्त्रवार्तासमुच्चय (1.3) में कहा है–

दु:खं पापात् सुखं धर्मात् सर्वशास्त्रेषु संस्थिति:।
न कर्त्तव्यमत: पापं, कर्त्तव्यो धर्मसञ्चय:।

पाप प्रवृत्ति से दु:ख होता है तथा धर्म से सुख होता है, यह समस्त शास्त्रों में मान्य है। अत: मनुष्य को पाप नहीं करके धर्म का सञ्चय करना चाहिए।

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

डॉ. धर्मचन्द जैन

महयं पलिगोव जाणिया, जा वि य वंदण-पूयणा इहं।
सुहुमे सल्ले दुरुद्धरे, विदुमं ता पयहेज्ज संथवं।।

-सूत्रकृताङ्ग, प्रथम श्रुतस्कन्ध, 2.11

अर्थ-सांसारिकजनों का अतिपरिचय महान् पंक है और जो वन्दन-पूजा आदि की जाती है वह सूक्ष्म शल्य है जिसे निकालना कठिन है, यह जानकर मुनि संस्तव (अतिपरिचय, स्तुति/प्रशंसा) से बचे एवं उसका परित्याग करे।

विवेचन-सूत्रकृताङ्गसूत्र की यह गाथा साधक मुनि को सावधान कर रही है कि वह सांसारिकजनों से अधिक परिचय में नहीं उलझे। उनसे अधिक परिचय साधना में बाधक होता है। संस्तव का अर्थ परिचय भी है तो स्तुति एवं श्लाघा या प्रशंसा भी है। साधु को अतिपरिचय के साथ अपनी स्तुति एवं प्रशंसा कराने एवं सुनने से भी बचना चाहिए।

साधु समस्त सांसारिक सुखभोग के साधनों, परिवारजनों, सम्बन्धियों एवं परिग्रह का त्याग करके प्रव्रज्या अङ्गीकार करता है। वह साधना में बाधक परीषहों को समभाव से सहन करता है। किन्तु कभी प्रमादवश वह श्रद्धालुओं, सांसारिकजनों के परिचय में उलझ जाता है। गृहस्थ श्रमणोपासक एवं श्रमणोपासिका जब भी मुनिप्रवरों एवं साध्वी समुदाय के दर्शनार्थ उपस्थित होते हैं तो त्रिवार वन्दना करते हैं, उन्हें सम्मान देते हैं। उस वन्दना और सम्मान को तथा अतिपरिचय को साधु कीचड़ की भाँति समझे। कीचड़ में जिस प्रकार कोई फिसलकर फँस जाता है, उसी प्रकार साधक वन्दना-प्रशंसा आदि को सुनकर कदाचित् गर्व का एवं अहंकार का अनुभव कर साधना के उच्च लक्ष्य से फिसल सकता है। इसलिए वन्दन, पूजा एवं स्तुति के समय सावधान रहने का सन्देश दिया गया है।

यह वन्दन-पूजा सूक्ष्म शल्य या काँटे की तरह है, जिसके भीतर प्रविष्ट हो जाने पर उसे बाहर निकालना कठिन लगता है। वन्दन-पूजा, स्तुति आदि का रस आने पर वह साधना में बाधक बन जाता है। साधु-साध्वी के लिए उसे अनुकूल परीषह माना गया है। उत्तराध्ययनसूत्र (2.38) में सत्कार-पुरस्कार परीषह के सम्बन्ध में कहा है-

अभिवायणमब्भुट्ठाणं, सामी कुज्जा निमंतणं।
जे ताइं पडिसेवंति, न तेसिं पीहए मुणी।।

राजा आदि भू-स्वामी भी यदि मुनिजन का अभिवादन करे, उनको देखकर खड़ा हो जाए तथा उनको अपने राज्य में या राजमहल में आने का निमन्त्रण दे तो भी मुनि इनसे तनिक भी प्रभावित न हो। कई अन्य भारतीय परम्पराओं के सन्त इनमें रुचि रखते हैं एवं प्रसङ्ग आने पर इनका सेवन करते हैं, उनको देखकर भी जैन भिक्षु-भिक्षुणी इनकी कतई वाञ्छा न करे।

जो इन मान-सम्मान में अटक जाते हैं, वे साधु-जीवन के लक्ष्य से भटक जाते हैं। वे अहंकार के पोषण एवं राग आदि की पूर्ति में लग जाते हैं। उत्तराध्ययनसूत्र के सद्भिक्षु नामक पन्द्रहवें अध्ययन, गाथा-1 में कहा है-**संथवं जहिज्ज अकामकामे।**

मुनिव्रत का आचरण करने वाला साधक काम-भोगों की इच्छा रहित होकर संस्तव अर्थात् पूर्व परिचय का भी त्याग कर देता है। वह बहती नदी की भाँति नये-नये ग्राम-नगरों में धर्म की गंगा प्रवाहित करता है। इसी अध्ययन की गाथा 5 में कहा है-

नो सक्कियमिच्छइ न पूयं, नो वि य वंदणगं कुओ पसंसं।

जो सद्भिक्षु है वह न सत्कार की इच्छा करता है न पूजा की, और न ही वन्दन की वाञ्छा करता है तो वह प्रशंसा की इच्छा कैसे करेगा? वह लोकैषणा से दूर रहकर आत्मगवेषक होता है। अपनी आत्मा को विषम परिस्थितियों में भी समता में रखकर पूर्व कर्मों की निर्जरा करता है एवं साधना में सजग रहता है।

विचार-वारिधि

आत्मशुद्धि के सूत्र

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

- सही आराधना करनी है तो तन से, मन से, जीवन से कपट को हटाकर साधना के मार्ग में आगे आना चाहिए।
- मन में गाँठ बाँधकर रखोगे तो साथ में काम करने वालों की गाड़ी आगे नहीं चलेगी, गाड़ी अटक जाएगी।
- जिस प्रकार स्वादु फल वाले वृक्ष पर पक्षी मण्डराते हैं; उसी प्रकार रस-भोजी को विषय घेरे रहते हैं।
- कर्णप्रिय गीत सुनना, सुन्दर रूप और चलचित्र देखना, तेल-फुलेल लगाना आदि कामनाएँ (लहरें) उसी में उत्पन्न होंगी जो सरस और उत्तेजक पदार्थों का सेवन करता है।
- हमारे भीतर जो चेतना का नाग है वह सोया पड़ा है, उसको जगाने के लिए भगवान की वाणी का मधुर स्वर सुनाना पड़ेगा।
- जब तक विषय-कषाय नहीं हटेंगे, तब तक जीवन का मैलापन नहीं हटेगा।
- जिस तरह मनुष्य को अपनी ही जूती काट खाती है, उसी तरह अपना ही मन जीव को दण्ड देता है।
- यदि अपने को, अपनी वाणी को, अपनी काया को आत्मा के अभिमुख कर दिया, आत्म-भाव में लगा दिया तो मन अदण्ड का कारण बनेगा।
- सामायिक की साधना करोगे तो तुम्हारा मन अदण्ड बन जाएगा, वचन भी अदण्ड बन जाएगा और काया भी अदण्ड बन जाएगी।
- दण्ड से अदण्ड में लाने वाली क्रिया का नाम सामायिक है।
- धर्मस्थान में बैठेंगे, महापुरुषों से सम्पर्क करेंगे तो दिल-दिमाग आर्त्त और रौद्र की ओर नहीं जाएगा।
- मोक्ष की ओर आगे बढ़ना है तो अहंकार, मान अथवा घमण्ड को चकनाचूर कीजिए।
- विकार से रहित होकर तपस्या करें तो कर्मों की बहुत बड़ी निर्जरा होती है।
- यदि समय थोड़ा है तो थोड़े समय में कर्म काटने का साधन है, 'तपस्या।'
- आत्म-शुद्धि के लिए गुरु के सामने जाकर अपनी आलोचना और प्रायश्चित्त करना चाहिए।
- हर सामाजिक और धार्मिक कार्यकर्त्ता को समझना चाहिए कि सामाजिक और धार्मिक रीति-रिवाजों पर नियन्त्रण रखना जरूरी है।
- सच्चे साधक अपनी गलती को मानने में, उसको गुरुजनों के सामने प्रकट करने में और प्रायश्चित्त लेने में संकोच नहीं करते।
- आत्मा की शुद्धि के सूत्र हैं-निरीक्षण, परीक्षण और शिक्षण।
- हर एक को अपना जीवन शुद्ध करने के लिए अपनी आलोचना खुद करनी है, बारीकी से देखना है।
- काल की गति विचित्र है। वह न बच्चा देखता है, न जवान, न बूढ़ा और न तरुणी, एकदम आकर धर दबोचता है।
- दु:ख-मुक्ति का रास्ता यह है कि हित-मार्ग को जानो, पहचानो, पकड़ो और तदनुकूल आचरण करो।
- यदि आय के पीछे पाँच या दस टका भार हल्का करने की मन में आवे और आसक्ति तथा राग कम हो तो मैं कहता हूँ कि आसक्ति कम होते ही आपका रोग और शोक भी कम हो जाएगा।

-'अमृत-वाक्' पुस्तक से साभार

प्रवचन

मैं कौन? मेरा स्वरूप क्या?

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. द्वारा जयपुर चातुर्मास में 19 अक्टूबर, 1993 को फरमाये गये इस प्रवचन का आशुलेखन श्री अशोक कुमारजी जैन (हरसाना वाले), जयपुर द्वारा किया गया है। उसी का यह सम्पादित अंश है। -सम्पादक

तीर्थंकर भगवान महावीर की अन्तिम वाणी जीवन-निर्माण में सत्पुरुषार्थ पर जोर दे रही है, प्रत्येक जीव प्रतिपल, प्रतिक्षण निरन्तर क्रिया करता आ रहा है, क्रिया करते हुए भी बन्धन काटने के बजाय बन्धन बढ़ाता जा रहा है। 'किरियाए बन्धो।' विपरीत क्रियाएँ कर्म का बन्ध करती हैं और 'किरियाए मोक्खो' सम्यक् क्रिया, सही पुरुषार्थ जीवन में कर्म के बन्धन तोड़ने वाला बनता है। आज देखना यह है कि क्रिया करते हुए भी, साधना करते हुए भी, हम बन्धन तोड़ रहे हैं या बन्धन बढ़ा रहे हैं। किस क्रिया को प्रामाणिकता देनी चाहिए? थोड़ा सा वर्णन किया जाय।

विनाशी के लिए अधिक पुरुषार्थ करना चाहिए या अविनाशी के लिए। आज जितना पुरुषार्थ चल रहा है, जितनी साधना चल रही है, वह सब विनाशी के लिए चल रही है। गन्दे हाथ धो रहे हैं। इसी तरह शरीर पर गन्दगी है, कपड़ों पर गन्दगी है, उस गन्दगी को हटाना पहले आवश्यक है या आत्मा पर जो गन्दगी लगी है उसको? जिसके कारण यह जीव अनन्त-अनन्त काल तक दुःख पा रहा है, उसे पहले हटाना आवश्यक है या द्रव्य गन्दगी को हटाना पहले आवश्यक है? आज आपको क्या इष्ट है? कपड़े पर मैल इष्ट नहीं, थोड़ी सी हाथ-पैर पर लगी गन्दगी अच्छी नहीं लगती, पर यह पता नहीं ये गन्दगियाँ हजार-हजार बार लगीं, यह शरीर है, तब तक लगती रहेंगी। ये शरीर कभी शुद्ध हुआ नहीं, होगा नहीं। जिसकी रचना गन्दगी से है, वह कभी गन्दगी से अलग हो जाये, कभी हुआ नहीं। जो विशुद्ध है, निष्कलंक है, निरञ्जन है, उसके लिये प्रयास नहीं किया जा रहा है। तीर्थंकर भगवान महावीर का सबसे पहला सूत्र चाहे सूयगडांग लें, चाहे आचाराङ्ग के माध्यम से देखा जाय।

हे मानव! बोध कर। यह समझ तू अनन्त-अनन्त पुण्यशाली है, 83 लाख 99 हजार नौ सौ निन्नानवें गतियों को पार कर मानव जीवन में आये, इस तन के सुख के लिए, तन के भोगों के लिए नहीं, लेकिन आत्मा को परमात्मा, आत्मा को पुण्यवान बनाने के लिए आये हो। यह तब तक नहीं होगी, जब तक कर्म बन्ध के हेतु नहीं छोड़े जायें। जब तक कर्मों का संयोग रहेगा, जीव सुखी हुआ नहीं, यह ऐसा दुश्मन है जो इस आत्मा को भटकाता आया है और तब तक भटकाता रहेगा जब तक इसका सङ्ग नहीं छूट जाएगा। इसलिये शुद्ध करना चाहो, हजार बार कुल्ले कर लो, इस शरीर की कितनी सफाई करके रखो, इसकी शुद्धि होने वाली नहीं। इस शरीर में से निर्मल पदार्थ निकलने वाले नहीं हैं। इन कर्मों के बन्धन हटाने के लिए, इनके हेतुओं को हटाने के लिए प्रयास नहीं किया जा रहा है। यही सबसे बड़ी अज्ञानता है। इस अज्ञानता का मूल मिथ्यात्व है।

इसी मिथ्यात्व के कारण यह जीव निगोद में पहुँचा। जहाँ इसे अपना भान नहीं रहा। मैं कौन? मेरा स्वरूप क्या? इतना दुःख वहाँ सहन किया, इसी मिथ्यात्व के कारण। इन्हीं कर्मों के कारण से यह नरक में गया भयंकर दुःख पाया। इतना दुःख पाने के बाद भी बाल तो सँवार रहा है, कपड़े अच्छे पहन रहा है, किन्तु आत्मा की ओर से सोया पड़ा है, सुनने के बाद भी इसको समझ नहीं आ रही है। एक दिन खाना नहीं खाया जाय, तड़पने लगता है, पर एक दिन नहीं, एक महीना

नहीं 100 दिन में भी आत्मा को सम्भालने का कोई खयाल नहीं आता। जरूरत है कर्म के बन्धन तोड़ने की। शास्त्र कह रहा है-हे मानव! किसी से भय खाने की जरूरत नहीं है, साँप से, बिच्छू से, टाँटिया से, न सिपाही से, न राज्यपाल से और न ही किसी से डरने की जरूरत है, अगर तुम्हें डरना है तो इन कर्मों से डरो, अपनी अज्ञान प्रवृत्तियों से डरो, मोह माया से डरो। दुनिया में किसी से डरने की जरूरत नहीं है। कर्म बन्धन को तोड़ने के लिए, मिथ्यात्व मोह को हटाने के लिए पुरुषार्थ करें। इस मिथ्यात्व ने व्यक्ति में, समाज में, कैसी मान्यता कायम कर ली? नतीजा है, जो करना चाहिए, वह नहीं हो रहा है, जो नहीं करना चाहिये वह किया जा रहा है। आज तक अनन्त-अनन्त काल तक भटकाने वाला दु:ख देने वाला अगर कोई है तो मिथ्यात्व है। गुरुदेव कहा करते थे-हजार वॉट का बल्ब हो, उसके ऊपर कालिख पोत दी जाय, खर्चा इतना ही आयेगा, रोशनी कुछ नहीं होगी। चक्की जोर से चल रही है, उसमें एक भी दाना नहीं है, आपके हाथ में पाव भर भी आटा आने वाला नहीं है। इन संसारी सुखों के लिए जितने प्रयास करते जा रहे हैं, वे सब आत्म गुणों पर आवरण करने वाले एवं दु:ख देने वाले हैं। अपने आपको सुख के मार्ग से हटाकर दु:ख की ओर मोड़ने वाले हैं।

हम इतना सारा अभ्यास कर रहे हैं, किन्तु अभी छोड़ना क्या, इसे जानेंगे ही नहीं, तो छोड़ेंगे क्या? क्या करना चाहिये? हमारा लक्ष्य क्या है? अगर इसकी अनुभूति नहीं की। रोज सामायिक करते हुए क्या त्याग कर रहे हैं? तो कहते हैं, बापजी सबका त्याग करते हैं। अरे भाई! सबका त्याग तो हमारे ही नहीं। क्या ग्रहण करना है? इस पर विचार करें। इसी तरह मिथ्यात्व से, अप्रमाद से कब हटेंगे? मिथ्यात्व क्या है? मिथ्यात्व के भेद कितने? इसके पाँच भेद हैं-

1. आभिग्रहिक मिथ्यात्व-'मैं मानूँ वो सच्चा।' वास्तविकता पहचाने, अपनी समझ में सही मानकर चलता है वह आभिग्रहिक मिथ्यात्व है। बड़ेरे करते आये, हम भी कर रहे हैं। उन्होंने जो कुछ किया, किसी देवी की, किसी पत्थर की, जो भी आराधना की, उसका सही निर्णय किये बगैर करते जाना आभिग्रहिक मिथ्यात्व है। संसार में आज ऐसा कोई नहीं जो ऊँची धोती पहनता हो। बड़ेरे तो ऊँची धोती पहनते थे, वे इतने बड़े होते हुए भी सीधे-सादे वेश में रहते, आज आप क्यों नहीं रहते? वे ठीक नहीं करते थे तो आज इन देवियों को, देवताओं को क्यों पूजा जा रहा है? इन रूढ़ियों को क्यों अपनाया जा रहा है? सब बातें खयाल में आने पर भी छोड़कर क्यों नहीं चल रहे हैं? जैसे खाने-पीने-ओढ़ने की क्रियाओं में, मौसम के अनुसार खयाल लेकर चलते हैं, उसी तरह आत्मा के लिए क्या हितकारी है, किससे उत्थान, किससे पतन होता है, इसका खयाल रखना चाहिए।

2. अनाभिग्रहिक मिथ्यात्व-निर्णय करने की शक्ति नहीं होना। सबको सही मान लेना। महात्मा भी ठीक है, ढोंगी और पाखण्डी भी ठीक है। हमें तो सबमें अच्छाई नज़र आती है, अत: बिना निर्णय किये मान लेना, अनाभिग्रहिक मिथ्यात्व है। अच्छे और बुरे का निर्णय नहीं करना, सबको सही मानकर चलना अनाभिग्रहिक मिथ्यात्व है। संसार में आप इस तरह की क्रिया से नहीं चलते, फूँक-फूँक कर चलते हैं। मुझे एक बात याद आयी। पुराने सिक्के चलते थे। कुछ ग्रामीण महिलाओं ने जाना कि चार आने के पच्चीस पैसे होते हैं। अत: जब ग्रामीण महिलाएँ साग लेतीं, तो दो-दो आने का साग लेतीं है, एक-एक पैसा बचा लिया जाता, अनपढ़ महिलाओं ने भी लाभ मिलाना बहुत जल्दी सीखा। इसलिये शास्त्र कह रहा है, बिना निर्णय किये, कौन सरागी है? कौन वीतरागी? सरागी, सरागी है। वीतरागी, वीतरागी है। हिंसा, हिंसा है। सोना और मिट्टी को, जड़ और चेतन को एकमेक करके मत चलिये। जब तक आपकी सही समझ नहीं होगी, तब तक लक्ष्य तक नहीं पहुँच पायेंगे।

3. आभिनिवेशिक मिथ्यात्व-सच्चाई समझ में आने के बाद भी नहीं छोड़ना। वायुकाय में जीव हैं,

खुले मुँह बोलने पर वायुकाय की हिंसा होती है, वैक्रिय शरीर वाला इन्द्र भी खुले मुँह नहीं बोलता है, फिर भी सच्चाई समझ में आने के बाद भी खुले मुँह बोलना प्रमाद है। तीर्थंकर भगवान महावीर ने कहा–'**समयं गोयम मा पमायए**' अर्थात् क्षण मात्र भी प्रमाद मत करो। जानते और मानते हुए भी सच्चाई समझ में आने के बाद भी आत्मा के कर्म बन्धन तोड़ने के लिए, कषाय शमन के लिए उपाय करने के बजाय, विपरीत पुरुषार्थ करना अभिनिवेशिक है।

दृष्टान्त दिया जाता है–गधे की पूँछ पकड़ लेने के बाद दुलत्ती लग रही है। इसी तरह मान रहे हैं, आत्मा की कीमत शरीर से मान रहे हैं। अगर यह आत्मा नहीं है तो कुछ नहीं है, आत्मा के बिना कुछ नहीं है। अचम्भा है, इसी आत्मा की कोई पूछ नहीं हो रही है, शरीर को सम्भाला जा रहा है। कोई मोटर में दो लीटर पेट्रोल डाले, और ड्राईवर साहब को भूखा मारे, तो कैसे पार पड़ेगी? मन्दिर को बाहर से सजाया जा रहा है, भीतर में कपाट बन्द करके बैठे हैं। इसी तरह शरीर को सम्भाला जा रहा है, सँवारा जा रहा है, पर भीतर में रहने वाली आत्मा की कोई पूछ नहीं की गई। अगर भीतर में रहने वाली आत्मा की पूछ नहीं की गई तो नरक निगोद में पटक देगी। ड्राईवर को भूखा रखा, तो कब गाड़ी किधर चली जाय, पता नहीं चलेगा। आत्मा की खुराक है–व्रत, अप्रमत्त भाव, स्वाध्याय, चिन्तन, अपने आप में लीन होकर रहना।

4. सांशयिक मिथ्यात्व–धर्मक्रिया में, तत्त्व ज्ञान में संशय होना सांशयिक मिथ्यात्व है। अचम्भा है, धर्मक्रिया करने में संशय है, मीठा खाता है, भगवान के सामने हाथ जोड़कर यह नहीं कहता, मेरा मुँह मीठा कर देना, मिर्ची खाता है, तब यह नहीं कहता–मेरा मुँह चरका कर देना। ऐसा नहीं कहते, क्योंकि जानते हैं कि इन वस्तुओं का स्वभाव ऐसा है। अचम्भा है, सामायिक करते, स्वाध्याय करते इतने दिन हो गये, माला फेरते-फेरते कई दिन हो गए, हमें इसका कोई फल नहीं मिला। अरे भाई दो क़दम चले, तो दो क़दम कम हुए या नहीं हुए। इसी तरह जितना आप कर रहे हैं, उतने कर्म कट रहे हैं, उतने आगे बढ़ रहे हैं। आप मन भर आटे में, पाव भर पानी डालें तो हलवा बन जायेगा? कभी सम्भव नहीं है। आटे में गाँठें पड़ जायेंगी। जितनी मात्रा में कर्म है, वह जब तक आपका पुरुषार्थ नहीं होगा, आपको दुःख देता रहेगा। इसलिये धर्मक्रिया में संशय करना छोड़ दें। जो कुछ किया जा रहा है, वह कभी व्यर्थ जाने वाला नहीं है।

5. अनाभोग मिथ्यात्व–योग्यता नहीं होने के कारण जो मिथ्या सेवन कर चल रहे हो वह अनाभोग मिथ्यात्व है। जो गलत आचरण कर चल रहे हैं, जैसे असंज्ञी जीव धर्म के अधिकारी नहीं, आत्म ज्ञान के अधिकारी नहीं। इसी तरह कुछ ऐसे अभवी जीव हैं, मिथ्यात्व को जान पाये नहीं, और पायेंगे भी नहीं।

सबसे पहले कर्मबन्ध का सबसे बड़ा हेतु, प्रकृति के साथ मिला है। अनुभाग को जोड़ने वाला, दुःख और पीड़ा पहुँचाने वाला अगर कोई कारण है, तो मिथ्यात्व है। इसके लिये कर्म के इस बन्धन को, इस हेतु को अलग कर, अपने आपको समझ कर चलने का प्रयास कर चलेंगे, उस दिन, मैं कौन? यह जान पायेंगे। इतना जान लिया बहुत है। शास्त्र कहता है जिस दिन यह आभास कर लिया, मैं कौन हूँ? आत्मा हूँ और वह अनन्त ज्ञान स्वरूपी है, तो सम्यग्दर्शन हो जाएगा। एक बार सम्यग्दर्शन आ गया, तो अर्धपुद्गल परावर्तन के पहले, मोक्ष हो जाएगा

अगर आपको मालूम हो जाये, यह रास्ता बिना काँटे का है, दूसरे मार्ग में उपद्रव है, तो आप कौनसे रास्ते पर जायेंगे? एक खयाल रखकर चलिये, हमारी जो भी क्रियाएँ हो रही हैं, उन पर गहरी दृष्टि रखें। पाप का बन्धन कैसे नहीं हो, इसके लिए राग-द्वेष से, कषाय से हटकर क्रिया करें। जितनी मात्रा में विवेक रखेंगे, कर्म बन्धन कम होंगे, हल्के होंगे, आप ऊपर आयेंगे, सही रास्ता होने पर मोक्ष में आगे बढ़ेंगे, शान्ति सुख को प्राप्त करेंगे।

⁂

प्रवचन

मौत का समय ज्ञात नहीं, अतः चेत जाएँ

महान् अध्यवसायी, भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के द्वारा घोषित भावी आचार्य, महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. द्वारा 29 अगस्त, 2021 को राता उपाश्रय, पीपाड़सिटी चातुर्मास में फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है। -सम्पादक

सुमेरु-सी अडोलता, सागर-सी गम्भीरता, पृथ्वी-सी सहनशीलता से वीतरागता का वरण करने वाले तीर्थङ्कर भगवन्तों को वन्दन करने के पश्चात्! जीवन-नैया के निर्णायक, चतुर्विध संघ के नायक, अनन्त उपकारी आचार्य भगवन्त को वन्दन!

बन्धुओं!

मद में मदहोश बने जीव को अनुभवी और जानकार सन्देश दे रहे हैं-

काई रे गुमान करे आपणो,
मान करेलो - गुमान करेलो
तो नीची गति माँहि जाय पड़ेलो।।
काची काया ने, काची माया,
तो कात का धन्धा बनाया।
कुण जाणे मौत किस विध आसी।
ओ घर छोड़ किसै घर जासी।।

अनुभवी कह रहे हैं कि मान करने वाले जीव को नीच गति प्राप्त होती है। मान करने वाले को गर्त में जाना होगा और गति बिगड़ जायेगी।

आपको यहाँ शान्ति है, समाधि है तो आगे भी शान्ति-समाधि एवं स्वर्ग तैयार है। यहाँ जीवन में अशान्ति है तो आगे भी नारकी जैसी घोर वेदना मिलने वाली है।

यहाँ थोड़ा पाया और ज्यादा बता रहे हैं तो कहना होगा-यह गर्व है। ज्ञानी कहते हैं कि संसार की सारी वस्तुएँ परिवर्तनशील हैं, फिर तू किस पर और क्यों गर्व कर रहा है? जिस शरीर का तू गर्व कर रहा है तो मानकर चल कि यह शरीर अनित्य है, हमेशा रहने वाला नहीं। एक-न-एक दिन यह शरीर श्मशान में राख होने वाला है।

आप-सब यह जानते हैं कि मौत आयेगी ही। मौत के आने का कोई समय नहीं है। आपके व्याख्यान में आने का समय है, आप समय पर आते हैं तो जिनवाणी श्रवण कर सकते हैं, पर समय पर आने वाले कितने? कोई 9.30 बजे आता है तो कोई 9.45 बजे और कोई व्याख्यान उठाने वाले आते हैं। मैं आपसे पूछूँ-धर्मस्थान में आने का कोई नियम है या नहीं?

सूर्योदय का समय है, सूर्यास्त का भी समय निश्चित है। 29 अगस्त को सूर्य कब उदय में आयेगा और कब अस्त होगा निश्चित है। सूर्य ही नहीं, हर ग्रह और नक्षत्र का उदय और अस्त का समय है, लेकिन मौत का समय है क्या? कब मौत आयेगी, कहाँ मृत्यु होगी, कैसे मरण होगा, इसका आपको तो क्या किसी को कोई अन्दाज़ नहीं। ज्योतिषी सारी बातें बता सकता है, लेकिन मौत कब आयेगी, इसे बताना मुश्किल है।

आप हर काम समय के साथ करने का प्रयास करते हैं, वहाँ प्रायः देर नहीं करते। सिनेमा देखने जाना हो तो समय पर जाते हैं, समय से पहले जाते हैं। यहाँ धर्म सभा में कोई कब आता है, कोई कब तो...... आप व्याख्यान सुनने में पीछे रह जायेंगे। आपका व्याख्यान में बैठने का समय निश्चित है, उठाने का भी समय निर्धारित है, फिर आने में विलम्ब क्यों?

इस नश्वर शरीर के लिए दिन-रात बर्बाद करने वाले बहुत हैं, पर यह तन एक-न-एक दिन धोखा देकर छूटने वाला है। तन नाशवान है तो धन भी धोखेबाज है। आपके पास धन है, आपके ही नहीं कइयों के पास धन

है, पर उसका उपयोग कहाँ? आप आए तब क्या लेकर आये थे और जायेंगे तब क्या लेकर जायेंगे? चाहे तन हो या धन, वह जरूरत से ज्यादा है, भारी है तो दु:खदायी है। मान लो, कोई भारी शरीर वाला चल बसे तो उसे श्मशान ले जाने के लिए गाड़ी तो नहीं बुलायेंगे?

आप द्रव्य से और भाव से हल्के बन सकते हैं। आम के आम और गुठलियों के दाम। ये बहिनें व्याख्यान में आती हैं उससे महाराज भी राजी और यहाँ आने के बाद सहेलियों से मिलने-बात करने का मौका भी मिल जायेगा। आप शरीर से, मन से, भाव से और कर्म से हल्के बनें, इसके लिए तप करें। तप करने से शरीर तो हल्का बनेगा ही, तप आपको द्रव्य से और भाव से लाभ देगा।

आपने देखा है कि हल्की चीज तैरती है और भारी डूबती है। पानी में पत्थर नहीं, कंकर भी डालेंगे तो वह डूब जायेगा और तूम्बी पानी में तिरती है, डूबती नहीं। क्यों? कारण क्या? पत्थर भारी है, तूम्बा हल्का। भार कम करने का उपाय है-तप।

एक बहिन गुरुदेव के दर्शन के लिए आई। कहने लगी-बाबजी! मुझे बी.पी. है, शूगर भी है मैं बीमारी से बड़ी परेशान हूँ।

गुरुदेव ने कहा-''बहिन! तुम तप का आचरण शुरु करो।''

वह बोली-''बाबजी! मुझे तो रोज दवा खानी पड़ती है।''

गुरुदेव ने कहा-''तुम अगर मन को मजबूत कर लो और तप पर तुम्हें विश्वास हो जायेगा तो दवा की जरूरत ही नहीं पड़ेगी और तप भी हो जायेगा।''

आचार्य भगवन्त का जलगाँव में चातुर्मास था। वहाँ के रतनलाल सी. बाफना जी आए और बोले कि मेरे शूगर है, बी.पी. है, हॉर्ट प्रॉब्लम भी है। उन्होंने कहा-बाबजी! आँखें नकली हैं, मेरी दोनों आँखों में लेन्स बैठाये हुए हैं। कान में मशीन है। बिना मशीन सुन नहीं सकता। हॉर्ट का ऑपरेशन हो चुका है। मेरे शरीर के सभी अङ्ग एक तरह से नकली हैं, लेकिन मैं असली हूँ। जलगाँव में गुरुदेव का चौमासा है, इसलिए मुझे हर माह एक अठाई करनी है। उन्होंने तप किया तो शूगर भी सामान्य, बी.पी. भी सामान्य आई। उन्होंने तप का आराधन तो किया ही, धर्म दलाली भी की तो हजारों युवक एक साथ सामायिक करने के लिए स्थानक आने लगे।

इस पीपाड़ में आप तप कम करें या ज्यादा, पर तप करने वाले पौषध करें तो साधना-आराधना का आनन्द कुछ और ही मिलेगा। आप दया-संवर, उपवास-पौषध और तपस्या करें। आप केवल व्यापार में ही उलझे रहेंगे तो यहाँ की साधना में पीछे रह जायेंगे। भाग्य में जो मिलना लिखा है वह तो थोड़े समय में मिल सकता है। इसलिए आप पर्व के दिनों में तो दुकान-दुकान की रट छोड़कर धर्म-साधना में पुरुषार्थ करें।

आचार्य भगवन्त का लासलगाँव चातुर्मास था। वहाँ के लोगों ने तय कर लिया कि जब तक व्याख्यान चलेगा, हम दुकानें नहीं खोलेंगे। जैनियों की देखादेखी माहेश्वरी समाज के लोगों ने भी स्वीकार कर लिया कि जैन दुकानें खोलेंगे तभी हम दुकानें खोलेंगे। वे भी व्याख्यान में आने शुरू हो गए। घर कम होने पर भी वहाँ व्याख्यान में अच्छी उपस्थिति रहने लगी।

पर्युषण पर्व के दिन आ रहे हैं। आप जितना पुरुषार्थ कर सकें, ज्ञान में, तप में और साधना में करें। आपके यहाँ आचार्य भगवन्त का चातुर्मास है और जैनसंघ के ज्येष्ठ आचार्य का जन्म स्थान भी यही पीपाड़ है।

संकल्प करें तो सब सम्भव है। पाली में आठ दिन बाजार बन्द हैं तो भड़भूजे की भट्टी तक नहीं जलती। बालोतरा में सैकड़ों फैक्ट्रियाँ हैं, पर वहाँ आठ दिन कोई काम नहीं होता। आप सोचें, समझें, विचार और चिन्तन करें कि चातुर्मास के सुयोग का आपको पूरा लाभ उठाना है। आप साधना-आराधना करेंगे तो पर्व के दिनों में आनन्द प्राप्त कर सकेंगे।

■

प्रवचन

सम्यग्ज्ञान की रोशनी में जगमगाएँ हम

मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. द्वारा 25 जुलाई, 2021 को मानसरोवर-जयपुर चातुर्मास में फरमाए गए इस प्रवचन का संकलन श्री पदमचन्दजी गाँधी, जयपुर ने किया है।

-सम्पादक

शासनपति प्रभु महावीर को अनन्त वन्दन, आराध्य गुरु हस्ती के गुणस्मरण, आचार्यप्रवर एवं उपाध्यायप्रवर को वन्दन, नमन

धर्मानुरागी बन्धुओं! गुरु ने एक शिष्य से प्रश्न किया। अब देखिये-यहाँ गुरु शिष्य से प्रश्न कर रहे हैं। जबकि हर बार शिष्य ही जिज्ञासा करता है, प्रश्न पूछता है, मगर कई बार गुरु जब योग्य शिष्य होता है तो उसकी उन्नति के लिए, प्रगति के लिए प्रश्न के माध्यम से उसके विकास में सहायक बनते हैं, ज्ञानवर्धन में सहयोगी बनते हैं एवं जीवन-निर्माण में आगे होकर अपना अमूल्य समय देते हैं। तो गुरु ने आज एक शिष्य से प्रश्न किया-''वत्स! देखता कौन है?''

प्रत्युत्तर में शिष्य ने कहा-''गुरुदेव! आँख देखती है।''

प्रतिप्रश्न करते हुए गुरु ने कहा-''यदि उजाला नहीं होगा तो आँख कैसे देखेगी?''

शिष्य ने तुरन्त भूल स्वीकार करते हुए कहा-''आँख के साथ उजाला जरूरी है, तभी देखा जा सकता है।''

गुरु ने यह सुनकर कहा-''वत्स! यदि आँख भी है, उजाला भी है, परन्तु यदि अन्यमनस्क है तो भला कैसे देखेगा?''

शिष्य ने तुरन्त गुरु के कथन को स्वीकार करते हुए कहा-''गुरुदेव! आप सच कहते हैं। आँख भी चाहिए, उजाला भी चाहिए और मन भी चाहिए।''

इस पर तत्काल गुरु ने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा-''वत्स! जरा सोचो तो सही, एक नन्हा बालक है जिसके पास आँख भी है, उजाला भी है और मन भी है मगर कई बार देखा जाता है कि वह नन्हा बालक फिर भी अङ्गारों (अग्नि) में भी हाथ डाल देता है।''

तत्काल शिष्य ने सोचकर कहा-''गुरुदेव! आँख, उजाला और मन के साथ बुद्धि होना भी जरूरी है।''

इस प्रकार गुरु ने शिष्य से कहा-''अरे! जरा सोचा तो होता कि आँख भी है, उजाला, मन और बुद्धि भी है, पर कई बार जुआरी लोग फिर भी जुआ खेलते हुए देखे जाते हैं, ऐसा क्यों? क्या उनको नहीं दिखता है कि जुआ का व्यसन हानिकारक होता है?''

शिष्य बोला-''तो फिर समझ (ज्ञान) भी जरूरी है। गुरुदेव! अब समझ में आया कि आँख, उजाला, मन, बुद्धि के साथ-साथ समझ (ज्ञान) जरूरी है।''

कुल मिलाकर इस संवाद से आज हमें एक बात की महत्ता का बोध हुआ कि जीवन में ज्ञान होना जरूरी है। स्वयं प्रभु ने ज्ञान की महिमा बताते हुए कहा-

नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा।
एस मग्गो त्ति पण्णत्तो, जिणेहिं वरदंसीहिं।।

अर्थात् श्रेष्ठ ज्ञान (केवलज्ञान) के धारक जिनेश्वर भगवन्तों के द्वारा ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप रूप मोक्ष का मार्ग बतलाया गया है। ज्ञान को मोक्ष का प्रथम सोपान कहा है।

अब जरा इस बात को समझ लेते हैं कि ज्ञान किसे कहते हैं? इस प्रश्न के समाधान में हो सकता है कि बहुत सारी परिभाषाएँ पढ़ने और सुनने को मिल सकती हैं, पर मुझे एक अच्छी परिभाषा पढ़ने को मिली। वह

यह है कि जिससे हमको अज्ञान का बोध होता है, उसे ज्ञान कहते हैं। वास्तव में ज्ञान ही दोषों की, पापों की, बन्धनों की, आस्रव की, कमजोरियों की और अपनी गलतियों की जानकारी कराता है। एक बात याद रखना, जिसे दोषों की और पापों की जानकारी हो जाती है, उस साधक को निश्चित रूप से पूर्णरूप से निर्दोष बनने में देर नहीं लगती। साथ ही यह भी याद रखना होगा कि वे दोष अन्तर में खटकने चाहिए, शल्य की तरह चुभते हुए लगने चाहिए।

हम यह विश्वास पूर्वक समझ लें कि सद्ज्ञान न सिर्फ दोषों से अवगत करायेगा, बल्कि दोष निकन्दन का पुरुषार्थ भी जगायेगा। बस, सार यह है कि ज्ञान उसे कहते हैं, जो अज्ञान (दोषों) की जानकारी कराकर निर्दोष बनाने में सहायक बनता है। एक बात और समझ लेना कि ज्ञान, दर्शन और सद्गुण पाने का पुरुषार्थ करने की जरूरत भी नहीं, क्योंकि हर जीवात्मा के भीतर अनन्त चतुष्टय विद्यमान है।

अर्थात् हर एक जीव को अनन्तज्ञान, अनन्तदर्शन, अनन्तसुख और अनन्तशक्ति उपलब्ध है। हमें तो केवल उसे प्रकट करने की साधना करनी है। वैसे भी देखा जाये तो एक साधक सन्त का जीवन निवृत्ति प्रधान होता है, प्रवृत्ति भी निवृत्ति के लिए ही की जाती है। मेरे इस आशय को जरा गहराई से समझना। सन्त जितनी भी प्रवृत्ति करता है, चाहे वह ईर्या समिति या भाषा समिति हो अथवा अन्य समिति। समिति अर्थात् सम्यक् प्रवृत्ति या विवेक पूर्वक प्रवृत्ति। जो पाँच प्रकार की प्रवृत्ति है, वह साधक के लिए आवश्यक है अर्थात् करना पड़ता है। क्योंकि उसके बिना वह साधना में आगे नहीं बढ़ सकता, मञ्ज़िल को पा नहीं सकता। ऐसा तो कभी हो नहीं सकता कि दीक्षा ली और तत्काल संथारा ग्रहण कर ले। ऐसे क्वचित् ही उदाहरण हैं। पर याद रखना-अकारण और असमय में कभी संथारा करना उचित नहीं होता। कहीं-कहीं पर कभी ऐसा संकल्प कराया जाता है और किया जाता है कि ज्योंही 80 वर्ष की आयु हो जायेगी और 81वें वर्ष की आयु लगेगी, तो चारों प्रकार के आहार के त्याग करा दिया जाता। अत: जब 80 वर्ष की आयु पूरी हो गई, तो अब अगले दिन ही वह संथारा स्वीकार कर लेते हैं, जो उचित प्रतीत नहीं होता, क्योंकि उम्र होने पर भी शारीरिक स्वस्थता है, कहीं कोई साधना में शरीर बाधक नहीं है। आगम के अनुसार हम ऐसे समय संथारा करें, जब संलेखना करते-करते शरीर संथारा के योग्य हो जाए या जब साधक यह देख ले कि अब यह शरीर साधना के योग्य नहीं रहा, तब ही संथारा करे। प्रभु महावीर फरमाते हैं-

चरे पयाइं परिसंकमाणे, जं किंचि पासं इह मण्णमाणो।
लाभंतरे जीवियं बूहइत्ता, पच्छा परिन्नाय मलावधंसी।।

-उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 4, गाथा 7

इसलिये कारण उपस्थित होने पर ही संथारा स्वीकार करने का विधान है। तो मैं कह रहा था कि साधक को दीक्षा लेते ही प्रवृत्ति से गुजरना ही पड़ता है। सच्चाई यह है कि एक सच्चे साधक की साधना निवृत्ति-प्रधान मानी गई है। निवृत्ति अर्थात् खोना ही खोना।

एक साधनाशील साधक सन्त से किसी ने प्रश्न किया-''आप इतने वर्षों से साधना में संलग्न हैं तो आपने क्या पाया?''

उस साधक का उत्तर सुनिये। उस साधक ने कहा-''भाई! मैंने केवल खोया ही खोया।''

अपने कथन के आशय को स्पष्ट करते हुए साधक ने कहा-''भाई! साधना का मार्ग तो खोने का है। क्योंकि पाना क्या? पाया हुआ तो है ही, क्योंकि हर जीव में अनन्त ज्ञानादि चतुष्टय की सत्ता है, ज्यों-ज्यों दोषों को खोते या नष्ट करते जायेंगे, त्यों-त्यों सद्गुण स्वत: उजागर (प्रकट) होते जायेंगे।

एक मूर्तिकार पत्थर टाँच कर मूर्ति घड़ रहा था तो किसी ने पूछा-''क्या कर रहे हो?'' वह बोला-''मूर्ति बना रहा हूँ।'' अब आप सोचिये-क्या वह मूर्ति बना रहा है? नहीं। हर पत्थर में मूर्ति की सत्ता है। बस, अनावश्यक पत्थर हटाये और भीतर से मूर्ति प्रकट हो गई

अर्थात् मूर्ति बन गई। इसी तरह एक व्यक्ति कपड़े धो रहा था तो किसी ने पूछा-''क्या कर रहे हो?'' वह बोला-''कपड़े साफ कर रहा हूँ।'' तो वह क्या कपड़े साफ कर रहा था? नहीं। कपड़ा तो पहले से ही साफ था। वह तो बस केवल मैल हटा रहा था। तो यह सद्ज्ञान का उजाला हमें हमारे दोषों से अवगत कराता है।

एक बार उपाध्यायश्री ने भी प्रत्युत्तर में गहरी बात फरमाई थी। एक बार उनसे किसी ने पूछा-''आपके जीवन में आपके द्वारा प्रभावना का क्या इतिहास रहा?'' तब उन्होंने फरमाया-''अप्रभावना से बचते रहना ही सच्ची प्रभावना है।'' अब आप देखिये कि साधक यदि दोषों (अप्रभावना जन्य कृत्य) से बचता रहेगा तो शेष प्रभावना का वातावरण तो बनना ही है।

आज संकल्पित होना है कि मैं सम्यग्ज्ञान का अधिकारी बनूँ। सम्यग्ज्ञान वही जो दोषों की जानकारी कराये, आत्मा के अस्तित्व का बोध कराये, बन्धन-मुक्ति का भेद कराए, पुण्य-पाप का अन्तर समझाये और जो मोह और कषाय को उपशम कराये, उसे ही सम्यग्ज्ञान कहते हैं।

सच मानना यह सम्यग्ज्ञान अपने को कभी भटकने नहीं देगा, लक्ष्यहीन नहीं होने देगा। कहते हैं- **'शमाँ हजार जल के भी उजाला कर न सकती, ज्ञान की झलक मिलते ही रूह (आत्मा) तक रोशनी फैल गई।'** इन्द्रभूति गौतम कितने अहं में झूम रहे थे, मगर ज्योंहि प्रभु से ज्ञान की किरण मिली, वे परम विनीत अर्पित, समर्पित शिष्य बन गये। कहाँ बाहुबली की कठोर साधना? जिनकी कठोरचर्या का वर्णन सुनने मात्र से रूह काँप जाती है। मगर उनको कैवल्य की प्राप्ति नहीं हुई। ज्योंहि उनको बोध मिला, त्योंहि अगले ही क्षण में कैवल्य की ज्योति जगमगा गई।

इतिहास बोलता है कि प्रभव नाम का शातिर चोर था, जिसके आतंक से सारे भयभीत थे। आज प्रभव चोर को खबर मिली कि नगरसेठ का पुत्र जम्बूकुमार जो आठ कन्याओं से शादी करके आया है और दहेज में 99 करोड़ का धन प्राप्त हुआ है तो ऐसे समय में वह 500 चोरों के समूह के साथ पहुँच गया चौर्यकर्म के लिए। आपने कई बार यह घटना पढ़ी और सुनी होगी। जब प्रभव ने देखा कि सारे साथी चोर स्तम्भित हो गये, चल भी नहीं पा रहे तो सोचा-कौन ऐसा जादूगर है, जिसने ऐसी कौनसी विद्या का प्रयोग किया कि चोरों के पैर वहीं स्तम्भित कर दिये। हवेली के ऊपर मञ्ज़िल से कुछ-कुछ आवाज़ आ रही थी तो दबे पाँव पहुँच गया। दीवार की ओट से दृश्य देखकर सन्न रह गया। यह क्या देख रहा हूँ, सुन रहा हूँ कि एक नव युवा, जिसके चेहरे पर अपूर्व तेज, ओज और अद्भुत वैराग्य की आभा झलक रही है, जिसे आठ रमणियाँ घेर कर बैठी हैं। दोनों तरफ का संवाद सुना-एक तरफ संसार के आकर्षण की चर्चा तो दूसरी तरफ संन्यास धर्म की महत्ता। एक ओर राग की वार्ता तो दूसरी ओर वैराग्य तथा वीतरागता का महत्त्व। एक तरफ भटकाव तो दूसरी तरफ लक्ष्य। उस संवाद को सुनकर प्रभव के अन्तर के नेत्र खुल गये। अपने कुकृत्य पाप और चौर्य पाप के अपराध बोध की ग्लानि से भर गया। सीधा जाकर जम्बूकुमार के चरणों में पड़ गया और बोला-''आज आपके इस संवाद से आपने जो नश्वरता का, संसार की असारता का, अनित्यता का, आत्मा के एकत्व का बोध कराया, इसे सुनकर तो बस मुझे इन्हीं चरणों में अब जीवन समर्पित करना है और निर्दोष बनकर ही जीना है। इस घटना को सुनने के बाद शायद आपके मन में प्रश्न उभर रहा होगा कि चोरों के पाँवों को किसने स्तम्भित किया? इस बारे में उपाध्यायश्री के श्रीमुख से सुना था कि किसी शासन रक्षक देव ने ऐसा किया। कारण कि देव ने सोचा-जम्बूकुमार तो निश्चित ही अगली सुबह दीक्षा ग्रहण करेंगे, पर यदि चोरी हो गई तो दुनिया में यह अपवाद फैल जायेगा कि देखो, सब कुछ लुट गया।'' **नारी मुई घर संपत नासी, मूंड मुंडाए भये संन्यासी।** क्योंकि कई बार नासमझ लोग ऐसी धारणा बना लेते हैं कि दीक्षा तो वह लेता है जिसकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ नहीं है। इसलिये देव ने इस अपवाद से बचने के लिए ऐसा प्रयोग किया।

मुझे केवल सारभूत बात यही कहनी है कि देखो, ज्ञान की रोशनी मिलते ही प्रभव अपने 500 साथियों के

साथ जम्बू कुमार के साथ संयम ले लेता है। कैसी अद्भुत घटना! ये सारा चमत्कार कहो, प्रभाव कहो, सम्यग्ज्ञान का ही है।

हमें मनुष्य जन्म मिला, आराधना की अनुकूलता भी मिली तो सम्यग्ज्ञान के अर्जन में हमारा पुरुषार्थ जगना ही चाहिये। गुरु हस्ती ने तो फरमाया था कि जीवन के अन्तिम श्वास तक विद्यार्थी बनकर जीना चाहिये। एक लाइन पढ़ने को मिली-''अज्ञानी होना उतनी शर्म की बात नहीं, मगर ज्ञान सीखने की चेष्टा न करना सबसे बड़ी शर्म की बात है।'' यही सम्यग्ज्ञान सत्य की राह खोलेगा, क़दम-क़दम पर समाधान देगा, समाधि देगा। सकारात्मक सोच इसी सम्यग्ज्ञान से विकसित होता है। यही सम्यग्ज्ञान गुणदृष्टि जगाता है। सम्यग्ज्ञान प्राप्ति के लिए हम आगम और अनगार का अर्थात् सन्त और स्वाध्याय का आश्रय लेंगे तो एक दिन हमारे जीवन की राहें भी सम्यग्ज्ञान की रोशनी में जगमगायेगी। इसी मंगल भावना के साथ.......!

गुरु ने राह दिखाई, अभी चलना है बाकी।
राही तुम भूल न जाना, अभी मञ्ज़िल है बाकी।।

बन्धनों से मुक्ति

डॉ. रमेश 'मयंक'

हमें मन की विषय वासना ने गुलाम बनाया।
दु:खों को बढ़ाकर आत्मानुशासन गँवाया।।
करें विचार कैसे स्वयं पर नियन्त्रण रख पायें।
हम पराधीनता के बन्धनों से मुक्ति पायें।।1।।
अहिंसा संयम तप साधना धर्म बने सहायक।
तप बल से आया अनुशासन दु:खों का नाशक।।
मिटे लालसा आत्मिक विकास की कड़ी जुड़ जाए।
हम पराधीनता के बन्धनों से मुक्ति पायें।।2।।
जिसे माना सुख उसने ही समता को बढ़ाया।
फिर पाने की चाह ने भोगों की तरफ लगाया।।
अच्छा होगा अगर भोगों का त्याग हो जाये।
हम पराधीनता के बन्धनों से मुक्ति पायें।।3।।
बदलकर सोच सेवा में करें आनन्द अनुभव।
सेवाधर्म से मोह दोष का नाश है सम्भव।।
नि:स्वार्थ प्रेम विकास कर मोहभाव मिटाएँ।
हम पराधीनता के बन्धनों से मुक्ति पायें।।4।।
बदली दृष्टि तो हमारा चिन्तन बदल जाएगा।
सृष्टि पर परसेवा उपकार खुशियाँ लाएगा।।
अग्रज अनुगमन गुरु नमन से चेतन हो पाए।
हम पराधीनता के बन्धनों से मुक्ति पायें।।

-बी 8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़-312001

आचरण नहीं ढंग का

श्री शिखरचन्द छाजेड़

कल रहूँगा, इसमें भी शंका
फिर भी मेरा-आचरण नहीं ढंग का.......
क्रोध-मान-माया-लोभ
यहाँ-वहाँ, जहाँ-तहाँ
क्षोभ ही क्षोभ अन्तरङ्ग में, अहं की लंका
आचरण नहीं ढंग का........
जिनवाणी का सार संसार असार
फिर भी मेरी-भववर्धिनी तृष्णा अपार
चश्मा सदा-लौकिक रंग का
आचरण नहीं ढंग का ....
किसी ने सच ही कहा-
राजा-राणा-छत्रपति
हथियन के असवार
मरना सबको एक दिन
अपनी-अपनी बार
फिर भी मैं-बजाऊँ अभिमानी डंका
आचरण नहीं ढंग का.....
कल रहूँगा, इसमें भी शंका
फिर भी मेरा-आचरण नहीं ढंग का.......।

-करही (म.प्र.)

प्रवचन

पुण्याग्नि पापविकार को दग्धकर स्वतः बुझ जाती है

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. द्वारा जोधपुर में वर्ष 2019 के चातुर्मास में 'सुपुण्यशाली की होती धर्म में मति' विषय से सम्बद्ध अनेक प्रवचन फरमाए गए थे। उनमें से इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर द्वारा किया गया है। **-सम्पादक**

पुण्य के सदुपयोग से प्रभु की शरण प्राप्त कर संवर और निर्जरा से पुण्य को उत्कृष्ट कर प्रभु बनने वाले अनन्त-अनन्त उपकारी वीतराग भगवन्त एवं पुण्य से मिली सामग्री का सदुपयोग करते हुए संयम और तप से आत्मा को भावित करने वाले आचार्य भगवन्त, उपाध्याय भगवन्तों के चरणों में वन्दना के पश्चात्-

प्रकृति बन्ध को देखने का प्रयास प्रारम्भ हुआ। योग से आए हुए कर्म वर्गणा के पुद्गल, कषाय द्वारा पैदा होने वाली स्थिति के अनुपात से प्रकृतियों में विभाजित हो जाते हैं।

मूल प्रकृतियों की अपेक्षा 1, 6, 7 या 8 में तथा उत्तर प्रकृतियों में 1, 17 से 22, 26, 53-74 (62 को छोड़कर) तक के 29 प्रकार के बन्ध स्थानों में 1 में केवल शुभ प्रकृति साता वेदनीय है। योग से एकमात्र उसका आस्रव या बन्ध सयोगी वीतराग को होता है।

शेष समस्त प्रकृतियों की स्थिति के अनुपात में पुद्गल प्रदेशों का वितरण होने से उनकी स्थिति ही उनके बन्ध का कारण बनती है, जो कषाय से होता है। आयु कर्म कुछ विशिष्टता के कारण से शेष 7 कर्मों से कथञ्चित् भिन्न है। शेष 7 कर्मों की 116 प्रकृतियों में से स्थिति अधिक तो अनुभाग अधिक के रूप में बँधने वाली प्रकृतियों को पाप प्रकृतियाँ कहते हैं, 4 घातिकर्म की 45 और 4 अघातिकर्म की 36 कुल 81 प्रकृतियाँ ऐसी हैं। इनके स्थिति और अनुभाग कषाय से ही बँधते हैं। प्रकृति बन्ध का कारण योग कहलाता है, पर कषाय से प्रभावित अशुभ योग ही इनके बन्ध का वास्तविक कारण है, केवल योग नहीं।

स्थिति बढ़ने पर अनुभाग कम बन्धे तथा स्थिति घटने पर अनुभाग बढ़े उसे पुण्य प्रकृति कहते हैं, यह केवल 4 अघाति कर्मों में होती है। आयुकर्म की प्रकृति छोड़ने पर 39 प्रकृतियाँ इस विभाग में आती हैं। पाप की 36 प्रकृतियों में से 4 अशुभ वर्णादि तथा 1 उपघात ये 5 प्रकृतियाँ शरीर से अविनाभावी सम्बन्ध रखती हैं। अतः शरीर नामकर्म के साथ 8वें गुणस्थान के छठे भाग तक बँधती हैं और ध्रुव बन्धी कहलाती है। पाप की अघाति 36 - 5 = 31 प्रकृतियाँ प्रथम गुणस्थान से ऊपर उठने की किसी भी गुणश्रेणी में बँधती ही नहीं (7वीं नरक का अपवाद है)। अस्थिर, अशुभ, अयश और असाता ये 4 प्रकृतियाँ छठे गुणस्थान तक गुणश्रेणी को छोड़कर अन्य समय में बँध सकती हैं। शेष 27 प्रकृतियाँ सम्यग्दृष्टि के बँधती ही नहीं। सम्यक्त्व के साथ पुण्य की प्रकृतियाँ ही अधिक बँधती हैं और विशुद्धि के साथ उनका अनुभाग बढ़ता जाता है। कम्मपयडी में कहा गया **'सम्मदिट्ठि णो हणइ सुभाणुभागे।'** धवला में भी कहा गया सम्यग्दृष्टि शुभ प्रकृतियों का अनुभाग नहीं घातता और भी कहा गया सम्यग्दर्शन, केवली समुद्घात और योग निरोध से पुण्य प्रकृतियों का अनुभाग कांडक घात नहीं होता। अपूर्वकरण के अपूर्व रसघात में केवल पाप प्रकृतियों का ही अनुभाग घात होता है, पुण्य का अनुभाग तो बढ़ता है।

पूरा जैनधर्म पाप नाश के लिए पुरुषार्थ पर जोर देता है। पुण्य रूपी साबुन पाप रूपी मैल को लेकर स्वतः निकल जाता है। पुण्य रूपी अग्नि पाप रूपी कचरे को जलाकर स्वतः बुझ जाती है। पुण्य का पालन करने से पाप का प्रक्षालन होता है। स्वामी अडगडानन्दजी द्वारा व्याख्यायित यथार्थगीता में विशिष्ट अर्थ का प्रतिपादन

हुआ है। उनका मानना है गीता बाहरी युद्ध की नहीं आन्तरिक युद्ध की दिग्दर्शिका है।

उनके अनुसार इसी शरीर के अन्तराल में अन्त:करण की दो प्रवृत्तियाँ पुरातन हैं–दैवी सम्पद् और आसुरी सम्पद्। दैवी सम्पद् में हैं–'पुण्यरूपी पाण्डु और कर्त्तव्य रूपी कुन्ती। पुण्य जागृत होने से पहले मनुष्य जो कुछ भी कर्त्तव्य समझकर करता है, अपनी समझ से वह कर्त्तव्य ही करता है; किन्तु उससे कर्त्तव्य होता नहीं', क्योंकि पुण्य के बिना कर्त्तव्य को समझा ही नहीं जा सकता। कुन्ती ने पाण्डु से सम्बन्ध होने के पूर्व कुछ भी अर्जित किया, वह था कर्ण। आजीवन कुन्ती के पुत्रों से लड़ता रह गया। पाण्डवों का दुर्धर्ष शत्रु यदि कोई था, तो वह था 'कर्ण।' विजातीय कर्म ही कर्ण है, जो बन्धनकारी है, जिससे परम्परागत रूढ़ियों का चित्रण होता है–पूजा–पद्धतियाँ पिण्ड नहीं छोड़ती। पुण्य जागृत होने पर धर्मरूपी 'युधिष्ठिर', अनुरागरूपी 'अर्जुन', भावरूपी 'भीम', नियमरूपी 'नकुल', सत्सङ्गरूपी 'सहदेव', सात्त्विकतारूपी 'सात्यकि', काया में सामर्थ्यरूपी 'काशीराज', कर्त्तव्य के द्वारा भव पर विजय 'कुन्तिभोज' इत्यादि इष्टोन्मुखी मानसिक प्रवृत्तियों का उत्कर्ष होता है, जिसकी गणना सात अक्षौहिणी है। 'अक्ष' दृष्टि को कहते हैं। सत्यमयी दृष्टिकोण से जिसका गठन होता है, वह है दैवी सम्पद्। परमधर्म परमात्मा की दूरी तय कराने वाली ये सात सीढ़ियाँ 'सात भूमिकाएँ' हैं न कि कोई गणना विशेष। वस्तुत: ये प्रवृत्तियाँ अनन्त हैं।

दूसरी ओर है 'कुरुक्षेत्र', जिसमें दस इन्द्रियाँ और एक मन, ये ग्यारह अक्षौहिणी सेना है। मनसहित इन्द्रियमय दृष्टिकोण से जिसका गठन हुआ है, वह है आसुरी सम्पद्, जिसमें है अज्ञानरूपी 'धृतराष्ट्र' जो सत्य जानते हुए भी अन्धा बना रहता है। उसकी सहचारिणी है 'गान्धारी'– इन्द्रिय आधारवाली प्रवृत्ति। इसके साथ हैं–मोहरूपी 'दुर्योधन', दुर्बुद्धिरूपी 'दु:शासन', विजातीय कर्मरूपी 'कर्ण', भ्रमरूपी 'भीष्म', द्वैत के आचरणरूपी 'द्रोणाचार्य', आसक्तिरूपी 'अश्वत्थामा', विकल्परूपी 'विकर्ण', अधूरी साधना में कृपा के आचरणरूपी 'कृपाचार्य' और इन सबके बीच जीवरूपी विदुर है, जो रहता है अज्ञान (धृतराष्ट्र) में, किन्तु दृष्टि सदैव पुण्य (पाण्डवों) पर है, पुण्य से प्रवाहित प्रवृत्ति पर है, इस प्रकार आसुरी सम्पद् भी अनन्त है। क्षेत्र एक ही है–यह शरीर, इसमें लड़ने वाली प्रवृत्तियाँ दो हैं। एक प्रकृति में विश्वास दिलाती है, नीच–अधम योनियों का कारण बनती है, तो दूसरी परमपुरुष परमात्मा में विश्वास और प्रवेश दिलाती है। तत्त्वदर्शी महापुरुष के संरक्षण में क्रमश: साधना करने पर दैवी सम्पद् का उत्कर्ष और आसुरी सम्पद् का सर्वथा शमन हो जाता है। जब कोई विकार ही नहीं रहा, मन का सर्वथा निरोध और निरुद्ध मन का भी विलय हो जाता है तो दैवी सम्पद् की आवश्यकता समाप्त हो जाती है। वह दैवी सम्पद् पुण्य की एवं आसुरी सम्पद् पाप की प्रतीक है।

एक अन्य आत्मार्थी साधक ने पाप और पुण्य की परिभाषा करते हुए क्या ही सुन्दर फरमाया। पाप क्या है? और पुण्य क्या है?

पाप क्या है?–1. अपनी प्रसन्नता, अपने से भिन्न किसी अन्य के आश्रित होकर जीवित रहे, यही पाप है। यद्यपि यह बात सुनने में अजीब–सी मालूम होती है, किन्तु है सब प्रकार से सत्य। गहराई से देखो, पापयुक्त प्रवृत्ति कब होती है? जब हमको अपने से भिन्न की आवश्यकता होती है। अपने से भिन्न की आवश्यकता कब होती है? जब हम अपने में सीमित भाव (शरीर आदि) मान लेते हैं। सीमित भाव मानते ही आस्तिकता का अन्त हो जाता है, क्योंकि जिसकी (निज–स्वरूप की) सत्ता हर काल में है और जो स्वाभाविक परम प्रिय है, उसका त्यागकर हम अपने को अनेक कल्पनाओं में बाँधकर, अनन्त वासनाओं के जाल में फँस जाते हैं। भला बताओ तो सही, इससे बड़ा पाप और क्या होगा?

2. अपने वर्तमान जीवन की मर्यादा के विपरीत प्रवृत्ति पाप की प्रवृत्ति है। जाति, कुल आदि के गौरव के

अनुरूप अपने सर्वहितकारी प्रवृत्ति रूप कर्त्तव्य को पूरा नहीं करना पाप है।

3. जो सीमित की ओर ले जाये वही पाप है।

पुण्य क्या है?-1. अपनी प्रसन्नता के लिए अपने से भिन्न किसी की ओर न देखना अर्थात् अपने में ही प्रीति का अनुभव करना, यही परम पुण्य है।

2. जिसको अपनी ओर से जैसा मान लिया है, उसके प्रति उसके हित के लिए अपने माने हुए भाव के अनुसार सेवा करना पुण्य है।

3. जिससे शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति हो वही पुण्य है।

पूरा जैनधर्म पाप समाप्त करने की प्रेरणा देता है। कोई भी आगम, कर्म साहित्य और दिगम्बरों का कर्म साहित्य भी पुण्य के त्याग या क्षय का कथन नहीं करता। पुण्य का क्षय करना आवश्यक है, ऐसा मानने वाले उत्तराध्ययनसूत्र की 2 गाथाएँ हैं-1. (उत्तराध्ययनसूत्र 10/15) में **'संसरइ सुहासुहेहिं कम्मेहिं'** अर्थात् शुभ-अशुभ कर्मों के कारण जीव संसार में संसरण करता है। बिल्कुल ठीक है, अशुभ कर्म कभी अकेला होता ही नहीं, कोई न कोई शुभ प्रकृति का उदय होता ही है। संसरण में दोनों साथ रहते हैं। संसरण का एकमात्र कारण घातिकर्म और उनमें भी मात्र मोहनीय कर्म है। जिसकी मोह की सत्ता समाप्त हो गई है वह क्षीण मोह वाला जीव आयु पूर्ण होने पर मोक्ष में जायेगा ही, जाता ही है। मोह में भी अनन्तानुबन्धी और मिथ्यात्व इन 5 प्रकृतियों की सत्ता समाप्त करने वाला कर्मभूमिज मनुष्य उसी भव में या अगले कर्मभूमिज मनुष्य भव में मोक्ष जायेगा ही।

मिथ्यात्व और उसके बन्ध का प्रधान कारण अनन्तानुबन्धी कषाय-इन पाँचों का उदय रुकेगा शुभयोग से, इन पाँचों की सत्ता समाप्त होगी शुभयोग से। इन पाँचों के उदय रुकने की प्रक्रिया के समय में भी अघाति कर्मों की 5 ध्रुवबन्धिनी पाप प्रकृतियों को छोड़कर अन्य कोई भी पाप प्रकृति बन्ध ही नहीं सकती। सातवीं नरक में सम्यक्त्व प्राप्ति के समय विवशता वश तिर्यञ्च द्विक और नीच गोत्र ये 3 प्रकृतियाँ प्रथम गुणस्थान की प्राथमिक गुणश्रेणी में पहले गुणस्थान के अन्त तक जघन्य अनुभाग के साथ बँधती हैं।

अशुभ से ही संसरण होता है, केवल शुभ तो केवल ज्ञान प्रकट कर संसरण समाप्त करता है। यह पूर्व में स्पष्ट किया जा चुका है।

पुण्य का क्षय करना आवश्यक है, ऐसा मानने वाले उत्तराध्ययन सूत्र के 21वें अध्ययन की अन्तिम गाथा भी कहती है-

दुविहं खवेऊण य पुण्णपावं,
निरंजणे सव्वओ विप्पमुक्के।
तरित्ता समुद्दं व महाभवोघं,
समुद्दपाले अपुणरागमं गए।।24।।

अर्थात् दोनों प्रकार के (घाति और अघाति कर्मों) तथा पुण्य और पाप को क्षय करके कर्म मल से रहित हुआ समुद्रपाल मुनि सर्व प्रकार के बन्धनों से सर्वथा मुक्त होकर महाभव रूप समुद्र से पार होता हुआ मोक्षपद को प्राप्त हो गया।

पूर्व में कहा जा चुका है कि कार्य निष्पत्ति होने पर उसकी उपयोगिता समाप्त हो जाती है। चौदहवें गुणस्थान के द्विचरम समय में 73 प्रकृतियों की सत्ता पूर्ण होती है। ये 148 प्रकृतियों की अपेक्षा कहा है- उनमें 59 पुण्य की हैं जो सभी अघाती हैं। पाप की 47 घाति और 42 अघाति प्रकृतियाँ हैं। घातिकर्म की सभी 47 प्रकृतियों की सत्ता के साथ अघाति की 12 प्रकृतियों की सत्ता पूर्व में जा चुकी है। 73 की सत्ता समाप्त हो रही है उनमें 43 या 44 पुण्य और 30 या 29 पाप की सत्ता गई तथा अन्तिम समय में 11 या 12 पुण्य और 1 या शून्य पाप की गयी (तीर्थंकर नाम और आहारक चौक की सत्ता नहीं होने पर उनका अन्तर होता है) तो पुण्य की 59 प्रकृति की सत्ता में- 2 प्रकृतियाँ (तिर्यञ्चायु, देवायु) इस भव में है नहीं, 2 प्रकृतियाँ (आतप, उद्योत) 9वें गुणस्थान के प्रथम भाग तक, 43 प्रकृतियाँ 14वें गुणस्थान के द्विचरम समय तक, 12 प्रकृतियाँ चरम

समय तक, इस तरह कुल 59 प्रकृतियाँ हैं।

कहाँ रोकता है पुण्य? कैसे संसार बढ़ाता है पुण्य? क्षीण मोह गुणस्थान वाला तो उसी भव में मोक्ष जायेगा ही, वहाँ तक पुण्य की मात्र 4 प्रकृति नहीं है, शेष 55 प्रकृतियाँ हैं वे कहाँ रोक रही है?

पुण्य तत्त्व कहाँ तक (कौनसे गुणस्थान तक) होता है?-1 से 13वें गुणस्थान तक।

पुण्य आस्रव कहाँ तक (कौनसे गुणस्थान तक) होता है?-1 से 13वें गुणस्थान तक।

पुण्य बन्ध कहाँ तक (कौनसे गुणस्थान तक) होता है?- 1 से 13वें गुणस्थान तक।

पुण्य प्रकृति का उदय कहाँ तक (कौनसे गुणस्थान तक) होती है?-1 से 14वें गुणस्थान तक।

पुण्य प्रकृति की सत्ता कहाँ तक (कौनसे गुणस्थान तक) होता है?-1 से 14वें गुणस्थान तक।

सिद्ध अवस्था के पहले तो वह पूर्ण होगा ही। पुण्य की क्षपणा किसी तप से नहीं होती। कार्य पूर्ण होने पर, स्थिति क्षय के साथ वह क्षपित हो जाता है। तप तो मात्र पाप कर्मों को काटता है।

चर्चा सामान्य जनोपयोगी भले ही न हो, किन्तु सिद्धान्त के ज्ञाता, कर्मग्रन्थ के जानकारों, प्रतिभावान साधक साधिकाओं के लिए उपयोगी है। वीतराग दर्शन की अवहेलना न हो, विपरीत मान्यता से कोई-कोई सम्यक्त्व के नाम पर मिथ्यात्व का पोषण कर भवभ्रमण में न पड़ा रहे। अनुकम्पा से, करुणा से, आत्महित के लिए निवेदन करना उन्मार्ग से सन्मार्ग पर स्थित करना समकित का अङ्ग है। हमें अपने सम्यक्त्व को पुष्ट करना है।

तीसरी बात और यह रखी जाती है। प्रज्ञापना के 36वें पद में समुद्घात का अधिकार है। उसकी व्याख्या में केवली समुद्घात में पुण्य प्रकृतियों के अनुभाग घात का उल्लेख मलयगिरि जी ने किया है। जिसे रम्यरेणुजी की पुस्तकों में भी देखा जा सकता है। इसमें क्या आपत्ति है? प्रज्ञापना के 36वें पद में स्पष्ट कहा है-**कम्हा णं भंते! केवली समुग्घायं गच्छइ? गोयमा! केवलिस्स चत्तारि कम्मंसा अक्खीणा अवेइया अणिजिण्णा भवंति, तं जहा-वेयणिज्जे, आउए, णामे, गोए। सव्वबहुपएसे से वेयणिज्जे कम्मे हवइ, सव्वथोवे आउए कम्मे हवइ।** गाथा-

विसमं समं करेइ, बन्धणेहिं ठिईहिं य।
विसमसमीकरणयाए, बन्धणेहिं ठिईहिं य।
एवं खलु केवली समोहणइ, एवं खलु समुग्घायं गच्छइ।

अर्थात् भगवन्! किस प्रयोजन से केवली समुद्घात करते हैं? गौतम! केवली के चार कर्मांश क्षीण नहीं हुए हैं, वेदन नहीं किए हैं, निर्जरा को प्राप्त नहीं हुए हैं, चार कर्म इस प्रकार हैं-1. वेदनीय 2. आयु 3. नाम और 4. गोत्र। उनका वेदनीय कर्म सबसे अधिक प्रदेशों वाला होता है। उनका सबसे कम (प्रदेशों वाला) आयुकर्म होता है। वे बन्धनों और स्थितियों से विषम (कर्म) को सम करते हैं। वस्तुतः बन्धनों और स्थितियों के विषम कर्मों का समीकरण करने के लिए केवली केवलिसमुद्घात करते हैं।

तीन अघाति कर्मों की स्थिति अधिक हो, आयुकर्म की स्थिति कम हो तब उन तीन अघाति कर्म वेदनीय, नाम एवं गोत्रकर्म की स्थिति आयु के तुल्य करनी है। चौदहवें गुणस्थान के 5 लघु अक्षरों की स्थिति एवं केवली समुद्घात पूर्ण होने के पश्चात् का अन्तर्मुहूर्त इनसे अधिक स्थिति का नाश करते हुए समुद्घात के चौथे समय में उन घात की जाने वाली स्थिति वाले प्रदेशों का अनुभाग भी तो पूर्ण करना होगा, वरना वे कर्म क्षपित कैसे होंगे? स्थितिघात होते समय मात्र लोक पूरण के चतुर्थ समय में उनका अनुभाग भी तो पूरा होगा ही। अस्तु, इससे पुण्य को हेय कहना उपयुक्त नहीं है।

उत्तराध्ययनसूत्र 10/15, 21/24 और केवली समुद्घात-इन तीन श्वेताम्बर मान्यताओं का अभिप्राय केवल अशुभ के साथ शुभ का और अशुभ के नाश के साथ शुभ का भी समाप्त होना बताया है। अशुभ ही संसार में रोकता है। तप से अशुभ (पाप) ही क्षपित होता

है-(1) नमस्कार से **'सव्वपावप्पणासणो'** सभी पापों का नाश होता है। (2) **पावाणं कम्माणं णिग्घायणट्ठाए ठामि काउसग्गं**-तस्स उत्तरी में बताया-पाप कर्मों का नाश करने के लिए कायोत्सर्ग करता हूँ। (3) दशवैकालिकसूत्र चूलिका 1/सूत्र-18 **पावाणं च खलु भो! कडाणं कम्माणं पुव्विं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं वेइत्ता मुक्खो णत्थि अवेइत्ता तवसा वा झोसइत्ता।** अर्थात् ओह! दुष्ट भावों से आचरित तथा दुष्पराक्रम से अर्जित पूर्वकृत पापकर्मों का फल भोग लेने पर ही मोक्ष होता है, बिना भोगे मोक्ष नहीं होता अथवा तप के द्वारा क्षय करने पर ही मोक्ष होता है। (4) उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 30, गाथा 1 में-

जहा उ पावगं कम्मं, रागदोससमज्जियं।
खवेइ तवसा भिक्खू, तमेगग्गमणो सुण।।

अर्थात् राग-द्वेष से अर्जित किए हुए पापकर्म को भिक्षु जिस प्रकार तप के द्वारा क्षय करता है, उसको तुम एकाग्र मन से सुनो।

फिर कोई कहे कि जब आस्रव और बन्ध को हेय कहा गया तो पुण्यास्रव और पुण्य बन्ध भी तो हेय ही ठहरते हैं? विगत कतिपय दिनों से चल रही इस चर्चा से यह तो भली-भाँति स्पष्ट हो ही चुका है कि पुण्य तत्त्व तो पूरी तरह उपादेय है, वह तो जीव के परिणामों पर ही निर्भर करता है। मन, वचन, काया की परिणति कषाय से मुक्त होती जाती है, कषाय का प्रभाव योगों पर कमजोर होता जाता है तब आत्मा के नैसर्गिक अर्थात् स्वाभाविक गुणों से प्रकट होता है पुण्य तत्त्व, जो पवित्रता का परिचायक है। वह पवित्रता निर्मलता कभी भी हेय नहीं हो सकती है। इस पवित्रता से योग शुभ कहलाते हैं।

अनेक बार देख चुके हैं कषाय के प्रभाव से योग अशुभ बनते हैं। योग वीर्यान्तराय कर्म के क्षयोपशम से बारहवें गुणस्थान तक तथा क्षय से तेरहवें गुणस्थान में होते हैं। यद्यपि क्षय तो अयोगी अवस्था में भी है ही तथापि शरीर नाम कर्म का उदय करण वीर्य में सहकारी कारण के रूप में अनिवार्य है और वह तेरहवें गुणस्थान तक ही होता है अतः योग तेरहवें गुणस्थान तक है, उससे योग आत्मा, सयोगी अवस्था, सलेश्यी अवस्था होती है। यह योग आत्मा की वैभाविक परिणति हैं। सिद्ध अवस्था में वैभाविक परिणति रहती नहीं, समाप्त हो जाती है। तीनों योग अजीव हैं, अस्तु ज्ञेय तो है ही, पर कषाय से ये अशुभ बनते हैं, पापास्रव कराते हैं, वही पाप संसार का, भवपरम्परा का, दुःख का मुख्य कारण है। अस्तु हेय है। इस पाप को छुड़ाने में, इसे नष्ट करने में आत्म-परिणाम प्रयासरत होते हैं तब कषाय की कमी से शुभ योग होता है जो उस पुद्गल को सहकारी बनाता है। जिसे तत्त्वार्थसूत्र अध्ययन 6 में पुण्यास्रव कह दिया गया। आगम में प्रायः प्रायः आस्रव या पापास्रव शब्द ही प्रयुक्त हुए हैं। पुण्यास्रव रोकने का कहीं भी कथन नहीं हुआ है। उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 29, गाथा 55 **'संवरेण कायगुत्ते पुणो पावासवनिरोहं करेइ'** अर्थात् संवर के द्वारा कायगुप्ति वाला जीव सर्व प्रकार के पापास्रवों का निरोध कर देता है। उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 30, गाथा 2 में कहा गया है-

पाणिवह मुसावाया, अदत्त-मेहुण-परिग्गहा विरओ।
राईभोयणविरओ, जीवो भवइ अणासवो।।

प्राणिवध अर्थात् हिंसा, मृषावाद, चोरी, मैथुन और परिग्रह से तथा रात्रिभोजन से विरत जीव अनास्रवी अर्थात् आस्रवरहित होता है। इसी के आगे कहा-उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 30, गाथा 3 में-

पंचसमिओ तिगुत्तो, अकसाओ जिइंदिओ।
अगारवो य निस्सल्लो, जीवो होइ अणासवो।।

अर्थात् पाँच समितियों तथा तीन गुप्तियों से युक्त कषाय रहित, जितेन्द्रिय और तीन प्रकार के गर्वों तथा तीन प्रकार के शल्यों से रहित जो जीव है वह अनास्रवी होता है। उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 30, गाथा 5-6 में कहा-

जहा महातलायस्स, सन्निरुद्धे जलागमे।
उस्सिंचणाए तवणाए, कमेणं सोसणा भवे।।
एवं तु संजयस्सावि, पावकम्मनिरासवे।
भवकोडीसंचियं कम्मं, तवसा निज्जरिज्जइ।।

अर्थात् जिस प्रकार किसी बड़े तालाब का पानी, जल के आने के मार्गों का निरोध करने से, पानी को उलीचने से तथा सूर्य के ताप से क्रमशः सुखाया जाता है, उसी प्रकार संयमी पुरुष के नवीन पापकर्म भी व्रत आदि के द्वारा निरास्रव अर्थात् निरुद्ध कर दिये जाते हैं और करोड़ों भवों के सञ्चित किए हुए पापकर्म तप के द्वारा निर्जरित किए जाते हैं। दशवैकालिकसूत्र, अध्ययन 3, गाथा 11 में–

पंचासवपरिण्णाया, तिगुत्ता छसु संजया।
पंचणिग्गहणा धीरा, णिग्गंथा उज्जुदंसिणो।।

अर्थात् जो पाँचों आस्रवों के परिज्ञाता एवं त्यागने वाले, त्रिगुप्त, षट्काय के जीवों की रक्षा करने वाले, पाँच इन्द्रियों का निग्रह करने वाले, धैर्यशाली, निर्भय एवं मोक्ष तथा मोक्ष के कारण भूत संयम को देखने वाले हैं, वे निर्ग्रन्थ हैं। दशवैकालिकसूत्र, अध्ययन 4, गाथा 9 में कहा–

सव्वभूयप्पभूयस्स, सम्मं भूयाइं पासओ।
पिहियासवस्स दंतस्स, पावकम्मं ण बन्धइ।।

अर्थात् जो जगत् के जीवों को अपने समान समझता हो, जो जगत् के जीवों को समभाव से देखता हो, कर्मों के आने के मार्ग को जिसने रोक दिया हो और जो इन्द्रियों का दमन करने वाला हो, ऐसे साधु को पापकर्म का बन्ध नहीं होता। विवेचन में फरमाया–पंचास्रव परिज्ञाता–कर्मों के आगमन द्वार को आस्रव कहते हैं। जब आत्मा पापकर्मों को करने लगती है, तभी उसको अशुभ कर्मास्रव होता है। पाप पाँच हैं–1. हिंसा, 2. झूठ 3. चोरी 4. कुशील 5. परिग्रह। जो आत्मा इनको छोड़ देगी, उसी को इनके निमित्त से होने वाला आस्रव नहीं होगा। इन्हें छोड़ेगी वही, जो इनके असली स्वरूप से परिचित है। इनका असली स्वरूप शास्त्रकारों ने दुःख के कारण और दुःखस्वरूप को बतलाया है। आस्रव को रोकने के कथन में पुण्यास्रव रोकने का कहीं भी उल्लेख नहीं हुआ है। योग–निरोध होने तक वह रुक भी नहीं सकता। पुण्यास्रव शुक्लध्यान के तीसरे चरण के द्वारा रुकता है। वैभाविक परिणति होने के उपरान्त भी वह योग स्वभाव में जाने में रुकावट नहीं करता। 5 लघु अक्षर जितना संसार शेष रहने पर समाप्त हो जाता है। अस्तु, उसे हेय की कोटि में नहीं रखा। आस्रव की हेयता प्रमुख रूप से पापास्रव की हेयता के लिए ही वर्णित है। अस्तु, पापास्रव के समान पुण्यास्रव हेय नहीं है।

सबसे अधिक संसार सुख, सर्वार्थसिद्ध देव लहे।
निर्दोषता, निर्कांक्षता, निर्मल मुनि इक वर्ष लँघे।
अमृत प्रपा, गुरु की कृपा, मुदिता अनुपम और कहाँ।।

भक्ति, विनय, बहुमान सङ्ग,
प्रभु वीर रमता चलूँ
श्रुत का पठन, चिन्तन गहन,
उपसर्ग परीषह सहता चलूँ
वृत्तियाँ हों कम, मिट जाए गम,
मुक्ति का साधन और कहाँ।

9 दिसम्बर को जैन भागवती दीक्षाएँ सम्भावित

28 अक्टूबर, 2021 को पीपाड़ शहर में जिनशासन गौरव परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने फरमाया कि **मार्गशीर्ष शुक्ल 6, गुरुवार 9 दिसम्बर, 2021 को कतिपय दीक्षाएँ पीपाड़ शहर** में होने की सम्भावना है। *–धनपत सेठिया, महामन्त्री*

प्रवचन

ममकार और अहंकार के त्याग से अनन्त सुख

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. ने 19 सितम्बर, 2021 को नेहरु पार्क, जोधपुर में फरमाये प्रवचन में ममकार और अहंकार छोड़ने पर बल दिया। प्रवचन का आलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया। **-सम्पादक**

धर्म जिज्ञासु बन्धुओं!

आज अनन्त चतुर्दशी है। हम सबकी आत्मा अनन्त काल से चतुर्विध संसार में परिभ्रमण कर रही है। हम अनन्त सुख के अधिकारी बनें, वह इस मानव भव में हो सकता है। क्यों? तो हमारी आत्मा में अनन्त ज्ञान है, अनन्त दर्शन है, अनन्त सुख है और अनन्त सामर्थ्य भी है। हमारे में अनन्त चतुष्टय है। हमें अनन्त चतुष्टय प्रकट करना है।

अनन्त सुख बाहर से नहीं, भीतर से प्रकट होता है। मोक्ष कहाँ है, आपसे पूछूँ तो? मोक्ष बाहर से प्रकट होगा या भीतर से? हाँ द्रव्य मोक्ष बाहर हो सकता है, लेकिन भाव-मोक्ष तो भीतर में है। ज्ञानीजन कहते हैं- मोहक्षयात् मोक्ष:। मतलब है-मोह को क्षय करने वाला मोक्ष प्राप्त कर सकता है। मोह का क्षय होना मोक्ष है।

आप जानते हैं कि 12वें गुणस्थान में मोहनीय-कर्म नहीं रहता। उस अवस्था में अन्तर्मुहूर्त्त में जीव अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त सुख और अनन्त सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है। स्पष्ट है-**मोह मूल दोष है।**

मानव भव में करने योग्य है तो वह है-पुरुषार्थ। मोह को पुरुषार्थ से दूर किया जा सकता है। मोह होगा तो आसक्ति होगी। जहाँ मोह है वहाँ आसक्ति रहेगी। जहाँ मोह और आसक्ति है वहाँ तनाव रहेगा। उस स्थिति में कर्मबन्ध होंगे ही। मोह-आसक्ति-तनाव में कर्मबन्ध होते ही हैं।

अब, प्रश्न उठता है कि मोह को कैसे जीता जा सकता है? ज्ञानीजन संसार का कारण अकड़ और पकड़ को कहते हैं, मानते हैं। अकड़ और पकड़ को हम अहंकार और ममकार भी कह सकते हैं। अहंकार और ममकार से अधिकांश काम बिगड़ते हैं। अहंकार और ममकार कहो या अकड़ और पकड़, ये दोनों खतरनाक हैं और जीवन में सुख-चैन और आनन्द नहीं आने देते। फिर, अहंकार और ममकार से बुद्धि भ्रष्ट होती है। ऐसे व्यक्ति तो सोते ही अच्छे। वे जाग गये तो सबको नुकसान ही पहुँचायेंगे।

वास्तविक सुख और आनन्द प्रकट करना है तो अहंकार और ममकार छोड़ने पड़ेंगे। अहंकार और ममकार दो शब्द हैं। इन दोनों में ममकार को मूल कहा है। ममकार यानी मेरा। जहाँ भी मेरा, मेरा है वहाँ तृप्ति न तो हुई, न होगी।

एक धनपति समझता है कि मेरे पास लाखों-करोड़ों का धन है। ममकार है तो अहंकार आयेगा ही। समझने की बात है-कर्म का बन्ध वस्तु के प्रयोग और उपयोग से नहीं, किन्तु कर्मबन्धन ममकार से होते हैं। एक घर पर सन्त आए। सन्तों को आहार-पानी के लिए गृहस्थों के घर पर जाना ही पड़ता है। आपके और हमारे में यही तो अन्तर है। आप घर में रहते हैं, हम चाहें साधु हों या साध्वी, मकान में ही रहते हैं। हम जंगल, पहाड़, गुफा के बजाय प्राय: घरों में रहते हैं। आप भी घर में रहते हैं, हम भी घरों में ही रहते हैं, लेकिन आप जिस घर में रहते हैं, उसे अपना घर मानते हैं जबकि हम जिस किसी घर में रहें, उसे अपना घर न तो मानते हैं और न ही कहते हैं। आपके और सन्तों के जीवन में यही तो अन्तर है।

आप घर को अपना मानते हैं वहाँ ममकार है और हम चाहे जहाँ रहें, उस घर को अपना नहीं कहते अर्थात् हमारा उस घर पर ममकार नहीं। मेरा-मेरा जहाँ भी है, वहाँ कर्मबन्ध है। हम आपसे बड़े मकान में रहते हैं, लेकिन अपना नहीं मानते, इसलिए हमारे कर्मबन्ध नहीं होते जबकि आप घर को अपना मानते हैं, अतः कर्मबन्ध से बच नहीं सकते।

आचाराङ्गसूत्र में कहा है-**जो ममाइयसतिं जहाति से जहाति ममाइयं।** मतलब क्या? जो ममत्व-बुद्धि का त्याग करता है, वह परिग्रह का त्यागी है और कर्मबन्ध से बचा रहता है।

ज्ञानीजन कहते हैं-छोड़ने योग्य है ममकार। आप जानते हैं-कभी किसी दूसरे का सामान इधर-उधर हो जाये अथवा खो जाये तो आपको दुःख होगा क्या? आपको दूसरों की वस्तु से कोई लेना-देना नहीं, इसलिए खो जाने पर भी कोई दुःख नहीं होता। मतलब, मेरा-मेरा है, वहाँ दुःख है।

आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. ने तो ममत्वभाव को तनाव का बड़ा कारण बताते हुए कहा है-

मेरे अन्तर भया प्रकाश,
नहीं अब मुझे किसी की आश।

आगे कहा-

तन-धन-परिजन सब ही पर हैं,
पर की आश निराश।
पुद्गल को अपना कर मैंने,
किया सत्त्व का नाश।।

आचार्य भगवन्त ने अपने अनुभव की वाणी में तन-धन-परिजन सबको पराया कहा है। जो अपना नहीं, वे सब पराये हैं।

एक बहिन गुरुदेव के दर्शन-वन्दन करने को आई। वह गुरुदेव से कहने लगी-बाबजी! यह धन और परिजन मेरे नहीं और मेरा यह शरीर भी नाशवान् है, फिर मेरा-मेरा का भाव मेरे मन में बार-बार क्यों आता है?

गुरुदेव ने कहा-बहिन! यह तेरी आसक्ति है और ममकार की आसक्ति दुःखदायी होती है। इसलिए तुम आसक्ति को तोड़ने का प्रयास करो।

बहिन बोली-बाबजी! यह आसक्ति छूटती नहीं।

गुरुदेव ने समझाया-तुम ज्ञाता-द्रष्टा बनकर रहो तो धीरे-धीरे आसक्ति कम होते-होते छूट जायेगी। जब तक मेरा-मेरा है, तब तक कर्मबन्ध है। ज्यों ही आसक्ति छूटी नहीं कि मेरेपन का भाव नहीं रहेगा। आचाराङ्गसूत्र में कहा गया है-**संगं ति पासह** अर्थात् आसक्ति को द्रष्टा बनकर देखो।

समझने के लिए आप जरा सोचें कि जन्मते समय क्या लेकर आए? और जब मरण होगा तो क्या साथ चलेगा? जन्मते और मरते दोनों अवस्था में कुछ भी साथ नहीं रहता तो फिर यह आसक्ति क्यों? यह लोभ, मोह, ममता, कामना सब केवल कर्मबन्ध के कारण हैं। न धन साथ चलता है और न परिवारजन ही और यहाँ तक कि यह शरीर भी यहीं राख हो जाना है। आचार्य भगवन्त गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा. ने तो कहा है-

तन, धन, परिजन सब ही पर हैं, पर की आश-निराश।
जो पाया है, जो मिला है वह अपना नहीं, पराया है।

जब यह भाव मन-मस्तिष्क में आ जायेगा तो फिर छूटने पर दुःख नहीं होगा। आप इस तथ्य को समझें। जब आपको इस तथ्य पर विश्वास हो जायेगा, तब आपका गुरु-चरण-सेवा में मन लगेगा। यहाँ आपको याद रखना होगा कि सद्गुरु के बिना किसी को सम्यक् श्रद्धान हुआ नहीं, होगा भी नहीं।

ममता के कारण सारा संसार दुःखी है। ममता छूट गई तो फिर कोई दुःख नहीं रहेगा। ममता कम करने का उपाय है-'मेरा कुछ नहीं, और मुझे कुछ भी नहीं चाहिए।' क्यों? तो मैं अनन्त ज्ञान-अनन्त दर्शन का स्वामी हूँ। जब यह तन मेरा नहीं, तो फिर यह धन-परिजन मेरे कैसे हो सकते हैं?

आप इस चिन्तन को मन में जमा लें कि मेरा कुछ

नहीं। ये जितने भी पुद्गल हैं, वे सब नाशवान् हैं। कोई भी वस्तु सदा कायम नहीं रहेगी। इस चिन्तन से राग-द्वेष कम होता जायेगा। यह आत्म-चिन्तन है। हर व्यक्ति को आत्म-चिन्तन करना होगा। क्यों? तो ये पुद्गल नाशवान् हैं।

सब पुद्गल, नाशवान् हैं तो फिर शाश्वत क्या है? शाश्वत है-सच्चा सुख। शाश्वत है-अव्याबाध सुख। शाश्वत है हमारी आत्मा। हर क्षण-हर पल पुद्गल बदलता रहता है। जब ऐसा चिन्तन अन्तर दृष्टि में आयेगा, तो वह सम्यग्दृष्टि होगा।

आप जानते हैं, धर्म के दो भेद हैं। एक है-आगार धर्म तो दूसरा है-अनगार धर्म। आज अनन्त चतुर्दशी है, इसलिए आपको करूँगा-करूँगा ही नहीं, मरूँगा-मरूँगा भी याद रखना है। आज कई लोग जन्म-दिवस मनाते हैं। उन्हें याद रखना है कि जन्मने वाला एक-न-एक दिन मरेगा ही, इसलिए आपको-हमको-सबको मरण-सुधार की कला सीखनी चाहिए। आपको-हमको अनन्त चतुष्टय प्रकट करने में बाधक कारण है तो वह है-मोह। मोह के क्षीण होने पर अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त सुख और अनन्त सामर्थ्य प्रकट होगा ही। मेरेपन का भाव कम करते-करते एक दिन मोह भी क्षीण होगा, इन्हीं शब्दों के साथ........!

नवतत्त्व

श्रीमती सेहल जैन (हरकावत)

(तर्ज :: लाल दुपट्टा.......)

नवतत्त्व के ज्ञान से निज गुण विकसाएँगे
तत्त्व ज्ञान को प्राप्त कर सिद्धि पद पाएँगे
कि धर्म का सार पाएँगे भवों के पार जाएँगे-2
जिसमें हो चेतन का गुण वो है जीव कहलाया
जिसमें न चेतन का गुण अजीव प्रभु ने बतलाया।
जीव-अजीव का बोध कर मिथ्या को मिटाएँगे,
तत्त्व ज्ञान को........................।।1।।
पावन कर दे आत्मा पुण्य तत्त्व वो होता है
पाप यह संसार में आत्मा को डुबोता है
पाप काट कर पुण्य का अर्जन कराएँगे
तत्त्व ज्ञान को.........................।।2।।
आस्रव से खुल जाते हैं कर्मों के सब रास्ते
संवर से आना रुकता कर्म न रहते साथ में
आस्रव के ताले जड़कर संवर को बढ़ाएँगे
तत्त्व ज्ञान को...................।।3।।
पूर्व सञ्चित कर्मों से बाँध कर्म मिल जाते हैं
निर्जरा की राह पर आंशिक कर्म कट जाते हैं
मोक्ष तत्त्व को जानकर मुक्ति को बढ़ाएँगे
तत्त्व ज्ञान को प्राप्त कर मुक्ति को पाएँगे।।4।।

-श्री जैन रत्न युवती मण्डल, जयपुर

जलता समन्दर, तिरती नाव

सुश्री स्वर्णिमा जैन (9 वर्षीया)

जलता समन्दर, तिरती नाव
नाम है उनका 'गजसुकुमाल।'
सुबह का रागी, दिन बैरागी
साँझ पड़े, बन गया वीतरागी।
जलता समन्दर..........।।1।।
कर्मों की मार है, धधकते अङ्गार है
समभावों से, मुक्ति द्वार है।
जलता समन्दर........।।2।।
महा वेदना, महा-निर्जरा
हँसते-हँसते सहते जाना।
जलता समन्दर........।।3।।
नहीं किसी से द्वेष, नहीं किसी का दोष
पहले मेरा दोष, निमित्त है निर्दोष।
जलता समन्दर........।।4।।
जैसे को तैसा, उसे मोक्ष कैसा
हस्ती के 'गौतम' समझाये ऐसा।
जलता समन्दर........।।5।।

-झोटवाड़ा-जयपुर (राज.)

शोधालेख

जैन परम्परा में श्रावकाचार विषयक ग्रन्थ एवं उपासकदशाङ्गसूत्र का महत्त्व

डॉ. धर्मचन्द जैन

श्रावकाचार के सम्बन्ध में श्वेताम्बर एवं दिगम्बर दोनों परम्पराओं में आचार्यों के द्वारा अनेक ग्रन्थों की रचना की गई है, किन्तु उवासगदसाओ अथवा उपासकदशाङ्गसूत्र उन सभी ग्रन्थों का आधार रहा है। उवासगदसाओ अङ्ग आगम है, जिसकी रचना गणधरों द्वारा की गई है, अन्य ग्रन्थ आचार्यों द्वारा रचित हैं। उवासगदसाओ में तीर्थंकर महावीरकालीन 10 प्रमुख बारह व्रतधारी श्रेष्ठ श्रावकों का निरूपण करते हुए श्रावकाचार का प्रतिपादन किया गया है, अतः यह धर्मकथानुयोग का भी ग्रन्थ है तो आचार का प्रतिपादन करने के कारण चरणानुयोग का भी ग्रन्थ है। उपासकदशाङ्गसूत्र में पाँच अणुव्रत तथा सात शिक्षाव्रतों का कथन किया गया है।[1] यहाँ तीन गुणव्रतों को सात शिक्षाव्रतों में ही सम्मिलित किया गया है, जबकि औपपातिकसूत्र में तीन गुणव्रत एवं चार शिक्षाव्रतों का कथन पृथक् से हुआ है।

आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर के संस्करण में उपासकदशाङ्गसूत्र में कुछ पाठ यथाप्रसङ्ग अन्य आगमों से ग्रहण किए गए हैं, अतः वहाँ पर प्रभु के उपदेश में तीन गुणव्रतों एवं चार शिक्षाव्रतों का पृथक् से उल्लेख है।[2] उवासगदसाओ में श्रावक के इन बारह व्रतों को गृहिधर्म कहा गया है। घर में रहते हुए जो धर्माराधना की जा सके वह अगार धर्म अथवा गृहिधर्म है। घरबार छोड़कर पाँच महाव्रत अङ्गीकार कर जो धर्माराधन किया जाता है वह अनगार धर्म है। सम्पूर्ण जैन परम्परा में श्रमणोपासक की साधना का निरूपण करने वाला स्वतन्त्र आगम उपासकदशाङ्गसूत्र है। आवश्यकसूत्र में भी प्रधानता श्रमणाचार विषयक षड् आवश्यकों की है। तथापि श्रावक के 12 व्रतों एवं सम्यक्त्व के अतिचारों का उल्लेख इस आगम में उपलब्ध है।

स्थानाङ्गसूत्र में अवश्य श्रावक के पाँच अणुव्रतों[3], तीन मनोरथों[4] एवं श्रावक के विभिन्न प्रकारों का उल्लेख प्राप्त होता है। चार प्रकार के रात्निक श्रमण निर्ग्रन्थों, निर्ग्रन्थियों का उल्लेख करते हुए श्रमणोपासकों के भी चार प्रकार कहे गए हैं[5]-कोई रात्निक श्रमणोपासक महाकर्मा, महाक्रिय, अनातापी और असमित होने के कारण धर्म का अनाराधक होता है। कोई रात्निक श्रमणोपासक अल्पकर्मा, अल्पक्रिय, आतापी और समित होने के कारण धर्म का आराधक होता है। कोई अवमरात्निक (अल्पकालिक श्रावकपर्यायवान्) श्रमणोपासक महाकर्मा, महाक्रिय, अनातापी और समित होने के कारण धर्म का अनाराधक होता है तथा कोई अवमरात्निक श्रमणोपासक अल्पकर्मा, अल्पक्रिया, आतापी और समित होने के कारण धर्म का आराधक होता है। श्रमणोपासिका के भी इसी तरह चार प्रकार कहे गए हैं।[6] श्रमणोपासकों के अन्य चार प्रकार प्रसिद्ध हैं-1. माता-पिता के समान 2. भ्राता के समान 3. मित्रवत् 4. सौतवत्।[7] साधु-साध्वियों के हितैषी श्रावक उनका माता-पिता, भाई अथवा मित्र के समान संरक्षण करते हैं, वे संघ के भी हितैषी होते हैं तथा भगवान् की आज्ञा का आदर करते हैं। इनमें सौत के समान ईर्ष्या रखने वाले श्रावक हितैषी नहीं हो सकते। श्रमणोपासकों के अन्य चार प्रकार भी प्रसिद्ध हैं-1. दर्पण के समान 2. पताका के समान 3. ठूँठ या कीले के समान 4. तीक्ष्ण काँटे के समान। इनमें मात्र दर्पण के समान निर्मल चित्त होने वाला श्रावक का भेद उपादेय है,

शेष तीन हेय हैं। चंचल चित्त वाले, आग्रही एवं कष्ट पहुँचाने वाले श्रावक संघ एवं समाज के लिए हितकारी नहीं होते।

अन्तकृद्दशाङ्ग सूत्र में सुदर्शन श्रावक की प्रभु महावीर के प्रति अविचल श्रद्धा, जीवादि तत्त्वों के ज्ञातृत्व, निर्भयता, व्रताराधकता, संथाराभिज्ञता आदि की अभिव्यक्ति हुई है। एक श्रावक का जीवन कितना प्रभावशाली हो सकता है, इसका दिग्दर्शन सुदर्शन श्रावक की साधना के प्रभाव से होता है। अर्जुनमाली जैसे सनकी हत्यारे का जीवन बदलने में सुदर्शन श्रावक की साधना की शक्ति ने ही प्रथम कार्य किया।[8] उसके पश्चात् वह प्रभु महावीर की शरण में जाकर दीक्षित हुआ एवं समता की साधना कर आत्मकल्याण करने में समर्थ हुआ। प्रश्नव्याकरण सूत्र में आस्रव एवं संवर द्वारों के अन्तर्गत अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह का विशेष स्वरूप प्रकट हुआ है, जो श्रावक के पाँच अणुव्रतों के पालन में मार्गदर्शन का कार्य करता है। विपाकसूत्र में सुबाहुकुमार का चरित्र श्रावक के जीवन पर प्रकाश डालता है।

राजप्रश्नीयसूत्र में राजा प्रदेशी केशीश्रमण के साथ हुए संवाद के पश्चात् नास्तिक से आस्तिक, क्रूर से करुणाशील एवं रागी से विरागी बनकर एक उत्कृष्ट श्रावक का रूप ग्रहण कर लेता है। महारानी के द्वारा विष दिए जाने पर भी अन्तर्मानस में तनिक भी रोष प्रकट नहीं करता। इस प्रकरण से यह बोध होता है कि पापी से पापी व्यक्ति भी श्रमणोपासक बनकर अपने जीवन को उच्च बना सकता है।

समवायाङ्गसूत्र में श्रावक की ग्यारह प्रतिमाओं के नामों का उल्लेख हुआ है, जिनको उपासकदशांग में वर्णित आनन्द, कामदेव आदि श्रावक भी ग्रहण करते हैं। ग्यारह प्रतिमाएँ हैं-1. दर्शन प्रतिमा ÷2. व्रत प्रतिमा 3. सामायिक प्रतिमा 4. पौषध प्रतिमा 5. एकरात्रिक प्रतिमा 6. ब्रह्मचर्य प्रतिमा 7. सचित्त आहार त्यागप्रतिमा 8. आरम्भ त्याग प्रतिमा 9. प्रेष्य प्रतिमा 10. उद्दिष्ट त्याग प्रतिमा 11. श्रमणभूत प्रतिमा। इन प्रतिमाओं का उल्लेख दशाश्रुतस्कन्ध की छट्ठी दशा में भी हुआ है। सम्यग्दर्शन ग्रहण करना दर्शन प्रतिमा है। व्रत प्रतिमा में पाँच अणुव्रत तथा तीन गुणव्रतों को धारण किया जाता है। तीसरी प्रतिमा में सामायिक तथा देशावकाशिक ये दो व्रत स्वीकार किए जाते हैं। चौथी प्रतिमा में पौषधोपवास व्रत अंगीकार किया जाता है। पाँचवी प्रतिमा में पाँच कार्य किए जाते हैं - 1. एक सम्पूर्ण रात्रि (अथवा प्रहरभर) कायोत्सर्ग करना 2. स्नान नहीं करना 3. रात्रिभोजन-त्याग 4. लंगोटी न लगाना 5. दिन में ब्रह्मचर्य-पालन। इस व्रत को जघन्य एक दिन से उत्कृष्ट पाँच माह तक पालन किया जाता है। छठी ब्रह्मचर्य प्रतिमा में दिन एवं रात्रि दोनों में ब्रह्मचर्य पालन किया जाता है। इसका उत्कृष्ट काल 6 माह का है। सातवीं प्रतिमा में सचित्त आहार का त्याग किया जाता है, जिसका उत्कृष्ट काल 7 मास है। आठवीं प्रतिमा में आरम्भ करने का त्याग किया जाता है, जिसका उत्कृष्ट काल 8 माह है। नवमी प्रतिमा में दूसरे के द्वारा भी आरम्भ कराने का त्याग रखा जाता है। दसवीं प्रतिमा में अपने उद्देश्य से बनाया गया आहार ग्रहण नहीं किया जाता। सिर पर शिखा रखकर क्षुर मुण्डन किया जाता है। इसका उत्कृष्ट काल 10 मास है। ग्यारहवीं प्रतिमा में साधुवेश धारण कर भिक्षाचर्या से आहार ग्रहण किया जाता है। इसका उत्कृष्ट काल 11 मास है। इन सब प्रतिमाओं का संयुक्त काल साढ़े पाँच वर्ष है। प्रथम प्रतिमा एक मास की यावत् एक-एक मास बढ़ाते हुए 11वीं प्रतिमा 11 मास की होती है। इन प्रतिमाओं की आराधना उपासकदशाङ्ग के सभी श्रावकों द्वारा 14 वर्ष के श्रावक जीवन के पश्चात् की गई है। साधना में सतत आगे बढ़ने के लिए ये प्रतिमाएँ उपयोगी हैं।

व्याख्याप्रज्ञप्तिसूत्र के द्वितीय शतक में तुंगिया नगरी के श्रावकों का आदर्श जीवन वर्णित है। सप्तम शतक में मद्दुक श्रमणोपासक की तत्त्वज्ञता का सुन्दर निरूपण हुआ है जो अन्य तीर्थिकों द्वारा पञ्चास्तिकाय एवं षड्द्रव्यों के सम्बन्ध में उठाई गई शंकाओं का सम्यक् समाधान करती है। बारहवें शतक में शंख एवं

पोखली श्रावकों का वर्णन है, जिन्होंने भोजन-करके पौषध किया था। यह उदाहरण ही दयाव्रत की साधना का आधार बना है। इसी शतक में तत्त्वजिज्ञासु जयन्ती श्राविका का निरूपण हुआ है जिसके यहाँ श्रमण, श्रमणी ठहरते थे। इसी सूत्र में कार्तिक श्रेष्ठी द्वारा एक सौ बार पाँचवीं प्रतिमा अङ्गीकार करने का वर्णन आता है।

उत्तराध्ययनसूत्र में श्रावकों को कुछ भिक्षुओं से श्रेष्ठ बताते हुए कहा गया है-

संति एगेहिं भिक्खूहिं, गारत्था संजमुत्तरा।
गारत्थेहि य सव्वेसिं, साहवो संजमुत्तरा।।

-उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 5, गाथा 20

जो शिथिलाचारी भिक्षु हैं उनसे संयम में कुछ गृहस्थ श्रेष्ठ हो सकते हैं तथा संयमनिष्ठ साधु तो सभी गृहस्थों से श्रेष्ठ होते हैं।

आचाराङ्ग, सूत्रकृताङ्ग, ज्ञाताधर्मकथा, उत्तराध्ययन, दशवैकालिक आदि आगमों में श्रावकाचार का सीधा निरूपण भले ही न हुआ हो, किन्तु इन आगमों का स्वाध्याय कर श्रावक अपने जीवन को उत्कृष्ट बना सकता है। आत्म-विकारों को दूर कर निर्मल बनने का सूत्र प्रायः सभी आगमों में प्राप्त होता है।

श्रावकाचार विषयक श्वेताम्बर आचार्यों का योगदान

1. **वाचक उमास्वाति (द्वितीय-तृतीय शती)-** तत्त्वार्थसूत्र के रचनाकार आचार्य उमास्वाति ने तत्त्वार्थसूत्र के सप्तम अध्याय में श्रावकों के व्रतों, अतिचारों एवं संलेखना के पाँच अतिचारों का निरूपण सूत्र शैली में किया है, जिस पर श्वेताम्बर एवं दिगम्बर दोनों परम्पराओं के आचार्यों की टीकाएँ उपलब्ध हैं। उदाहरणार्थ पूज्यपाद देवनन्दी कृत सर्वार्थसिद्धि, भट्ट अकलङ्ककृत तत्त्वार्थवार्तिक, विद्यानन्द कृत तत्त्वार्थश्लोक वार्तिक दिगम्बर टीकाएँ हैं। सिद्धसेनगणि एवं हरिभद्रसूरि विरचित टीकाएँ श्वेताम्बर हैं। उमास्वाति की एक कृति 'सावयपण्णत्ती' मानी जाती है, जिसमें 403 गाथाएँ हैं उसमें श्रावक का परिचय देते हुए कहा गया है-

संमत्तदंसणाइ पइदिअहं जइ जणा सुणेइ य।
सामायारी परमं जो खलु, तं सावगं विंति।।

-सावयपण्णत्ती, गाथा 6

जो सम्यग्दृष्टि श्रमणों से प्रतिदिन समाचारी सुनता है उसे श्रावक कहते हैं। इस कृति पर आचार्य हरिभद्र ने टीका का लेखन किया है।

2. **आचार्य हरिभद्र (700-770 ई.)-** श्रावकाचार पर इन्होंने 'धर्मबिन्दु प्रकरण' नामक ग्रन्थ में नूतन प्रकाश डाला है तथा मार्गानुसारी के 35 गुणों का सर्वप्रथम उल्लेख इसी कृति में हुआ है। हरिभद्रसूरि ने अनुष्ठाता के आधार पर दो प्रकार के धर्म कहे हैं- 1. गृहस्थ धर्म एवं 2. यतिधर्म। गृहस्थ धर्म को भी उन्होंने 2 प्रकार का बताया है-1. सामान्य एवं 2. विशेष। सामान्य धर्म को परिभाषित करते हुए उन्होंने कहा है-तत्र सामान्यतो गृहस्थधर्मः कुलक्रमागतमनिन्द्यविभवाद्यपेक्षया न्यायतोऽ-नुष्ठानमिति।-(सूत्र 3) अर्थात् कुल परम्परा से प्राप्त अनिन्द्य वैभव आदि की अपेक्षा न्याय युक्त जो कार्य है वह सामान्यतः गृहस्थ धर्म है। वे न्याय से प्राप्त धन को इस लोक एवं परलोक दोनों के लिए हितकर बताते हैं-न्यायोपात्तं हि वित्तमुभय-लोकहितायेति। (सूत्र 4) वह उभय लोक में हितकारी क्यों है, इसका भी विवेचन करते हैं तथा कहते हैं कि अन्याय द्वारा धन का अर्जन कभी हो या न हो, किन्तु अनर्थ तो हो ही जाता है। इसलिए न्यायपूर्वक ही धन का अर्जन करना उचित है। इसी प्रकार समान कुलशील वाले अन्य गोत्रीय के साथ विवाह, प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष पापाचरण से भीरुता, शिष्टाचारप्रशंसा आदि विभिन्न सामान्य धर्मों या गुणों का निरूपण धर्मबिन्दु प्रकरण में हुआ है। आगे पाँच अणुव्रतों, तीन गुणव्रतों एवं चार शिक्षा व्रतों का अतिचार रहित पालन विशेष धर्म कहा

गया है। वे कहते हैं-**एतद्रहिताणुव्रतादिपालनं विशेषतो गृहस्थधर्म इति।**[9]

अर्थात् अतिचारों से रहित अणुव्रत आदि का पालन विशेषतः गृहस्थ धर्म है। धर्मबिन्दु प्रकरण पर मुनिचन्द्रसूरि द्वारा टीका लिखी गई है।

हरिभद्रसूरि का श्रावकाचार पर दूसरा महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ 'श्रावक धर्मविधि प्रकरण' है। यह प्राकृत में 120 गाथाओं में निबद्ध है तथा श्रावकधर्म का इसमें व्यवस्थित निरूपण हुआ है।

आचार्य जिनेश्वर सूरि(12वीं शती) रचित 'षट्स्थान प्रकरण', देवेन्द्रसूरि (14वीं शती) कृत श्राद्धदिनकृत्य, जिनेश्वरसूरि (वि.सं.1313) रचित 'श्रावकधर्मविधि, जिनमण्डलगणी (15वीं शती) कृत 'श्राद्धगुणविवरण' रत्नशेखरसूरि (15वीं शती) विरचित 'श्राद्धविधि' एवं 'विधिकौमुदी' टीका आदि अनेक कृतियों में भी श्रावकाचार पर प्रकाश प्राप्त होता है।

3. **हेमचन्द्र सूरि**-आचार्य हेमचन्द्र रचित योगशास्त्र में भी श्रावकाचार पर विशद विवरण उपलब्ध होता है। आचार्य हेमचन्द्र ने न्यायसम्पन्न विभव आदि 35 मार्गानुसारी गुणों का श्लोकों में कथन किया है।[10] वर्तमान में हेमचन्द्र कृत योगशास्त्र में निरूपित 35 गुणों का ही क्रम प्रसिद्ध है। उनके द्वारा निरूपित 35 गुण इस प्रकार हैं- 1. न्यायसम्पन्नविभव 2. शिष्टाचारप्रशंसक 3. सम कुल-शील एवं अन्य गोत्रज के साथ विवाह 4. पाप- भीरुता 5. प्रसिद्ध देशाचार का पालन 6. अवर्णवाद का त्याग 7. सही पड़ौसी युक्त, अनतिव्यक्त गुप्त तथा अनेक निर्गम द्वारों से रहित घर 8. सदाचारियों की संगति 9. माता-पिता के प्रति आदर 10. उपद्रवयुक्त स्थान का त्याग 11. गर्हित कार्य में अप्रवृत्ति 12. आय के अनुरूप व्यय 13. परिधान का प्रयोग अपनी वित्त-व्यवस्था के अनुसार 14. बुद्धि के आठ गुणों से युक्त 15. प्रतिदिन धर्म-श्रवण 16. अजीर्ण होने पर भोजन का त्याग 17. यथासमय भोजन करना 18. धर्म, अर्थ एवं काम का परस्पर अबाधित सेवन 18. अतिथि, साधु एवं दीन को दान 20. आग्रहरहितता 21. गुणों में पक्षपात 22. अदेश एवं अकाल की चर्या का त्याग 23. अपने बल-अबल को जानकर कार्य करना 24. चारित्र में स्थित ज्ञानवृद्धों का सम्मान करना 25. माता-पिता, पत्नी, पुत्र आदि पोष्यों का पोषण करना 26. दीर्घदर्शी होना 27. विशेषज्ञ होना 28. कृतज्ञ होना 29. लोकप्रिय होना 30. लज्जावान् होना 31. दयालु होना 32. सौम्य होना 33. परोपकार करने में कर्मठ होना 34. अन्तरंग षड् अरिवर्ग का परिहार करना 35. इन्द्रियों पर वशीकरणता। योगशास्त्र में आचार्य हेमचन्द्र ने सम्यग्दर्शन का स्वरूप निरूपित करते हुए कहा है-

या देवे देवताबुद्धिर्गुरौ च गुरुतामतिः।
धर्म्मे च धर्म्मधीः शुद्धा सम्यक्त्वमिदमुच्यते।

-योगशास्त्र 2.2

देव में देवबुद्धि, गुरु में गुरुबुद्धि एवं धर्म में धर्म बुद्धि होना सम्यक्त्व है। देव का लक्षण करते हुए उन्होंने कहा-

सर्वज्ञो जितरागादिदोषस्त्रैलोक्यपूजितः।
यथास्थितार्थवादी च देवोऽर्हन् परमेश्वरः।।

-योगशास्त्र, 2.4

सर्वज्ञ, रागादि दोषों के विजेता, त्रिलोक पूजित एवं यथार्थवादी परमेश्वर देव हैं। इसी प्रकार पञ्च महाव्रतधारी, धीर, भिक्षामात्रजीवी, सामायिक में स्थित एवं धर्म के उपदेशक गुरु हैं। दुर्गति में गिरते हुए प्राणियों का रक्षक एवं संयम आदि दस प्रकार का सर्वज्ञोक्त धर्म कहा गया है जो मुक्ति का साधन होता है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय आदि का भी आचार्य हेमचन्द्र ने सुन्दर निरूपण किया है।

नेमिचन्द्रसूरि प्रणीत प्रवचनसारोद्धार (द्वार 239 गाथा 1356-1358) ग्रन्थ में श्रावक के 21 गुणों का कथन हुआ है - 1. अक्षुद्र 2. रूपवान् 3. प्रकृतिसौम्य 4. लोकप्रिय 5. अक्रूर 6. भीरु 7. अशठ 8.

दाक्षिण्यवान् 9. लज्जालु 10. दयालु 11. मध्यस्थ 12. सौम्यदृष्टि 13. गुणरागी 14. सत्कथी एवं सुपक्षयुक्त 15. सुदीर्घदर्शी 16. विशेषज्ञ 17. वृद्धानुग 18. विनीत 19. कृतज्ञ 20. परहितकारी एवं 21. लब्धलक्ष्य इन गुणों से युक्त श्रावक धर्मरत्न को धारण करने योग्य होता है।

श्रावकाचार विषयक दिगम्बर ग्रन्थ

1. **कुन्दकुन्द**–चारित्रप्राभृत एवं रयणसार नामक ग्रन्थों में कुन्दकुन्दाचार्य ने श्रावकाचार का निरूपण किया है। चारित्रप्राभृत में उन्होंने सागारचारित्र का निरूपण करते हुए ग्यारह प्रतिमाओं के नाम इस प्रकार गिनाए हैं–

   1. दर्शन 2. व्रत 3. सामायिक 4. प्रोषध 5. सचित्त त्याग 6. रात्रिभुक्तित्याग 7. ब्रह्मचर्य 8. आरम्भ-त्याग 9. परिग्रह-त्याग 10. अनुमति-त्याग एवं 11. उद्दिष्ट-त्याग।[11] यहाँ पर ध्यातव्य है कि समवायांगसूत्र एवं दशाश्रुतस्कन्ध में कथित एकादश प्रतिमाओं से यहाँ एक दो प्रतिमाओं के नामों एवं क्रम में भेद है। कुन्दकुन्दाचार्य ने पाँच अणुव्रतों, तीन गुणव्रतों एवं चार शिक्षा व्रतों का भी कथन किया है, किन्तु वे चार शिक्षा व्रतों में देशावकाशिक को न रखकर अन्त में सल्लेखना को सम्मिलित करते हैं, यथा–

सामाइयं च पढमं विदियं च तहेव पोसहं भणियं।
तइयं अतिहिपुज्जं चउत्थं सल्लेहणा अंते।।

–चारित्रप्राभृत, गाथा 25

शिक्षाव्रत हैं – 1. सामायिक 2. पौषध 3. अतिथि-पूज्यता 4. सल्लेखना। अणुव्रतों एवं गुणव्रतों के नामों में श्वेताम्बर परम्परा से कोई भिन्नता नहीं है।

2. **समन्तभद्र (पाँचवी शती)**–समन्तभद्र के नाम से 'रत्नकरण्डक श्रावकाचार' प्रसिद्ध है, जिसमें 150 संस्कृत श्लोकों में संक्षेप में श्रावकाचार का निरूपण हुआ है। इसमें सम्यग्दर्शन उसके निः शंकित आदि अंगों का कथन एवं स्वरूप प्रतिपादन करने के पश्चात् पाँच अणुव्रतों, तीन गुणव्रतों एवं चार शिक्षा व्रतों का निरूपण किया गया है। चार शिक्षाव्रतों में यहाँ सल्लेखना को नहीं, देशावकाशिक व्रत को स्थान दिया गया है। बारह व्रतों के अतिचारों का कथन भी किया गया है। गृहस्थ के आठ मूल गुणों का निर्देश है–मद्यत्याग, मांसत्याग एवं मधुत्याग के साथ पाँच अणुव्रतों का पालन।[12] ग्यारह प्रतिमाएँ वे ही कही गई हैं जो कुन्दकुन्द के चारित्र प्राभृत में है। समाधिमरण की विधि का भी उल्लेख किया गया है। शिक्षाव्रतों में अतिथिपूजा के स्थान पर वैयावृत्त्य शब्द का प्रयोग किया है[13] तथा वैयावृत्त्य का अर्थ दान किया गया है–

दानं वैयावृत्त्यं धर्माय तपोधनाय गुणनिधये।
अनपेक्षितोपचारोपक्रियमगृहाय विभवेन।।

– रत्नकरण्डक, 111

यह रचना इतनी व्यवस्थित है कि इसे पाँचवी शताब्दी वाले समन्तभद्र की कृति नहीं कहा जा सकता।

3. **जिनसेन (9वीं शती)**–आदिपुराण में यथाप्रसंग जिनसेनाचार्य ने श्रावक धर्म का प्रतिपादन किया है। उन्होंने 12 व्रतों का कथन किया है तथा आठ मूल गुणों में मधु के स्थान पर द्यूत-त्याग की गणना की है। हरिवंश पुराण में भी उन्होंने बारह व्रतों, संलेखना आदि के अतिचारों का वर्णन किया है।[14]

4. **सोमदेवसूरि**–यशस्तिलक चम्पू नामक काव्य के छठे से आठवें आश्वासों में सोमदेवसूरि ने श्रावक धर्म का निरूपण किया है। उनके ये आश्वास 'उपासकाध्ययन' नाम से भी जाने जाते हैं। सोमदेवसूरि ने मद्य, मांस, मधु एवं पाँच उदुम्बर फलों[15] के त्याग को अष्टमूल गुण स्वीकार किया है।[16] पाँच अणुव्रतों का निरूपण करने के पश्चात्

अहिंसाव्रत की रक्षा हेतु रात्रि-भोजन एवं अभक्ष्य पदार्थों के सेवन के त्याग पर बल दिया है।[17] व्रतों के अनन्तर एकादश प्रतिमाओं का भी कथन किया गया है।

5. अमितगति–अमितगति द्वारा रचित ग्रन्थ 'अमितगति श्रावकाचार' के नाम से जाना जाता है। इसे उपासकाध्ययन भी कहा गया है। इसमें 14 परिच्छेदों में श्रावकाचार का विस्तृत विवेचन हुआ है।

6. अमृतचन्द्र (9वीं शती)–'पुरुषार्थसिद्ध्युपाय' नामक ग्रन्थ में संक्षेप में श्रावकाचार का निरूपण प्राप्त होता है। अहिंसा का प्रतिपादन करते हुए अमृत चन्द्र ने राग आदि दोषों के अप्रादुर्भाव को अहिंसा कहा है[18] तथा पाँच उदुम्बर फल, मद्य, मांस और मधु के त्याग को आवश्यक माना है।

7. वसुनन्दी–इनके द्वारा रचित ग्रन्थ 'वसुनन्दि श्रावकाचार' के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें आठ गुणों एवं बारह व्रतों के अतिचारों का निरूपण नहीं किया। एकादश प्रतिमाओं को आधार बनाकर श्रावकधर्म का प्रतिपादन किया है। दर्शन श्रावक को सप्त व्यसनों से रहित होना आवश्यक माना है। इन्होंने सप्त व्यसनों के त्याग पर विशेष बल प्रदान किया है तथा इन्हें दुर्गति का कारण बताया है-

जूयं मज्जं मंसं वेसा पारद्धि-चोर-परदारं।
दुग्गइगमणस्सेदाणि हेउभूदाणि पावाणि।।

–वसुनन्दि श्रावकाचार, 59

1. द्यूत 2. मद्य 3. मांस 4. वेश्यागमन 5. शिकार 6. चोरी 7. परस्त्रीगमन। ये सात व्यसन दुर्गति के हेतुभूत पाप हैं। श्रावक को इनका त्याग करना आवश्यक है।[19]

8. पं. आशाधर–इन्होंने अनगार धर्मामृत में मुनियों का तथा 'सागार धर्मामृत' में श्रमणोपासकों का आचार निरूपित किया है। इनके ग्रन्थ पर श्वेताम्बर साहित्य का प्रभाव है। यह श्रावकाचार का निरूपण करने की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है।

9. देवसेनकृत 'सावयधम्मदोहा' मेधावी कृत 'धर्मसंग्रह श्रावकाचार', आचार्य सकलकीर्ति रचित 'प्रश्नोत्तर श्रावकाचार', गुणभूषण विरचित श्रावकाचार, नेमिदत्त कृत 'धर्मोपदेशपीयूषवर्ष' , लाटी संहिता, पद्मनन्दिविरचित 'श्रावकाचार' व्रतसार श्रावकाचार, अभ्रदेवकृत 'व्रतोद्द्योतन श्रावकाचार' आचार्य प्रभाचन्द्र के शिष्य पद्मनन्दिकृत श्रावकाचार सारोद्धार, जिनदेव विरचित 'भव्यमार्गोपदेश उपासकाध्ययन', शिवकोटि रचित 'रत्नमाला' आदि ग्रन्थ भी श्रावकाचार का निरूपण करते हैं। पद्मचरित्र के 14वें पर्व में, वरांगचरित के 15वें सर्ग में, वामदेवकृत संस्कृत भावसंग्रह में तथा पं. गोविन्दकृत पुरुषार्थानुशासन के तृतीय से षष्ठ सर्ग तक श्रावकधर्म का निरूपण किया गया है।

श्वेताम्बर एवं दिगम्बर परम्परा में समय-समय पर जो श्रावकाचार विषयक ग्रन्थ लिखे गए हैं, वे युग की माँग के अनुसार रचित हैं। इनमें सप्तकुव्यसन-त्याग, 35 मार्गानुसारी गुण, 21 गुण आदि आवश्यकता के अनुसार योजित किए जाते रहे हैं। इसी प्रकार सम्यग्दर्शन का स्वरूप भी इन ग्रन्थों में न्यूनाधिक रूप में वर्णित हुआ है। सुदेव, सुगुरु एवं सुधर्म पर आस्था रखने स्वरूप सम्यग्दर्शन की पुष्टि हुई है।

उपासकदशाङ्गसूत्र का महत्त्व

1. श्रावकाचार के उत्तरवर्ती ग्रन्थों की रचना में यह आधारभूत रहा है, क्योंकि 12 व्रतों एवं उनके अतिचारों का कथन उपासकदशाङ्गसूत्र में हुआ है। एकादश प्रतिमाओं का संकेत, तथा संलेखना संथारापूर्वक समाधिमरण का उल्लेख भी इस आगम में सम्प्राप्त है।
2. गणधरों द्वारा रचित होने के कारण इसकी महत्ता सर्वाधिक है।

3. इसमें प्रभु महावीरकालीन आनन्द, कामदेव, चूलनीपिता, सुरादेव, चुल्लशतक, कुण्डकौलिक, सद्दालपुत्र, महाशतक, नन्दिनीपिता एवं सालिहीपिया श्रावकों का जीवन चरित्र वर्णित है। उनकी साधना का प्रायोगिक पक्ष इसमें वर्णित है। बाद में अन्य जो भी श्रावकाचार के ग्रन्थ लिखे गए हैं उनमें पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत, चार शिक्षाव्रत, एकादश प्रतिमा आदि का निरूपण है, किन्तु प्रायोगिक जीवन के उदाहरण नहीं हैं।
4. व्रतों के प्रति निष्ठा एवं समर्पणपूर्वक आचरण के दर्शन करने हों तो उपासकदशांग अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आगम है। आनन्द आदि श्रावकों के जीवन में कितने उपसर्ग आते हैं, देवों के द्वारा भाँति-भाँति से परीक्षा ली जाती है, किन्तु आनन्द आदि श्रावक उसमें भी दृढ रहते हैं। कहीं शिथिलता आई है, तो उसके लिए प्रायश्चित्तपूर्वक शुद्धि की जाती है तथा व्रत-पालन के प्रति पुनः दृढ़ता लायी जाती है।
5. प्रभु महावीर से श्रावक व्रत अंगीकार कर सभी श्रावक 14 वर्ष पश्चात् एकादश प्रतिमाओं की आराधना करते हैं तथा पौषधशाला में रहकर धर्माराधना करते हैं।
6. श्रावक को भी अवधिज्ञान हो सकता है यह हमें आनन्द श्रावक के उदाहरण से विदित होता है।
7. आनन्द आदि श्रावकों की दृढ़ता की प्रशंसा प्रभु महावीर ने स्वयं की है।
8. व्यापार आदि के कार्यों को ज्येष्ठ पुत्र को सम्हलाकर सभी श्रावक स्वयं निवृत्तिमय जीवन जीते हैं।
9. उपासकदशांगसूत्र में आर्थिक सुरक्षा की दृष्टि से भी चिन्तन प्राप्त होता है। सभी श्रमणोपासक अपने पास उपलब्ध धनसम्पत्ति का एक तिहाई सुरक्षित कोष (रिजर्व फण्ड) में, एक तिहाई व्यापार में तथा एक तिहाई घर-बिखेरे में उपयोग करते थे। इससे कभी आर्थिक संकट नहीं रहता था। आय से अधिक व्यय करने पर अनेकविध समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। विभिन्न देशों में इस कारण आर्थिक संकट उत्पन्न होते रहे हैं। श्रावक का यह कर्त्तव्य है कि वह आय से अधिक व्यय नहीं करें। आय से अधिक व्यय करना अविवेक एवं द्यूत है।
10. गृहस्थ जीवन के समृद्ध होते हुए, समाज में प्रतिष्ठा एवं आदर होते हुए भी आनन्द आदि गाथापतियों ने प्रभु महावीर का प्रवचन सुनकर जीवन को भोगों से विरत एवं संयमित बनाया।
11. प्रभु महावीर के उपदेश को सुनकर आनन्द आदि गाथापतियों के हृदय से अभिव्यक्ति होती है- सद्दहामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते! निग्गंथं पावयणं, एवमेयं भंते! तहमेयं भंते! इच्छियमेयं भंते! पडिच्छियमेयं भंते! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते!

   भगवन् मैं निर्ग्रन्थ प्रवचन पर श्रद्धा करता हूँ, प्रतीति करता हूँ, मुझे निर्ग्रन्थ प्रवचन रुचिकर लगता है। ऐसा ही सत्य है जैसा आपने फरमाया है। मुझे यह इष्ट है, प्रतीष्ट है। फिर भी भगवन्! मैं अनेक राजाओं, तलवरों, माडम्बिकों, कौटुम्बिकों, श्रेष्ठियों, सेनापतियों, सार्थवाहों की भाँति मुण्डित होकर अगार से अनगार धर्म में प्रव्रजित नहीं हो सकता, अतः हे भगवन्! मैं आपके चरणों में पाँच अणुव्रतों एवं सात शिक्षा व्रत स्वरूप द्वादशविध गृहिधर्म को स्वीकार करूँगा। प्रभु के एक प्रवचन में वे 12 व्रत अङ्गीकार कर लेते हैं।
12. पाँचवाँ अणुव्रत वर्तमान में परिग्रह-परिमाण या परिग्रह-विरमण के रूप में प्रसिद्ध है, किन्तु उपासकदशाङ्गसूत्र में यह इच्छाविधि परिमाण अथवा इच्छा-परिमाण के रूप में प्रस्तुत हुआ है। इच्छा परिमाण के अन्तर्गत हिरण्य-सुवर्ण, चतुष्पद, क्षेत्र-वास्तु, शकट एवं वाहनविधि के परिमाण का उल्लेख हुआ है। उपभोग-परिभोग परिमाण व्रत में भी प्रकारान्तर से इच्छाओं का ही परिमाण है। इच्छा-परिमाण व्रत के अतिचारों में

धन-धान्य के प्रमाणातिक्रम का भी उल्लेख करते हुए वर्तमान में प्रचलित पाँच अतिचार कहे गए हैं- खेत्तवत्थुप्पमाणाइक्कमे, हिरण्णसुवण्णप्पमाणाइक्कमे, दुपय-चउप्पयपमाणाइक्कमे, धणधन्नपमाणाइक्कमे, कुवियप्पमाणाइक्कमे। बारह व्रत के जिन पाँच-पाँच अतिचारों का उल्लेख, उपासकदशांगसूत्र में हुआ है, वही पश्चात्वर्ती श्रावकाचार ग्रन्थों में ग्रहण किए गए हैं तथा आज भी प्रतिक्रमण में उनका ही उल्लेख किया जाता है। आधुनिक युग में भौतिक विकास एवं परिस्थितियों के बदलाव को ध्यान में रखते हुए इन अतिचारों पर पुनश्चिन्तन की आवश्यकता है।

13. श्रावकों को जो धर्ममार्ग अच्छा लगा, उस पर उन्होंने अपनी पत्नियों को भी चलने के लिए प्रेरित किया। आनन्द-श्रावक ने अपनी पत्नी शिवानन्दा को धर्मश्रवण हेतु प्रेरित किया एवं वह श्रमणोपासिका बन गई। महाशतक की पत्नी रेवती को छोड़कर सबका अपने श्रावक-पतियों की साधना में सहकार रहा। चुलनीपिता की माता ने, सुरादेव की पत्नी धन्या ने, चुल्लशतक की पत्नी बहुला ने देवों के द्वारा निरन्तर उपसर्ग उपस्थित किए जाने पर भ्रान्तिवश विचलित होने पर श्रावकों को साधना में स्थिर किया। इसका तात्पर्य है कि नारी पुरुष को साधना से विचलित ही करती हो, यह एकान्त उचित नहीं है, नारियाँ पुरुष को साधना में स्थिर भी करती हैं। यहाँ ज्ञातव्य है कि देवों के द्वारा दिए गए उपसर्गों में जो घटनाएँ घटित हो रही थीं वे मात्र उन-उन श्रावकों को दृष्टिगोचर हो रही थीं, तथा वास्तव में उनके पुत्रों या अन्य सदस्यों की हत्या नहीं हुई थी। प्राय: सभी श्रावकों ने न्यूनाधिक रूप से समता में रहने का परिचय दिया।

14. धर्ममार्ग पर दृढ़ता की प्रेरणा उपासकदशाङ्गसूत्र से प्राप्त होती है। कुण्डकौलिक श्रावक को एक देव ने मंखलिपुत्र गोशालक के नियतिवाद को स्वीकार करने के सम्बन्ध में तर्क दिए, किन्तु कुण्डकौलिक ने प्रत्युत्तर देकर उस देव को निरुत्तर कर दिया एवं कहा कि उत्थान, कर्म, बल, वीर्य एवं पुरुषकार-पराक्रम हैं तथा सब भाव नियत नहीं हैं। गोशालक उत्थान, कर्म, बल, वीर्य एवं पुरुषकार पराक्रम को न मानकर समस्त कार्यों को नियत मानता था।

15. उपासकदशाङ्गसूत्र से यह विदित होता है कि प्रभु महावीर के समय मंखलिपुत्र गोशालक का मत नियतिवाद भी प्रचलित था तथा उसको मानने वाले भी अनेक श्रावक थे। तथापि युक्तिसंगतता के आधार पर नियतिवाद की अपेक्षा पुरुषकार पराक्रम अथवा पुरुषार्थवाद ही श्रेष्ठ है। प्रभु महावीर ने सातवें श्रमणोपासक सद्दालपुत्र नामक कुम्भकार को नियतिवाद से पुरुषार्थवाद में स्थिर किया था। गोशालक ने सद्दालपुत्र को पुन: विचलित करने का प्रयत्न किया, किन्तु वह निष्फल रहा।

16. गोशालक ने प्रभु महावीर की प्रशंसा करते हुए उन्हें अनेक उपमाओं से उपमित किया है, यथा- महामाहन (ज्ञानदर्शनसम्पन्न, महित-पूजित एवं तत्त्वकर्मसम्पदा से युक्त), महागोप (संसाराटवी में भटकने वाले जीवों को धर्मभयदण्ड से रक्षा करने वाले), महासार्थवाह (संसाराटवी में भटकने वाले जीवों को निर्वाण महानगर की ओर उन्मुखकर्ता), महाधम्मकही (नष्ट-विनष्ट एवं उन्मार्ग पर गमन करने वाले जीवों को सन्मार्ग पर लाने हेतु प्रवचनकर्ता) महानिर्यामक (संसारसमुद्र में बहते हुए जीवों को धर्मनाव से पार लगाने वाले)।

17. उपासकदशांगसूत्र में श्रद्धा एवं तर्क दोनों का प्रयोग हुआ है। तर्क के द्वारा सत्य धर्म की ओर उन्मुख किया जाता है तथा श्रद्धा से नैया पार होती है। श्रद्धा भी सम्यक् होनी चाहिए, इसलिए तर्क का प्रयोग किया जाता है। अन्धश्रद्धा तारने वाली नहीं डुबाने वाली होती है। सद्दालपुत्र को प्रभु महावीर ने तर्कपूर्वक ही नियतिवाद से पुरुषार्थवाद में स्थिर किया था तथा कुण्डकौलिक ने देव को निरुत्तर किया था।

18. उपासकदशांग यद्यपि चरणानुयोग का आगम है, तथापि इसमें आत्मा, लोक, कर्मसिद्धान्त, पुनर्जन्म आदि तत्त्वमीमांसीय सिद्धान्तों का भी संकेतात्मक निरूपण प्राप्त होता है। कोई भी जैन आगम हो, उसमें जैन सिद्धान्त न्यूनाधिक रूप में निहित रहते ही हैं। आनन्द आदि श्रावकों ने भगवान की धर्मदेशना का श्रवण करने के अनन्तर उस पर श्रद्धान किया था। वह धर्मदेशना क्या थी, इसका उपासकदशाङ्ग के कुछ संस्करणों के मूलपाठ में निर्देश नहीं है तथा कुछ में उल्लेख किया गया है। जिनमें उल्लेख है वहाँ वह पाठ औपपातिकसूत्र से ज्यों का त्यों लिया गया है। सम्भव है औपपातिकसूत्र में इस उपदेश का वर्णन आने के कारण उपासकदशाङ्ग में उल्लेख नहीं किया गया हो। उस उपदेश के अनुसार ''लोक भी है, अलोक भी है। इसी प्रकार जीव, अजीव, बन्ध, मोक्ष, पुण्य, पाप, आस्रव, संवर, वेदना, निर्जरा भी है।'' जैनदर्शन में षड् द्रव्यमय लोक है तथा अलोक में मात्र आकाश है। यहाँ जीवादि तत्त्वों का निरूपण करते हुए 'वेदना' का पृथक् से कथन किया गया है, जिससे तत्त्वों की संख्या नौ तक सीमित नहीं रहती। 'नरक, नैरयिक, तिर्यञ्चयोनि, तिर्यञ्चयोनिक, माता, पिता, देव, देवलोक, सिद्धि, सिद्ध, परिनिर्वाण, परिनिर्वृत्त आदि भी वर्णित हैं।' इससे चारों गतियों की एवं मुक्ति की अवधारणा परिनिष्पन्न होती है। प्राणातिपात आदि 18 पापों एवं इन पापों से विरति का कथन हुआ है। कर्मसिद्धान्त का प्रतिपादन करते हुए कहा गया है- **'सुचिण्णा कम्मा सुचिण्णफला भवंति, दुचिण्णा कम्मा दुचिण्णफला भवंति।'** अर्थात् प्रशस्त रूप से आचरित कर्मों का फल शुभ तथा अप्रशस्त रूप से आचरित कर्मों का फल अशुभ या दुःखद होता है। स्वकृत कर्मों के अनुसार ही आनन्द आदि श्रावकों का जन्म सौधर्म आदि वैमानिक देवों में हुआ तथा रेवती का जन्म नरक में हुआ। जो जैसा कर्म करता है उसको तदनुरूप फल की प्राप्ति होती है। जहाँ कर्मसिद्धान्त मान्य है वहाँ आत्मा का अस्तित्व एवं उसका विभिन्न योनियों में पुनर्जन्म भी मान्य है। जहाँ कर्मसिद्धान्त मान्य है वहाँ पुरुषवाद या पुरुषार्थवाद भी मान्य करना होगा, क्योंकि अपने-अपने कर्मों की अवधारणा आत्मपौरुष को स्वीकार करने पर ही सम्भव है। धर्मक्रिया के द्वारा कर्मों की निर्जरा की जा सकती है। नरकादि के कारणों का भी निर्देश इस उपदेश में हुआ है।

आचार की दृष्टि से प्राणातिपात-विरमण के रूप में अहिंसा, मृषावाद-विरमण के रूप में सत्य, अदत्तादान-विरमण के रूप में अचौर्य, मैथुन-विरमण व्रत के रूप में ब्रह्मचर्य एवं इच्छा- परिमाण के रूप में अपरिग्रह सिद्धान्त पुष्ट हुए हैं।

19. व्यापार आदि की दृष्टि से क्या वर्जनीय है, इसका भी निरूपण 15 कर्मादानों के रूप में उपासकदशाङ्गसूत्र में उपलब्ध है। इससे अहिंसक जीवनशैली एवं पापार्जन से कुछ अंशों में विरत रहकर आजीविका चलाने की प्रेरणा मिलती है।

20. मद्य एवं मांस के त्याग का उपासकदशाङ्ग में सीधा उल्लेख नहीं है, किन्तु जब मद्य के व्यापार का निषेध रसवाणिज्य के अन्तर्गत किया जा रहा है तो उसके सेवन की स्वीकृति तो कतई सम्भव नहीं है। मांस-सेवन का त्याग प्राणातिपात विरमण में सम्मिलित है, क्योंकि वह दो करण एवं तीन योग से किया जाता है।

21. व्यक्तिगत रूप में सुन्दर जीवन जीने वाला व्यक्ति बनना हो, संघ एवं समाज में सत्पथ का प्रेरक बनना हो, सौहार्द एवं प्रेमपूर्वक जीना हो, देश का सुन्दरतम नागरिक बनना हो एवं आत्मिक उत्थान की ऊँचाई को छूना हो तो उपासकदशाङ्गसूत्र को पढकर अपने जीवन को व्रतमय बनाकर यह सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है। उपासकदशाङ्ग में यद्यपि सभी श्रावक 12 व्रत अङ्गीकार करते हैं,

किन्तु एक से लेकर 12 व्रत तक कोई भी व्रत अंगीकार करके उसका निष्ठापूर्वक पालन करने वाले प्रत्येक मानव का जीवन सुन्दर बन सकता है।

जयतु उपासकदशाङ्गसूत्रम्।

सन्दर्भसूची

1. अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सतसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामि।
   -उपासकदशाङ्गसूत्र, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर, प्रथम संस्करण 2014, पृष्ठ 23
2. अगारधम्मं दुवालसविहं आइक्खइ, तं जहा - पंच अणुव्वयाइं, तिण्णि गुणव्वयाइं, चत्तारि सिक्खावयाइं।
   -उवासगदसाओ, आगमप्रकाशन समिति, ब्यावर, द्वितीय संस्करण 1989, पृष्ठ 22
3. स्थानाङ्गसूत्र, आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर, उद्देशक 1 सूत्र 2
4. स्थानाङ्गसूत्र, 3.4 सूत्र 497
5. स्थानाङ्गसूत्र 4.3 सूत्र 428
6. स्थानाङ्गसूत्र 4.3 सूत्र 429
7. स्थानाङ्गसूत्र 4.4 सूत्र 430
8. द्रष्टव्य अन्तकृद्दशाङ्गसूत्र, उद्देशक 6
9. धर्म बिन्दु, सूत्र 168
10. योगशास्त्र, प्रथम प्रकाश, श्लोक 47-56
11. अष्टपाहुड, चारित्र प्राभृत, गाथा 21
12. मद्यमांसमधुत्यागैः सहाणुव्रतपञ्चकम्।
    अष्टौ मूलगुणानाहु गृहिणां श्रमणोत्तमाः।।
    -रत्नकरण्डकश्रावकाचार, 66
13. देशावकाशिकं वा सामायिकं प्रोषधोपवासो वा।
    वैय्यावृत्त्यं शिक्षाव्रतानि चत्वारि शिष्टानि।।
    -रत्नकरण्डक श्रावकाचार, 91
14. द्रष्टव्य हरिवंशपुराण, सर्ग 58
15. पाँच उदुम्बर फल हैं-वटफल, पीपलफल, प्लक्ष/पाकर, जटी (ऊमर) पर्कटी (अंजीर)।
16. मद्यमांसमधुत्यागैः सहोदुम्बरपंचकैः।
    अष्टावेते गृहस्थानामुक्ता मूलगुणा श्रुते।।
    - यशस्तिलकचम्पू, आश्वास 7
17. अन्य आठ मूल गुणों में चारित्र प्राभृत की टीका में भी इन्हें सम्मिलित किया गया है। (चारित्र प्राभृत-श्रुत सागरीया टीका - मांस त्याग, मधु त्याग, रात्रि-भोजन-त्याग, पञ्च परमेष्ठि की नुति, जीवदया, पानी छानना)
18. अप्रादुर्भाव खलु रागादीनामहिंसेति।। - पुरुषार्थसिद्ध्युपाय
19. द्यूतमांससुरावेश्याखेटचौर्यपराङ्गनाः।
    महापापानि सप्तैव व्यसनानि त्यजेद् बुधः।।
    -चारित्र प्राभृत 21 पर श्रुतसागरीया टीका

-पूर्व प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर एवं प्रधान सम्पादक-
जिनवाणी हिन्दी मासिक पत्रिका

मैं अपने से प्रेम करता हूँ

महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.

- समय नहीं मिलने पर हम अपने माता-पिता को मिस करते हैं, मित्रों को मिस करते हैं, लाइफ पार्टनर को मिस करते हैं और खुद से तो अब तक मिले भी नहीं, फिर भी हम खुद को मिस नहीं करते, कैसा घोर आश्चर्य है।
- जिस घर से प्रेम होता है, उसमें कचरा नहीं भरते। जिस गाड़ी से प्रेम होता है, उसे गन्दी जगह (खराब जगह) खड़ा नहीं करते तो फिर जिस ज़िन्दगी से प्रेम करते हैं, उसमें नकारात्मकता (Nagativity) कैसे भर सकते हैं।
- महीने में एक दिन ऐसा होना चाहिए जब आप अपने निकट रहें एवं आनन्द में रहें।
- हम सभी दीपक के जैसे हैं, कभी न कभी तो हम सबको बुझना ही है, पर जब तक जी रहे हैं, तब तक तो पूर्ण प्रकाश के साथ जीएँ।
- राजधानी एक्सप्रेस छोटे-छोटे स्टेशन पर नहीं रुकती और करोड़पति चिल्लर सिक्कों का हिसाब नहीं रखता। उसी प्रकार महान् व्यक्ति छोटी-छोटी बातों में नहीं अटकते।

-संकलनकर्त्ता श्री राजेश कर्णावट,
जोधपुर (राज.)

शोधालेख

जैन दृष्टिकोण में सृष्टि

डॉ. पी. सी. जैन

सृष्टि के सम्बन्ध में जैनों का दृष्टिकोण पूर्णत: तय और स्पष्ट है। उनके अनुसार यह लोक (विश्व या सृष्टि) जीव, पुद्गल आदि छह द्रव्यों से निर्मित है। ये छह द्रव्य न तो कभी किसी से उत्पन्न हुए हैं और न कभी किसी अन्य द्रव्य में विलीन ही होंगे। अनादि अनन्त द्रव्यों से निर्मित यह लोक भी आदि-अन्तरहित, अकर्तृक तथा स्व-सञ्चालित है। इसका स्रष्टा, पालक अथवा संहारक भी कोई नहीं है।[1]

जैनों के विश्व विषयक इस संक्षिप्त वक्तव्य का अध्ययन अब हम मुख्य-मुख्य शास्त्रों के आधार पर करते हैं-

षड्द्रव्य ही सृष्टि का मूल

ब्रह्मवादी पुराणों के अनुसार इस सृष्टि का मूल तत्त्व ब्रह्म है। वही सत् है। यह ब्रह्म ही सृष्टि का स्रष्टा, पालक एवं संहारक है। वही निमित्त और वही उपादान है। उस सद्ब्रह्म से ही अव्यक्त, महत्, अहंकार आदि पदार्थों की सृष्टि हुई है और वही ब्रह्म ईश्वर, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर आदि देवताओं के रूप में इस सृष्टि का सृजन-संहार आदि करता है। इतना ही नहीं वह ब्रह्म, सृष्टि के असंख्य पुरुषों के रूप में भी प्रकट हो रहा है। यह त्रिविध विश्व आधिभौतिक, आध्यात्मिक एवं आधिदैविक 'एकमेवाद्वितीयं सत्' उसी ब्रह्म का प्रकाशन है। सारा चिदचिद् सृष्टि प्रपञ्च उस सत् का ही फैलाव है। वह सत् चैतन्य एवं आनन्दपूर्ण है। उसकी इच्छा मात्र से यह सृष्टि उत्पन्न होती है, स्थिर रहती है, तथा विलय को प्राप्त होती है। यह सृष्टि, स्थिति तथा प्रलय का खेल उसी की इच्छा से, उसी के तत्त्व से और उसी की लीला के लिए होता है। जो कुछ भी जहाँ कहीं भी है वह सब ब्रह्ममय है।

जैन दार्शनिक भी सद्वादी हैं। किन्तु उनका सत् उत्पादव्यय ध्रौव्यात्मक है। सत् प्रत्येक द्रव्य का लक्षण है।[2] द्रव्य में निरन्तर अनेक पर्यायों की उत्पत्ति एवं संहृति होती रहती है तथा इसके बावजूद भी वह द्रव्य अव्यय बना रहता है।[3]

जैनों के अनुसार इस विश्व की संरचना में जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश तथा काल-ये द्रव्य पाये जाते हैं।[4] ये छहों द्रव्य सत् अर्थात् यथार्थ हैं-वास्तविक हैं। इस लोकमें उपर्युक्त छहों द्रव्य यद्यपि एक-दूसरे में अनुप्रविष्ट हैं तथापि तात्त्विक दृष्टि से वे सर्वथा पृथक्-पृथक् हैं। न तो वे कभी किसी एक तत्त्व से उत्पन्न ही हुए हैं और न कभी किसी एक तत्त्व में विलीन ही होंगे। वे अनादिकाल से आपस में मिले हुए होने पर भी, अब तक आपस में नहीं मिल पाये हैं और न कभी भविष्य में ही उनके अन्योन्य संप्लव की आशा की जा सकती है।[5] वे अनादि, अनन्त, अकृत्रिम एवं शाश्वत हैं। उनसे निर्मित यह लोक भी अनादि, अनन्त, अकर्तृक एवं शाश्वत है।[6]

जैनों के अनुसार आकाश द्रव्य अनन्त प्रदेश विस्तार वाला है।[7] वह एक परम विस्तृत गतिरहित, अचेतन द्रव्य है। जिसमें सभी प्रकार के रूप, रस, गन्ध, शब्द तथा स्पर्श का सर्वथा अभाव है। इस परम विस्तृत व्योम के बहुमध्य में एक छोटे से क्षेत्र में, यह नाना प्रकार के जीव तथा जड़ पदार्थों से भरा हुआ अनादि तथा अन्तरहित लोक है।[8] इस लोक के जितने विस्तृत, गति तथा स्थिति में सहायक धर्म एवं अधर्म नामक एक-एक द्रव्य इसमें समान रूप से स्थित हैं। काल नामक द्रव्य भी उसके प्रत्येक प्रदेश में स्थित है। पौद्गलिक क्रियाओं तथा जीवात्माओं के संसर्ग के कारण पुद्गल तथा स्व-कर्म के कारण जीवगण इस लोकाकाश में सर्वत्र भ्रमण करते हैं।[9] उनके इस स्वभाव के अतिरिक्त अन्य कोई शक्ति उनका परिचालन नहीं करती।

स्वत: सृष्टि का सञ्चालन

ब्रह्मवादी पुराणों के अनुसार इस सृष्टि का सञ्चालन सदात्मक ब्रह्म अथवा ईश्वर करते हैं। अतीतकाल में कभी एक समय ऐसा था जबकि ईश्वर या ब्रह्म एकाकी थे। उनके मन में सृष्टि की कामना हुई। उससे महदादिक्रम से पाँच भौतिक जगत् उत्पन्न हुआ। तब ईश्वर ने स्वांश से इस संसार के समस्त प्राणियों की रचना की। उसने जिस रूप से इस विश्व को रचा वह ब्रह्मा के नाम से लोक प्रसिद्ध है। ब्रह्म के पश्चात् वह ब्रह्मा विष्णु का रूप धारण करके जगत् का पालन करता है। प्रलयकाल में वही ब्रह्म शंकर का रूप धारण करके इस विश्व का संहार कर डालता है। फिर कुछ समय विश्राम करके पहले के समान नयी सृष्टि का सृजन करके, परिपालन एवं संहार भी वही करता है। इस प्रकार उस एकमेवाद्वितीय सद्ब्रह्म के द्वारा ही सृष्टि का सृजन, पालन, तथा संहार रूप सञ्चालन ब्रह्मवादी पुराणों में प्रतिपादित किया गया है।

जैन दार्शनिकों को विश्व के एकमेव अद्वितीय मूल तत्त्व-ब्रह्म के द्वारा विश्व की सृष्टि, स्थिति एवं संहार का सिद्धान्त अमान्य है। उनके अनुसार न तो कोई ब्रह्मा इस सृष्टि का सृजन करता है और न कोई विष्णु या शंकर उसका परिपालन अथवा संहार ही करता है। इसके विपरीत इस विश्व को उन्होंने आदि-अन्त रहित, सृष्टि-प्रलय रहित शाश्वत माना है।[10] इसके सञ्चालन के लिए वे किसी दिव्य शक्ति अथवा ईश्वर की सत्ता भी स्वीकार नहीं करते हैं। उनके अनुसार यह विश्व पूर्वोक्त छह द्रव्यों के स्वभाव से ही सञ्चालित है। यथा-परम विस्तृत आकाश द्रव्य सब द्रव्यों को स्थान देता है जबकि धर्म और अधर्म द्रव्य गतिमान् हुए जीव एवं पुद्गलों की गति एवं स्थिति में सहायक होते हैं। काल द्रव्य स्वयं प्रतिक्षण बदलता हुआ अन्य द्रव्यों को नये-नये रूप में धारण करने में सहयोग देता है। जबकि चेतनारहित पुद्गल द्रव्य चेतनायुक्त, जीवों को स्वकर्मानुसार देहादि धारण करने में सहयोगी होता है और चेतन जीव भी परस्पर एक-दूसरे की नाना प्रकार से सहायता करते हैं।[11]

इस प्रकार षड्द्रव्यों से निर्मित अकृत्रिम-अनीश्वर विश्व की कल्पना जैनदर्शन में प्राप्त होती है।

सन्दर्भ सूची

1. (I) लोको ह्यकृत्रिमो ज्ञेयो जीवाद्यर्थावगाहकः।
   नित्यः स्वभाव-निवृत्तः सोऽनन्ताकाशमध्यगः।।
   – महापुराण 4/15
   (II) यथास्वं गुणपर्यायैरतो नान्योऽन्यसंप्लवः।।
   – वही 3/4
   (III) सव्वायासमणंतं तस्य य बहु-मज्झ-संठिओ लोओ।
   सो केण वि णेव कओ ण य धरियो हरि-हरादीहिं।।
   – कार्तिकेया. 115
2. सद् द्रव्यलक्षणम्।। –सर्वार्थसिद्धि 5/29
3. (I) उत्पादव्यय-ध्रौव्य –युक्तं सत्।। – वही , 5/30
   (II) गुणपर्ययवद् द्रव्यम्।। –वही, 5/38
4. तिलोयपण्णति 1/134, 135
5. (II) अण्णोण्णपवेसेण य दव्वाणं अच्छणं हवे लोओ।
   यथास्वं गुणपर्यायैरतो नान्योऽन्संप्लव।।
   –कार्तिकेयानुप्रेक्षा, 116
   (II) महापुराण. 3/4
6. (I) लोगो अकिटिटमो खलु अणाइणिहणो सहाव णिव्वित्तो।।
   जीवा जीवेहि फुडो सव्वागासवयो णिच्चो।
   –त्रिलोकसार, 4
   (II) लोकतत्त्वनिर्णय 3/34-36
7. आकाशस्यानन्ताः –सर्वार्थसिद्धि 5/9
8. (I) लोकाकाशेऽवगाहः। –वही, 5/12
   (II) महापुराण 4/ 15, पूर्वोद्धृत।
9. सर्वार्थ-सिद्धि 5/1- 22
10. (I) सर्वाकाशमनन्तं तस्य च बहुमध्य-संस्थितःलोकः।
    स केनापि नैव कृतः न च धृतःहरिहरादिभिः।।
    –संस्कृत छाया कार्तिकेयानुप्रेक्षा, 115
    (II) असृज्योऽयमसंहार्यः स्वभावः नियतस्थितः।
    –महापुराण 4 /40
11. सर्वार्थ. 5/1-22।

-निदेशक-उच्चस्तरीय अध्ययन अनुसन्धान संस्थान
-बी-417, प्रधान मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राजस्थान)

जीवन-व्यवहार

व्यावहारिक जीवन के नीति वाक्य (10)

श्री पी. शिखरमल सुराणा

37. अतीत पर बिल्कुल भी ध्यान मत दो ... क्योंकि वह तो बीत चुका है। इस संसार की सारी सम्पदा मूल्य रूप में चुकाने के बाद भी अब अतीत को पुनः वापस नहीं लाया जा सकता। अतीत के सबक से सीखा अवश्य जा सकता है...जिससे अतीत में की गई गलतियों की पुनरावृत्ति न हो सके। भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं के विषय में भी हमें नहीं सोचना है.. क्योंकि वह अभी आया ही नहीं है....फिर उसका हमारे जीवन में आना भी सुनिश्चित नहीं है। क्या पता अगला पल हमारे इस जीवन काल में आने वाला भी है कि नहीं ..और वह अपने साथ अनिश्चितता से परिपूर्ण कौन-सा घटना-चक्र लेकर आने वाला है...हमें नहीं पता। अतः हमको अपने मन को सिर्फ वर्तमान क्षण पर केन्द्रित करना है। यह जो अभी का पल है, जिसे हम जी रहे हैं...वही हमारा अपना है। इस एक पल को भरपूर जी लें, और जो कार्य सोच रखे हैं, उन सभी कार्यों को, जितना भी कर सकें, बस अभी इसी पल में कर लें।

38. अपनी खराब आदतों पर जीत हासिल करने के समान जीवन में कोई और आनन्द नहीं होता है। खराब आदतें वही होती हैं ...जो हमें निरन्तर सामाजिक, आर्थिक एवं शारीरिक हानि पहुँचाती हैं। यह आदतें किसी भी वस्तु या व्यसन की हो सकती हैं। जब किसी भी चीज की शरीर या दिमाग को आदत पड़ जाये...तो फिर उससे छुटकारा पाना अति ही दुष्कर कार्य होता है। अतः ऐसी स्थिति में यदि कोई अपनी खराब और हानिकारक आदतों से मुक्ति प्राप्त करने का प्रयत्न भी करता है...तो वह निश्चित रूप से प्रशंसनीय है...क्योंकि वह अब अतीत से बेहतर ...एक नए जीवन की ओर क़दम बढ़ा रहा है। हमें उसका उत्साह वर्धन करना चाहिए।

39. जब तक आप न चाहें, तब तक आपको कोई भी ईर्ष्यालु, प्रतिशोधी या लालची नहीं बना सकता है। दूसरों से ईर्ष्या करना, प्रतिशोध की भावना रखना तथा लालच करना, ये ऐसे अवगुण हैं, जो सिर्फ उसको ही प्राप्त होते हैं जो स्वयं ही अपने मस्तिष्क एवं हृदय से अत्यन्त दुर्बल होता है, एवं नकारात्मकता का अधिकतम तथा निरन्तर सञ्चार करता है। ऐसे लोग न कभी किसी दूसरे का भला कर पाते हैं, और न ही होते देख सकते हैं। यदि स्वयं हमारी सोच सकारात्मक है एवं हमारा अन्तरमन शक्तिशाली है, तो किसी भी तरह का नकारात्मक भाव कोई भी बाहर से हम पर थोप नहीं सकता। अतः स्वयं को सशक्त एवं दृढ़ रूप से सकारात्मक रखिये। अपने मन के भीतर किसी भी तरह का कोई भी नकारात्मक भाव मत आने दीजिये। इसी में आपका तथा आपके परिवार का कल्याण है।

40. खुद पीछे रहना और दूसरों को आगे कर नेतृत्व करना बेहतर होता है, खासतौर पर तब, जब आप कुछ अच्छा होने पर जीत का जश्न मना रहे हों। इसके विपरीत आप उस समय आगे आकर नेतृत्व सम्भालिये, जब खतरे की आशंका हो। तब लोग आपके नेतृत्व की प्रशंसा करते हुए उसको स्वीकार करेंगे। कुशल नेतृत्व की विशेषता यही है कि जब वे सब लोग, जो आपके नेतृत्व को स्वीकारते हुए आपके पीछे चल रहे हैं, स्वयं को सुरक्षित महसूस करें और अपने लक्ष्य की प्राप्ति और शत्रु पर विजय के प्रति आश्वस्त हों। उनको आपकी क्षमता, ईमानदारी और कुशल नेतृत्व पर अटूट विश्वास एवं पूर्ण श्रद्धा होनी चाहिए।

◆

चिन्तन

जिनशासन की प्रभावशाली प्रभावना

श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

प्रिय विनयजी, सादर जय जिनेन्द्र ...आपका पत्र मिला...जिसमें मुख्य रूप से आपने लिखा है कि इस बार पर्युषण पर्व में बहुत आनन्द आया...विशेष रूप से धर्म स्थानक में मित्रों के साथ मिलकर सभी धार्मिक पुस्तकों की सार सम्भाल करके व्यवस्थित करने की ...जिम्मेदारी निभाने का सुअवसर तो प्राप्त हुआ ही ...साथ ही अनेक पुस्तकों का जीवन में पहली बार स्वाध्याय करने का लाभ भी मिला। पुस्तकों को सहेजते एवं स्वाध्याय करते समय अचानक ही सितम्बर 2020 की जिनवाणी पत्रिका में ...प्रकाशित लेख **जिनशासन के महान् युवारत्न** पर नज़र ठहर सी गई... लेख पढ़कर जितना जिनशासन के प्रति अहोभाव उत्पन्न हुआ ...उतना ही स्वयं के प्रति ग्लानि भाव भी उत्पन्न हुआ ...वह इसलिए कि 35 वर्ष की मेरी उम्र में से ...अधिकतम समय तो सिर्फ खेलने-पढ़ने, खाने-पीने और कमाने-खर्चने में ही बीत गया...लेकिन जैनधर्म के लिए कुछ ख़ास कर नहीं पाया। परन्तु अब मुझे सिर्फ नाम का जैन नहीं ...बल्कि काम का जैन बनना है ...जैनत्व युक्त जीवन जीना है ...इसलिए अब मैंने जिनशासन के लिए अपने जीवन को समर्पित करने का निर्णय किया है ...और इस पावन यात्रा में साथ निभाने के लिए मेरे छह मित्र सहर्ष ...तैयार भी हैं ...और प्रतिबद्ध भी। संघ समाज की वर्तमान परिस्थितियों में हमारी शुरुआत कैसी हो? अभियान की रूपरेखा कैसी हो ...कैसे हम सभी को साथ लेकर आगे बढ़ें? क्या हमारे द्वारा यह कार्य हो पायेगा? ...कैसे अधिक से अधिक इस महान् जिनशासन की अधिकतम धर्मप्रभावना कर सकें ...इत्यादि सभी बिन्दुओं पर आप कृपया हमें मोटिवेशन तो प्रदान करें ही ...साथ ही दिशा निर्देश भी बताएँ ...।

प्रिय विनयजी, सर्वप्रथम आपके एवं आपके मित्रों के ...जिनशासन की प्रभावना हेतु इस पावन संकल्प की ...हृदय की गहराइयों से अनुमोदना! शुभ कार्य के पूर्ण होने से तो महान् निर्जरा होती ही है ...लेकिन शुभ कार्य को करने के लिए शुभ विचार का आना भी महान् निर्जरा का कारण है ...इसलिए आप अपने मित्रों को साथ लेकर पूर्ण आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ें। इस अभियान हेतु ...गुरुकृपा से जो मेरा चिन्तन-मनन हुआ ....उसमें से कुछ मुख्य अंश इस पत्र में संलग्न है ...इन निम्नलिखित विचारों में ...जो भी आपको उचित प्रतीत हो उनका क्रियान्वयन अवश्य करावें-

यह हम सभी के लिए असीम गौरव एवं परम सौभाग्य का विषय है कि हमें तीर्थंकर प्ररूपित जैनधर्म में जन्म लेने का सुअवसर मिला ...लेकिन उस गौरव को जीवन में कायम रखना महत्त्वपूर्ण चुनौती भी है ...और महती धर्म प्रभावना भी। सिर्फ जैनधर्म में जन्म लेने मात्र से हम सच्चे जैन नहीं कहला सकते ....बल्कि जैन जीवनशैली युक्त जीवन जीने से हम सच्चे जैन बन सकते हैं। तात्पर्य यह है कि सिर्फ नाम के आगे जैन लिखना मात्र ही पर्याप्त नहीं है ...बल्कि जीवन के अन्दर जैनत्व होना अत्यन्त आवश्यक है।

सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन, सम्यक् चारित्र और सम्यक् तप इन चार प्रवेश द्वारों से जिनशासन के गौरवशाली महल तक पहुँचा जा सकता है। इस अलौकिक महल की नींव है अहिंसा ...जो सत्य की शाश्वत चारदीवारी में सुरक्षित है। अनेकान्तवाद के आँगन से सुसज्जित ... इस महल की छत है मर्यादा। विनय रूपी सोपान और विवेक रूपी मुख्य प्रवेशद्वार है।

चारों तीर्थ यानी ...साधु, साध्वी, श्रावक-श्राविका इन चार मजबूत स्तम्भों पर यह महल जयवन्त है। महल के सबसे ऊपर त्याग का श्रेष्ठतम कलश सुप्रतिष्ठित है ...जिस पर क्षमा रूपी ध्वजा हर जीव से मैत्री का पवित्र सन्देश दे रही है। यानी इस अलौकिक महल को सुरक्षित,अखण्डित एवं गौरवान्वित रखने हेतु ... हर जैन का यह परम कर्त्तव्य है कि वह उपर्युक्त सभी सिद्धान्तों से तथा सद्गुणों से युक्त जीवन जीयें।

कड़वा है ...मगर सत्य है कि ...आज कई जैन कहलाने वाले लोगों में जैनत्व का नामोनिशान भी नहीं है। उनका खान-पान, वेशभूषा, व्यवहार इत्यादि ...बदल चुके हैं या यूँ कहें कि भ्रष्ट हो चुके हैं। निंदा नहीं ...बल्कि समीक्षा की दृष्टि से देखें तो नज़र आता है कि ...अनेक जैनों ने समय समय पर सन्त समागम, जैन साहित्य, जैन संस्कारों से दूरी बनाई और उसका परिणाम उनके स्वयं के साथ-साथ ....परिवार और संघ समाज के लिए भी अत्यन्त घातक सिद्ध हुआ। पर मक्खन अभी डूबा नहीं है ...कई महापुरुषों ने अपने सम्यक् पुरुषार्थ, अटल परिश्रम एवं मजबूत संकल्प से जैनधर्म के गौरव को जीवन्त एवं जयवन्त रखा है। आज भी इस धरती पर ऐसे साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका हैं ...जो जिनशासन को अपने प्राणों से भी ज्यादा मूल्यवान समझते हैं ...और धर्म की सुरक्षा एवं गौरव को अखण्डित रखने के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने को तत्पर रहते हैं।

जैनधर्म की महती प्रभावना के लिए आवश्यकता है ...ऐसे ही सर्वतोभावेन समर्पित दृढ़धर्मी जैनों की ...जिनकी साँसों में जैनधर्म बसता है तथा जिनकी कथनी और करनी एकस्वरूप है। सबसे पहले हमें वर्तमान परिस्थितियों में जैन समाज की ताकत और कमजोरियों का संक्षिप्त ...किन्तु सूक्ष्म अवलोकन एवं निष्पक्ष समीक्षा कर ...विस्तृत योजना बनानी होगी ....

हमारी ताकत : हमारे घरों में हमें बचपन से नवकार महामन्त्र, सामायिक-स्वाध्याय, सामूहिक प्रार्थना, सन्त-सती मण्डल के दर्शन-वन्दन एवं उनके प्रवचन-श्रवण, त्याग-तपस्या इत्यादि के सुसंस्कार प्राप्त हुए एवं होते हैं। व्यसनमुक्त जीवन, शाकाहार और प्रामाणिकता हर जैन की पहचान है। अहिंसा और अध्यात्म को प्रमुखता देने वाला हमारा जैन समाज शान्ति प्रिय व्यवहार एवं नैतिकतापूर्ण व्यापार के आधार पर ...आज भी पूरे विश्व में अपनी अद्वितीय छवि बनाये हुए है। उच्च शिक्षा के साथ-साथ दान देने तथा मानवता हेतु अनेक समाज और राष्ट्र के हित के महान् सेवा कार्यों में जैन समाज हमेशा से आगे रहा। सरकार को ईमानदारी पूर्वक कर यानी टैक्स का वृहद् भुगतान करने में भी जैन समाज के व्यापारी अव्वल हैं।

हमारी कमजोरी : 'सादा जीवन : उच्च विचार' यह हमारे पुरखों का ...बुजुर्गों का ...जीवन सूत्र था ...लेकिन समय के साथ बदलाव हुआ और समाज में पैसे का बोलबाला बढ़ा ....फलस्वरूप आडम्बर और प्रदर्शन बढ़ा। अहंकार के कारण... नाम की चाहना से ... स्वार्थ का प्रवेश हुआ एवं मुख्यतः इसी वजह से दिन-ब-दिन पैसे का महत्त्व बढ़ गया ...और बढ़ता ही जा रहा है। कटु सत्य है कि धार्मिक क्षेत्र भी ...पैसे के प्रभाव से अछूता नहीं रहा ...और अनेक स्थानों में धनवान लोग ...गुणों से हीन होते हुए भी ...अपने धन के प्रभाव से आध्यात्मिक मञ्च तक पहुँच गए। व्यक्ति के सम्मान का मापदण्ड गुण न होकर धन हो गया ....गुणवान लोगों से ज्यादा धनवान की क़दर ने ....जैन समाज में दरार तथा कभी-कभी ...गहरी खाई का काम भी किया। ज्ञान सीखने से अधिक ...धन कमाने पर जोर बढ़ गया ...पुण्य कमाने की कला से भी ज्यादा ... पैसा कमाने के तरीकों की खोज की जा रही है। ज्यों-ज्यों पैसा बढ़ा , आडम्बर भी बढ़ा और यह अत्यन्त वेदना का विषय है कि हर वर्ष ...जैन समाज में करोड़ों रुपये...दिखावे और प्रदर्शन के कारण बरबाद हो रहे हैं।

हमें अपनी ताकत को बरक़रार रखना होगा और

साथ ही हमारी कमजोरियों को ताकत में बदलना होगा। जो पैसा हमारी कमजोरी बनता जा रहा है, उसे ताकत में परिवर्तित करना होगा ...सदुपयोग करके। सदुपयोग ...साधर्मिक परिवारों पर, सामाजिक और धार्मिक क्षेत्रों के साथ साथ राष्ट्र हित से जुड़े कार्यक्रमों पर भी होना चाहिए। संसाधनों के साथ साथ हमारी प्रतिभा, समय और ऊर्जा का भी यथा शक्ति सदुपयोग ..उपर्युक्त क्षेत्रों में तथा जिनशासन के प्रभावशाली प्रचार-प्रसार में होना चाहिए।

वर्गीकरण : रोटी, कपड़ा और मकान जैसी मूलभूत आवश्यकताओं के साथ-साथ ...हम में से हर किसी का जीवन कम या अधिक रूप से शिक्षा, चिकित्सा, आजीविका एवं अध्यात्म इन चारों बुनियादी क्षेत्रों से जुड़ा हुआ है। हमें जिनशासन के महत्त्व एवं गौरव को कायम रखने हेतु ...सर्वप्रथम इन बुनियादी क्षेत्रों में भगीरथी कार्य करने होंगे। इस हेतु हमें जैनों की प्रतिभा एवं ऊर्जा का पर्याप्त आकलन करना होगा और उसके पश्चात् ...सामर्थ्यानुसार उसका प्रयोग जैनधर्म के प्रचार-प्रसार और सम्यक् प्रभावना में करना होगा।

प्रतिभा एवं ऊर्जा की प्रगति के लिए निम्नलिखित छह वर्गों के माध्यम से समझना सरल होगा-

1. बच्चों की प्रतिभा-घरों में जैनत्व से परिपूर्ण संस्कार और मधुर व्यवहार से, संस्कार केन्द्रों के माध्यम से, धार्मिक पाठशालाओं के माध्यम से ...बच्चों की प्रतिभा का विकास करना होगा। प्रतिभा खोज (Talent Hunt) के माध्यम से ...यानी जिनशासन से सम्बन्धित नाटक, स्तवन, भाषण, निबन्ध, प्रश्नमञ्च इत्यादि प्रतियोगिताओं के आयोजन से.... सकारात्मक प्रतिस्पर्धा के आधार पर ....बच्चों की प्रतिभा और ऊर्जा को विकसित भी करना है और सदुपयोग भी। उपर्युक्त कार्यक्रमों से बच्चे ...जैनधर्म की जड़ों से, जिनशासन के संस्कारों और सिद्धान्तों से जुड़े रहेंगे एवं स्वयं का जीवन भी उज्ज्वल बना पायेंगे। आज के यही सुसंस्कारित बच्चे...कल युवा होने के बाद जिनशासन के प्रचार-प्रसार एवं प्रभावना में अतिविशेष भूमिका का निर्वहन करेंगे।

2. युवाओं की प्रतिभा-युवावर्ग के लिए नैतिकता युक्त व्यापार की कला , जीवन-निर्माण शिविर, जैनधर्म का आधुनिक तकनीक से भी प्रचार, TRAIN THE TRAINER (TTT), व्यापारिक प्लेटफार्म, जैन विधि युक्त सामूहिक-विवाह, मोटिवेशन कार्यक्रम, मञ्च सञ्चालन, नेतृत्वकला का विकास, वक्तृत्व कला का विकास, रक्तदान शिविर इत्यादि के समयानुकूल आयोजन हो। जैन जज, जैन IAS अफसर , जैन सी.ए., जैन डॉक्टर, जैन एडवोकेट, जैन प्रोफेसर इत्यादि के संयोजन में PROFESSIONL FORUM जैसे कार्यक्रमों की रुपरेखा तैयार कर क्रियान्वयन करना होगा। गृहिणी युवतियों को...घर में विशेष रूप से रसोई में यतना से कार्य कैसे करें, सुपात्रदान विधि, जैन व्यञ्जन-जैन पकवान यानी जमींकन्द रहित जैन आहारविधि ...इत्यादि कार्यक्रमों से जोड़ा जा सकता है। कुल मिलाकर युवा वर्ग को करुणा से जुड़े सभी कार्यक्रम, सन्त-सती मण्डल की विहार सेवा, सामायिक-स्वाध्याय, दान, जैन साहित्य की उपलब्धता जैसे अनेक आयामों से उनकी आध्यात्मिक रुचि को बढ़ाते हुए ...जैनधर्म से जोड़ा जा सकता है। जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु युवा वर्ग सबसे विशेष कड़ी है।

3.प्रौढ़ अथवा बुजुर्गवर्ग की प्रतिभा-यह वर्ग अपने अनुभव के आधार पर अत्यन्त उपयोगी है, किन्तु ...व्यापार इत्यादि से इतने अधिक जुड़े होने से तथा अन्य कई कारणों से अध्यात्म व संघसेवा में पर्याप्त समय नहीं दे पाते। कुछ वर्ष पहले मिलना हुआ अहमदाबाद निवासी श्रावकरत्न श्री भरतभाई शाह से ...जिनकी उम्र लगभग 75 वर्ष है। उन्होंने बताया कि लगभग 15 वर्ष पूर्व एक विस्तृत सोच एवं अटूट संकल्प के साथ अपने 4-5 मित्रों के साथ आदर्श अहमदाबाद नामक संस्था की स्थापना की। बड़ी सोच एवं कड़े

पुरुषार्थ की बदौलत ...आज यह संस्था समाजसेवा के लिए लगभग एक हजार कार्यकर्ताओं को तैयार कर चुकी है ...जो अहमदाबाद शहर के लगभग दस लाख लोगों को ...प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से विभिन्न सेवाओं से लाभान्वित करते हैं। सभी कार्यकर्त्ता अपनी अपनी रुचि अनुसार ....तन मन धन अथवा समयदान के द्वारा सहयोग प्रदान करते हैं। यह संस्था योग, सिलाई, शिक्षा, गृह उद्योग, चिकित्सा जैसी अनेक सेवाएँ निःशुल्क प्रदान करती है ....जिससे अनेक जैन भाई बहनों को रोजगार भी मिला है। संस्था द्वारा यह अनूठा प्रयोग...अत्यन्त सफल हुआ और परिणामस्वरूप अहमदाबाद के लाखों की संख्या में जैन-जैनेतर लोगों को जैन संस्था से गहराई से जोड़ने में कामयाब भी हुआ। लाखों लोग जैनियों के सेवागुण से लाभान्वित और प्रभावित हो रहे हैं ...परिणामस्वरूप अहमदाबाद की जनता को सम्पूर्ण जैन समाज के प्रति अत्यन्त अहोभाव की भावना पल्लवित हुई है ...इस आदर्श अहमदाबाद संस्था के कारण। संस्था का लक्ष्य आगे के पाँच वर्षों में अहमदाबाद के लगभग चालीस लाख लोगों को इस संस्थान से जोड़े रखने का है। उपर्युक्त उदाहरण से हम समझ सकते हैं कि ... हमारे समाज के बुजुर्ग श्रावक श्राविकाओं के विराट् अनुभव का सदुपयोग संघ समाज एवं राष्ट्र के लिए कितना अधिक सार्थक सिद्ध हो सकता है।

4. समयदानी के समय का सदुपयोग–समाज में एक वर्ग ऐसा भी है जो परिवार के साथ समय बिताते हुए और व्यापार करते हुए भी बहुत सारा अतिरिक्त समय निकाल लेता है...लेकिन सही सामाजिक अथवा धार्मिक प्लेटफार्म नहीं मिलने से ...उनका वह अमूल्य समय गपशप में, ताश खेलने में, टीवी में सीरियल व समाचार देखने में, अखबार पढ़ने में, मोबाइल में What's app अथवा Facebook इत्यादि में व्यर्थ हो जाता है। हमें जैन समाज में क्षेत्रानुसार ऐसे लोगों की तलाश कर ...सही प्लेटफार्म देकर ...उन्हें जिनशासन से जोड़ना होगा ... समयदानी बनाकर उनके समय का लाभ लेना होगा। सन्त-सतीवृन्द की अध्यापन व्यवस्था के साथ-साथ, जैन समाज द्वारा संयोजित धर्मस्थानों की, संस्कार केन्द्रों की, पुस्तकालयों की, भोजनशालाओं की, धर्मशालाओं की, गौशालाओं की ....सार-सम्भाल एवं प्रबन्धन के साथ-साथ, अहिंसात्मक चिकित्सा पद्धति, साधर्मिक राशन वितरण इत्यादि योजनाओं में पूर्णकालीन अथवा आंशिक व्यवस्थाओं में उनके अनुभव, सामर्थ्य एवं समय का यथासम्भव सदुपयोग किया जा सकता है।

5. जीवनदानी का सदुपयोग–किसी भी क्षेत्र में पूर्ण सफलता के लिए किसी न किसी को अपना जीवन समर्पित करना पड़ता है। इतिहास गवाह है कि स्वामी विवेकानन्द जैसे ऊर्जावान युवाओं के जीवन समर्पण से भारतीय संस्कृति का गौरव कायम रहा। जैनधर्म तथा जैन संस्कृति के गौरव को कायम एवं अक्षुण्ण रखने के लिए अनेक सन्त महापुरुषों ने अनेक युवा रत्नों ने अपना जीवन समर्पित किया और आज भी कर रहें हैं। हमें ऐसे ही जीवनदानी मोतियों की तलाश कर ...उन्हें एकता रूपी धागे में पिरो कर ...जिनशासन की अमूल्य माला को तैयार करना होगा। यहाँ यह कहना भी न्यायसङ्गत होगा कि ...समर्पित एवं गुणवान जीवनदानी युवाओं की सेवाएँ इतनी अतुलनीय होती हैं कि...उनके जिनशासन में योगदान को...शब्दों में व्यक्त करना असम्भव-सा प्रतीत होता है।

6. प्रचारक वर्ग का निर्माण–उपर्युक्त पाँचों वर्गों के साथ साथ अति महत्वपूर्ण रूप से प्रचारक वर्ग को भी तैयार करना होगा। प्रचारक 6 वर्ष के बच्चें भी हो सकते हैं ...तो 60 साल के बुजुर्ग भी ...बस प्रतिभा के साथ जूनून होना चाहिए ...देश विदेश की धरती पर ...जिनशासन का प्रचार-प्रसार करके धर्म प्रभावना द्वारा कर्म निर्जरा का। उनकी यात्राओं की, रहने की, कार्यक्रमों की इत्यादि ...सभी व्यवस्थाओं की महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी श्रीसंघ बखूबी सम्भाले...तो

आश्चर्यजनक सकारात्मक परिणाम हासिल होंगे।

हमें जैनसमाज में उपर्युक्त सभी वर्गों की क्षेत्रानुसार तलाश करनी होगी ....डेटा बेस तैयार कर ...उन सभी को उनकी रुचि अनुसार अलग-अलग वर्ग में चयनित कर, गुरु भगवन्तों द्वारा ... विशेषज्ञों द्वारा ...उचित्त प्रशिक्षण देना होगा। कार्य भले ही मुश्किल लग सकता है .... किन्तु असम्भव कदापि नहीं है।

जैनधर्म भले ही अनेक सम्प्रदायों में विभाजित है ....लेकिन भगवान महावीर के प्रति समर्पण की बात हो तो कोई भिन्नता नज़र नहीं आती। दीपावली पर्व प्रभु महावीर का निर्वाण दिवस है ...यानी लक्ष्य प्राप्ति का दिवस ...इस पावन दिन पर ....इस महायोजना का शुभारम्भ ... क्रियान्वयन करके...हर जैनी को इस पुनीत अभियान से जोड़ा जा सकता है। जैनधर्म का प्रचार-प्रसार सिर्फ नारों से नहीं होगा... बल्कि ठोस क़दम उठाने होंगे। कुछ सक्रिय जैन मिलकर अनेक निष्क्रिय जैनों को सक्रिय कर सकते हैं ....एक जलता हुआ दीप भी अनेकों बुझे हुए दीपों को जला कर ....अन्धकार को पराजित कर सकता है। लक्ष्य-प्राप्ति का जुनून, मजबूत इच्छा शक्ति, दृढ़ संकल्प और सम्यक् पुरुषार्थ से कुछ भी असम्भव नहीं ....।

महावीर के वीरों को .... जिनवाणी से जगायेंगे।
सत्य अहिंसा अनेकान्त को .....विश्व में फैलायेंगे।

'तीर्थ' बनेंगे जिनशासन में ..भले धर्म पे मिट जायेंगे, पर जैनधर्म के गौरव को .... जन-जन तक पहुँचायेंगे।

प्रिय विनयजी ...अन्त में इतना ही कहना है कि ...जिसने स्वयं को जिनशासन के प्रति पूर्ण समर्पित किया है उसे जिनशासन ने पूर्ण अहोभाव से सम्भाला है ...लक्ष्य तक पहुँचाया है। जिनशासन बाँहें फैलाकर आप जैसे सभी प्रियधर्मी साथियों के अभिनन्दन के लिए तैयार है ...

आप सभी को जिनशासन के इस पावन अभियान की अपार सफलता हेतु अग्रिम शुभकामनाएँ एवं मंगल भावनाएँ ....इति शुभम् ...

आपका कल्याण मित्र
'तीर्थ'

-'जिनशासन', 14, अग्रहारम् स्ट्रीट, चिन्तादरीपेट,
चेन्नई-600002 (तमिलनाडु)

59वाँ दीक्षा-दिवस

गुरु-वन्दन

श्री नौरतमल चपलोत

नहीं बुद्धि नहीं कला न शब्दों का ज्ञान।
कृपा मिली गुरुदेव की, सफल सभी अरमान।।
श्रद्धा, भक्ति, समर्पण त्रिवेणी संगम है गुरुवर।
लगन, आत्मबल, शौर्य के संगम हैं गुरुवर।।
सागरवर गम्भीर, सुमेरु सम विशाल हृदय।
शूरवीर क्रियावान्, दृढ़ चरित्र निष्ठ, गुरुवर।।
पारस अरु सन्त में, बहुत अन्तरो जान।
वह लोहा कंचन करे, गुरु आप समान।।
होते हैं चलने वालों के हौंसले निराले।
मेरु को भी लाँघ जाते, लम्बी छलाँग वाले।।
गुरु 'हीरा' का जीवन ऐसा सबके मन को भाता।
जो आता इन चरणों में परम शान्ति वह पाता।।
मन गुरुदेव का, साक्षात्, प्रभु मन्दिर है।
यहाँ मैला न लगा देना।
'हीरा' तन अनमोल मिला, व्यर्थ न गँवा देना।।
हर पल गाओ गीत गुरु का, गुरु ही एक सहारा है।
इस दुनिया में गुरु से बढ़कर, बोलो कौन सहारा है।।
दुनिया में सन्त अनेकों हैं,
पर 'हीरा' गुरु का क्या कहना।
इनकी महिमा का क्या कहना,
इनके अतिशय का क्या कहना।

-सदर बाजार, पोस्ट-गुलाबपुरा, जिला-भीलवाड़ा
(राजस्थान)

A Chance To Peace

Sh. Jitendra Chaurdia 'Prekshak'

All the living-beings of this universe desire to attain peace and happiness. They have been trying to attain it from time immemorial. But due to adoption of wrong ways for achieving peace, they are not destined to feel it (peace) even in dream. On the contrary, they invite grief and agitation. How distorted has become the wit of present human-being! on observing his activities we can easily guess it. Today, a man wants to establish peace in his home, locality, village, city, state, country and even in the world by taking the support of dispute, conflict, fight, violence and war. The acts which are known to be destroyers of peace, can protect and establish it? But it has become the hymn for peace of modern human-beings that "if you want peace, be prepared for war." But this hymn for founding peace is as worthless as to wash blood-stained clothes using blood, to pacify fire using fuel, to treat a disease having prohibited unwholesome diet, to make an effort of being immortal eating-up poison. Two persons, things, facts and purports of different (opposite) nature can never be coordinated. Then it is our childishness to take support of hostiles of peace like war, conflict, fight etc. for the origination of peace. If we do it, then it is our ignorance and illusion.

In this present age, it is clearly perceptible that to obtain peace a man wants to persuade other persons, who keep in touch with him, according to his wish. He wants to bring an end to the ideological difference of opinions which he has with others. In order to immerse in peace, he takes support of war of words, abusive language, scuffle and violent inclinations with his family, co- workers, neighbours etc. In doing the said unwholesome trends, there lies a sole purpose of that man that "somehow persuading others to tend according to my wish, I should make them agreeable to me. Only then I would get peace." The only objective of that man is to get peace, but the ways and efforts of getting peace used by him bring results of breaching of peace. Then how will he get peace? This proverb has global acceptance-

"As you sow, so shall you reap."

Hence the seeds of quarrel, dispute, war, violence and hatred produce and enhance the same. And when there would grow the trees of the same (quarrel, dispute, war, violence and hatred) then how could one get the fruits of peace from them? Even knowing this truth very well if we are pretending to be ignorant, then act is like a silliness of attacking our own feet with an axe.

We have been panting for attaining peace from our birth to death. We believe peace to be in fulfilment of our desires and ambitions, in parting from evil (Anishta) and in uniting with wished (Iishta), in getting of other persons and materials. But there is no peace in them. On the contrary, there are only unrest and agitation in the disguise of peace.

Today, in this world a country invades another country having this desire that I would set in flow the wave of peace in my country solving my mutual problems with the other country through war. But this long-cherished desire of that country never gets fulfilment. Because an article or thing can be obtained from right there, where its real source is. In other words, peace begets peace. To hope to produce peace with the help of deeds that are hostiles of peace is a false-hope. From eternity, the swords of warriors have been endeavouring to hoist the banner of peace producing clinking sound, shedding blood and playing on the kettle-drum of victory. Even then till today, has anybody got peace? On the contrary, it seems that it (peace) has lost somewhere in the uproar of war etc. It is easy to pacify one by terrifying him with the fear of death by putting a gleaming sharp-edged weapon over (behind) his neck. It is also easier to pacify one by making him wander in the golden dreamland of temptation by placing shining gold and silver coins before him. The peace, prompted by fear and temptation, is not of life; but is of death. That peace is not eternal, but temporary. Because living and eternal peace is born within ourselves. It originates nowhere outside. Fear and temptation do not create eternal peace. It is rather created by fearlessness and contentment. It cannot be obtained by defeating our outward enemies but by defeating our inner enemies like anger, pride, deceit, greed, attachment, malice, violence and hatred etc.

Just think! in order to get a thing (peace) we have been endeavouring from our birth to death. Why do we not get it after all? Its sole reason is that as an acacia tree cannot bear the fruits of mango, so as the peace cannot be acquired through the deeds which destroy it (peace). So far, we have adopted the wrong ways to get peace, however this desire of ours cannot be fulfilled. In order to establish peace, when we have rendered innumerable chance to peace-destroyers and its encouraging factors. But they could not establish it (peace). So is it not our duty that there should also be given a chance to peace? In spite of this if we do not get peace, then it would be fair to complain. But if we entrust peace for establishment of peace, then it would never give us any chance of complaining itself.

Thus it is obvious that the responsibility of doing a task/work to be entrusted to that very person/thing who/which has the capability of doing the same. And not to the unfit and incapable one. Therefore, do we not realize the need to change our vision and thoughts? Today, we need to eradicate our rotten-thoughts from our mind that are having foul smell of bad-traits.

Today, in order to get peace, by laying the trap of irrational-deeds (war, disputes, quarrel, fighting, violence etc.), we are ensnaring ourselves in the same. Those very irrational deeds of ours are standing, in the form of a wall being a hurdle, between us and our peace. It is our misdeeds that are preventing us from realization of peace and to have a face to face sight of peace. If we want that every step taken by us in the direction of peace yield hundred percent result, then having awakened our sense of wit, we must adopt in our conduct the virtues like straightness, feeling of friendship, selfless-love, forbearance etc. In tight corners, we have to be a sole devotee of peace and to do a constant perseverance for peace. Yes, there is another important thing that it is most important and necessary that in performing the said activities, balance and equality among our thoughts, words and actions must be conducted by us. It means that we must be simple and straight.

If we say that the aforesaid virtues and deeds are original seeds of peace, then there would be no exaggeration in it. Thus on getting these seeds of peace, if we keep sowing them regularly in the field of our conduct. So in future, by getting and tasting the fruits of peace, we will be happy. Therefore, in order to establish peace in our lives, we must render a chance to peace. That's what my auspicious wish..!

- No. C-16/1, Krishna - Kunj, Haled Road,
BHILWARA-311 001 (Raj.)

संथारा-इतिवृत्त

गौरवशाली रत्नसंघीय संथारे : एक महत्त्वपूर्ण विवरण

श्री नौरतनमल मेहता

स्थानकवासी समाज में गौरवशाली रत्नसंघीय सम्प्रदाय में परम्परा के मूल पुरुष पूज्य श्री कुशलचन्द्रजी म.सा. से लेकर पूर्ववर्ती आचार्यों के साथ आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के शासनकाल में सन्त-मुनिराजों एवं महासतीवर्याओं द्वारा पूरी सजगता एवं समत्वभावों में आलोचना, क्षमायाचना और संलेखणा-संथारे के साथ समाधिमरण से संघ गौरवान्वित है। हम संघनायकों की दूरदर्शिता से अन्तिम मनोरथ-सिद्धि में सहयोग के प्रमुख-प्रमुख वृत्तान्त यहाँ उद्धृत कर रहे हैं।

परम्परा के मूलपुरुष एवं पूर्वाचार्यों के संथारे

- ज्ञान-क्रिया के समन्वयक, आत्म-साधक, दृढ़ प्रतिज्ञ, परम्परा के मूलपुरुष **पूज्य श्री कुशलचन्द्रजी म.सा.** को नागौर में विक्रम सम्वत् 1840 में ज्येष्ठ कृष्णा षष्ठी को तीन दिन का संथारा आया।
- शासन प्रभावक, उत्कृष्ट क्रियापात्र, सुतीक्ष्णप्रज्ञ, बाल ब्रह्मचारी **पूज्य आचार्य श्री गुमानचन्द्रजी म.सा.** को विक्रम सम्वत् 1858 कार्तिक कृष्णा अष्टमी को मेड़तासिटी में चार प्रहर के संथारे के साथ समाधिमरण प्राप्त हुआ।
- परम प्रतापी, कीर्ति निस्पृह, क्रियोद्धारक बाल ब्रह्मचारी **पूज्य आचार्य श्री रत्नचन्द्रजी म.सा.** ने जोधपुर में विक्रम सम्वत् 1902 ज्येष्ठ शुक्ला त्रयोदशी को बीस प्रहर के संथारे के साथ नश्वर देह का समत्व भावों में त्याग किया।
- परम गुरुभक्त, विनय मूर्ति, विशिष्ट साधक, बाल ब्रह्मचारी **पूज्य आचार्य श्री हमीरमलजी म.सा.** को नागौर में विक्रम सम्वत् 1910 कार्तिक कृष्णा प्रतिपदा को बीस प्रहरीय संथारा आया।
- प्रखर उपदेशक, सन्मार्ग प्रदर्शक, आत्मबली बाल ब्रह्मचारी **पूज्य आचार्य श्री कजोड़ीमलजी म.सा.** को अजमेर में विक्रम सम्वत् 1936 वैशाख शुक्ला तृतीया को संथारे के प्रत्याख्यान होते ही उस महापुरुष ने समत्वभावों में नश्वर देह का त्याग किया।
- इस युग के श्रुतकेवली, साम्प्रदायिक सहिष्णुता के सन्देशवाहक, वात्सल्यमूर्ति, बाल ब्रह्मचारी **पूज्य आचार्यश्री विनयचन्द्रजी म.सा.** ने जयपुर में विक्रम सम्वत् 1972 मार्गशीर्ष शुक्ला द्वादशी को लगभग 10 बजे साधारण-सा ज्वर आने पर समत्वभावों में शरीर छोड़ा।
- जीवन-निर्माण के शिल्पी, दूरदर्शी, धीर-वीर-गम्भीर, बाल ब्रह्मचारी **पूज्य आचार्य श्री शोभाचन्द्रजी म.सा.** को जोधपुर में विक्रम सम्वत् 1983 श्रावण कृष्णा अमावस्या को प्रातः कुछ वेदना हुई तो सन्तों ने उपयुक्त अवसर देखकर संथारे के प्रत्याख्यान करवाये। मध्याह्न में लगभग 12 बजे एक वमन हुई और संथारे में नश्वर शरीर का त्याग किया।
- प्रतिपल स्मरणीय, सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, इतिहास मार्तण्ड, अध्यात्मयोगी-युगमनीषी बाल ब्रह्मचारी **पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा.** ने पाली जिलान्तर्गत निमाज कस्बे में तेरह दिवसीय तप-संथारे के साथ पूरी सजगता एवं समत्वभावों में विक्रम सम्वत् 2048 प्रथम वैशाख शुक्ला अष्टमी को पुष्य नक्षत्र में रात्रि में लगभग 8 बजकर 15 मिनट में नश्वर देह का त्याग कर एक

नया इतिहास रच दिया।

विगत 200 वर्षों के इतिहास में किसी आचार्य को ऐसी सजगता में संथारा नहीं आया। पूज्य गुरुदेव कृष्ण पक्ष की दशमी को उपवास करते हैं अत: 09 अप्रेल, 1991 को किया गया उपवास चतुर्विध संघ ने उसी परिप्रेक्ष्य में लिया। दिनांक 10 अप्रेल को पारणक नहीं करके पूज्य गुरुदेव ने बेला किया और 11 अप्रेल को तेले की तपश्चर्या में तिविहार संथारा किया।

हर रोज संथारालीन महायोगी के हजारों-हजार जैन-जैनेतर श्रद्धालुजन दर्शन-वन्दन तो करते ही, कोई-न-कोई स्वेच्छा से व्रत-नियम जरूर लेते। 21 अप्रेल, 1991 को रात्रि में सवा आठ बजे के लगभग उस दिव्य-दिवाकर ने अन्तिम श्वास ली।

22 अप्रेल को पार्थिव देह का अन्तिम संस्कार करके श्रद्धाञ्जलि-सभा का आयोजन सुशीला भवन के बाहर ग्राउण्ड में रखा गया, जिसमें उस महापुरुष का हस्त-लिखित पत्र पढ़ा गया, तद्नुसार संघ व्यवस्था के लिए आचार्य के रूप में पं. रत्न श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का नाम था तो उपाध्याय-पद हेतु पण्डित रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. का रत्नसंघ में प्रथम उपाध्याय-पद पर मनोनयन सुनकर जन समुदाय ने जय-जयकार करके आचार्य भगवन्त के मनोनयन को सहर्ष मान्य किया।

संथारालीन महापुरुष के दर्शन-वन्दन हेतु राजस्थान के मुख्यमन्त्री, मन्त्री मण्डल के सदस्यगण, विभिन्न पार्टियों के पदाधिकारीगण, प्रशासन और पुलिस के अधिकारीगण, विधायकगण, सांसदगण और लाखों श्रद्धालु भक्तों ने तीर्थधाम निमाज पहुँचकर श्रद्धा-सुमन अर्पित किए।

आचार्य भगवन्त के आदर्श संथारे को लाखों भक्तों ने देखा, जिनमें निमाज के मुस्लिम भाइयों ने स्वप्रेरित भावना से पशुवध नहीं करने और मांस विक्रय नहीं करने का संकल्प लिया, वह उस महापुरुष के स्वर्ग-गमन तक निर्बाध चला।

तीर्थधाम निमाज में अनेक परम्पराओं के सन्त-मुनिराज एवं महासतियाँजी महाराज ने निमाज पधार कर अपनी-अपनी ओर से तथा अपनी परम्परा की ओर से श्रद्धा-सुमन तो समर्पित किए ही, सजगता पूर्वक संथारालीन महायोगी के दर्शन-वन्दन एवं सुख-शान्ति पृच्छा करके अपने-आपको सौभाग्यशाली समझा।

सन्त-सतीवृन्द के सुदीर्घ संथारे

- **तपस्वी श्री भगवानदासजी म.सा.** ने विक्रम सम्वत् 1964 भाद्रपद शुक्ला एकादशी को आहोर की हवेली, जोधपुर में 65 दिवसीय सुदीर्घ संथारे के साथ समाधिमरण का वरण कर मृत्यु को महोत्सव बनाया। तपस्वी सन्तरत्न ने 50 वर्षों से एकान्तर तप की साधना भी की।
- दृढ़ संकल्पी एवं **तपस्वी श्री सागरमलजी म.सा.** ने किशनगढ़ में विक्रम सम्वत् 1985 श्रावण कृष्णा त्रयोदशी को 59 दिवसीय सुदीर्घ संथारे के साथ समत्वभावों में शरीर का त्याग किया। उस समय राजा-महाराजाओं का राज था अत: किशनगढ़ दरबार में किसी ने शिकायत कर दी कि एक जैन सन्त को भूखा मारा जा रहा है। शिकायत के निवारणार्थ किशनगढ़ दरबार ने अपने दीवान को जाँच हेतु भेजा। दीवान ने स्थानक पहुँचकर संथारालीन मुनि से पूछा-''क्या आपको मारा जा रहा है?'' मुनिश्री ने प्रत्युत्तर में कहा कि मुझे कोई नहीं मार रहा है। मेरा शरीर अब आहार नहीं माँगता तो मैं जबरदस्ती आहार क्यों दूँ। मैं अपनी इच्छा से संथारे की साधना कर रहा हूँ। दीवानजी ने फिर कहा-''यहाँ के जैन परिवार के लोग तो आपको मारना चाहते हैं।'' मुनिश्री ने प्रत्युत्तर में कहा कि कोई किराये के घर में रहता है और मकान मालिक उस घर को खाली कराना चाहता है तो या तो धक्के देकर बाहर करेगा या फिर दरबार में फरियाद करेगा। मैं धक्के खाकर शरीर छोडूँ, इसके बजाय तो मैं स्वयं होकर उसे क्यों न छोड़ दूँ।

दीवान साहब को संथारालीन मुनि की बात समझ

में आ गई कि मुनिश्री आत्महत्या नहीं, किन्तु साधना कर रहे हैं। लोगों ने भले ही गलत शिकायत कर दी लेकिन मुनिराज सही हैं। दीवान साहब ने संथारालीन मुनिश्री को वन्दन-नमन किया और दरबार में जाकर वस्तुस्थिति से अवगत कराते हुए कहा कि महाराज न तो आत्महत्या कर रहे हैं और न ही लोग उन्हें मारना ही चाहते हैं। यह तो एक साधना है।

- **महासती श्री सिन्धुजी म.सा.** को जोधपुर में विक्रम सम्वत् 1957 आषाढ़ शुक्ला 13 को 59 दिन का संथारा आया।
- **महासती श्री सुगनकँवरजी म.सा.** को महामन्दिर-जोधपुर में विक्रम सम्वत् 1991 को भाद्रपद शुक्ला सप्तमी के दिन 52 दिन का संथारा सीझा।
- **भजनानन्दी श्री माणकमुनिजी म.सा.** को जोधपुर में विक्रम सम्वत् 2032 फाल्गुन शुक्ला अष्टमी को 35 दिवसीय संथारे के साथ समाधिमरण प्राप्त हुआ।
- **श्रद्धेय श्री बुधमलजी म.सा.** को केकीन्दड़ा में विक्रम सम्वत् 1921 को माघ कृष्णा चतुर्थी के दिन 27 दिन का संथारा आया।
- ओजस्वी वक्ता **पण्डित रत्न श्री शुभेन्द्रमुनिजी म.सा.** को क्रियोद्धारक भूमि भोपालगढ़ में विक्रम सम्वत् 2052 मार्गशीर्ष कृष्णा अष्टमी को 16 दिवसीय तप-संथारे के साथ समाधिमरण प्राप्त हुआ। उस समय सेवा में एक सन्त की जरूरत है, उसकी पूर्ति के लिए आचार्यश्री हीरा ने तपस्वी श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. को दो आदमियों के साथ विहार करवाकर भेजा। आचार्यश्री हीरा की दूरदर्शिता पूर्ण निर्णय-क्षमता को जन समुदाय ने सराहा।
- **साध्वीप्रमुखा-शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.** की भावनानुसार चतुर्विध संघ की साक्षी में विक्रम सम्वत् 2073 मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी तदनुसार 21 नवम्बर, 2016 को सायं लगभग 4 बजे पूर्ण सजगता में श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने संथारे के प्रत्याख्यान करवाए।

साध्वीप्रमुखाजी महाराज का आदर्श संथारा चल रहा था तो संथारालीन महासतीजी की सुख-शान्ति की पृच्छा करने तथा वन्दन-नमन की भावना से श्रमण संघीय, ज्ञानगच्छीय और नानकवंशीय सन्त-मुनिराजों तथा महासतीवर्याओं ने पावटा पहुँचकर दर्शन लाभ लिए और सुख-शान्ति की पृच्छा भी की।

सन्त-सतियों ने शासन प्रभाविकाजी म.सा. को शास्त्र-स्वाध्याय का सम्बल तो दिया ही, सामायिक-स्वाध्याय भवन पावटा में नमस्कार महामन्त्र के जाप में श्रावक-श्राविकाओं ने भावनापूर्वक भागीदारी प्रदर्शित की, जिससे पावटा मानो एक तीर्थधाम बन गया। उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. ने 06 दिसम्बर, 2016 को दोपहर में चौविहार संथारा करवाया और उसी दिन सायं करीब 4.30 बजे संथारा सीझ गया। साध्वीप्रमुखा-शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. का 16 दिन का संथारा अनूठा आदर्श कहा जा सकता है।

कतिपय अन्यान्य उपलब्ध संथारे

- **पूज्य श्री दुर्गादासजी म.सा.** को विक्रम सम्वत् 1882 श्रावण शुक्ला दशमी को जोधपुर में चौविहार संथारे के साथ समाधिमरण प्राप्त हुआ।
- तपस्वी सन्त **श्रद्धेय श्री पीरजी म.सा.** को विक्रम सम्वत् 1907, माघ कृष्णा एकादशी को पाँच प्रहर के संथारे के साथ समाधिमरण प्राप्त हुआ।
- प्रखर चर्चाकार **श्रद्धेय श्री कनीरामजी म.सा.** ने विक्रम सम्वत् 1921 माघ शुक्ला चतुर्थी को दाहज्वर होने से उन्हें संथारा करवाया गया। एक हिचकी के साथ परलोक-गमन के लिए मुनिश्री ने प्रयाण कर दिया।
- अतिशय-सम्पन्न, वादीमर्दन **श्रद्धेय श्री नन्दलालजी म.सा.** ने विक्रम सम्वत् 1950 चैत्र

मास की पूर्णमासी के दिन 11.30 बजे के लगभग श्वास के प्रकोप बढ़ जाने से संथारा किया जो 22 प्रहर चला।

- अभिग्रहधारी **तपस्वी श्री बालचन्द्रजी म.सा.** ने विक्रम सम्वत् 1955 मार्गशीर्ष कृष्णा त्रयोदशी को श्वास की व्याधि हो गई। श्रमणोचित औषधोपचार पश्चात् भी स्वास्थ्य लाभ नहीं हुआ तो उसी दिन मुनिश्री ने समत्वभावों के साथ चारों आहार का त्याग कर दिया। मुनिश्री ने कहा-"इस समय मेरा चित्त उत्तम समाधि में है। यदि मैं इस शरीर का त्याग करूँ तो उत्तम गति का अधिकारी बनूँ।" अभिग्रहधारी मुनिश्री के ऐसा कहने के साथ उस महापुरुष ने परलोक के लिए प्रयाण कर दिया।
- **महासती श्री झमकूजी म.सा.** को विक्रम सम्वत् 1927 में 9 दिन का संथारा आया।
- **महासती श्री सज्जनकँवरजी म.सा.** को विक्रम सम्वत् 2007 की फाल्गुन शुक्ला सप्तमी को अजमेर में 7 दिन के संथारे के साथ समाधिमरण प्राप्त हुआ।

आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. के शासनकाल में आदर्श चौविहार संथारा

वयोवृद्धा **महासती श्री सूरजकँवरजी म.सा.** का ग्यारह दिन का चौविहार संथारा न केवल अजमेर, अपितु स्थानकवासी समाज ही नहीं, सकल जैन समाज में चर्चा का विषय बना रहा। क्यों, तो ग्यारह दिन का चौविहार संथारा न देखा गया और न ही सुना गया। महासतीजी ने दृढ़ आत्मबल से संथारे का पालन किया।

वयोवृद्धा महासतीजी को कई दिनों से आहार करने की इच्छा नहीं हो रही थी, पेय के आधार पर जीवन चल रहा था। आहार नहीं लेने से कमजोरी बढ़ गई। डॉक्टर-वैद्य एवं जानकार श्रावकों ने स्थिति-परिस्थिति देखकर अनुमान किया था कि रात निकल जाय तो गनीमत है।

अजमेर संघ के पदाधिकारियों ने संघनायक पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की सेवा में नागौर संघ के संघ-सेवी श्रावक श्री डूंगरमलजी सुराणा के माध्यम से समाचार करवाये कि डॉक्टर-वैद्य तक कह रहे हैं कि रात निकलना मुश्किल है। आचार्य श्री हीरा ने वयोवृद्धा महासतीजी को चौविहार संथारा कराने का अजमेर संघ सदस्यों को यह कहते हुए आज्ञा-अनुमति दी कि अच्छी तरह देख-समझकर चौविहार संथारा करवाया जा सकता है।

आचार्यश्री की भावनानुसार संघाड़ा प्रमुख सेवाभावी महासती श्री सन्तोषकँवरजी म.सा. एवं वयोवृद्धा महासती श्री सूरजकँवरजी म.सा. को प्राप्त निर्देश कहे जाने पर एवं उनकी स्वीकृति-सहमति से चौविहार संथारा करवाया गया। विक्रम सम्वत् 2056 कार्तिक शुक्ला नवमी, 17 नवम्बर, 1999 को सायं करीब 5.30 बजे पहले सागारी संथारा करवाया गया और फिर डॉक्टरों-वैद्यजी के साथ जानकार श्रावक-श्राविकाओं के अभिप्रायों को समझकर 7.00 बजे के आसपास यावज्जीवन चौविहार संथारे के प्रत्याख्यान करवा दिए गए।

वह रात बीती। दूसरे दिन मंगल प्रभात में संथारालीन महासतीजी के स्वास्थ्य में अपेक्षाकृत कुछ ताजगी देखी गई तो लोगों ने अनुमान के आधार पर कहा कि बुझता दीपक एक बार प्रज्जवलित होता ही है।

संथारालीन महासतीजी की तेजस्विता उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही थी, इस कारण केसरीसिंहजी की हवेली वाले सामायिक-स्वाध्याय भवन में दर्शन-वन्दन करने वाले भक्तों का एक तरह से ताँता लग गया। वहाँ आचार्यश्री विजयराजजी म.सा. आदि सन्त-मुनिराजों का चातुर्मास था। अत: विद्वद्वर्य आचार्यश्री के साथ सन्त भी पधारे और मन्दिर-मार्गी महासतीवृन्द का भी पुन: पुन: पधारना होता रहा।

आचार्यश्री सहित सन्त-सतीवृन्द जब सुख-शान्ति की पृच्छा करते तो संथारालीन महासतीजी का उत्तर होता- मुझे तो मोक्ष जाना है, आप सहयोग करें।

एक-एक कर ज्यों-ज्यों दिन बीतते गए त्यों-त्यों महासतीजी का चौविहार संथारा एक पहेली-सा बन गया। जन भावना में रह-रहकर फिर-फिर से वही बात आती कि चौविहार संथारे की आज्ञा कैसे हो गई? अजमेर संघ पदाधिकारियों द्वारा हर रोज समाचार नागौर श्रावकों के माध्यम से संघनायक तक पहुँचते रहे। आचार्यश्री हीरा आश्वस्त थे कि आत्मबल की दृढ़ता से संथारा साकार होगा। विक्रम सम्वत् 2056 मार्गशीर्ष कृष्णा पंचमी तद्नुसार 27 नवम्बर, 1999 को प्रात: करीब 10 बजे 11 दिन का चौविहार संथारा सीझा। ग्यारह दिन का चौविहार संथारा एक अनूठा कीर्तिमान है। धन्य है वयोवृद्धा महासतीजी की प्रशस्त भावना।

आचार्यश्री हीरा की दूरदर्शिता से सन्त-सतीवृन्द के अन्तिम मनोरथ-सिद्धि में सहयोग

आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. के चादर-महोत्सव पश्चात् लू के प्रकोप से **तरुण तपस्वी श्री कैलाशमुनिजी म.सा.** ज्वराक्रान्त हो गये। बुखार की तीव्रता में उपचारार्थ मुनिश्री को महात्मा गाँधी अस्पताल के गहन चिकित्सा इकाई में भर्ती करवाया। डॉक्टरों के अथक प्रयासों के बावजूद भी बुखार कम नहीं होते देखकर संघनायक पूज्य गुरुदेव ने डॉक्टर से पूछा कि बुखार कम होने की सम्भावना है क्या?

चिकित्सकों ने कहा-हम हमारा पूरा प्रयास कर रहे हैं। चिकित्सकों के प्रयास पश्चात् भी जब बुखार नहीं उतरा तो संघनायक ने मन-ही-मन सोचा कि यह मेरी परीक्षा का समय है।

आचार्यश्री ने मुनिश्री की आयुष्य का अनुमान करके डॉक्टरों से कहा-आप बुखार कम नहीं कर सकते तो छुट्टी तो दे सकते हैं?

डॉक्टरों ने कहा-हमने पूरा प्रयास किया है, अब भी हम प्रयासरत हैं, फिर भी आप छुट्टी दिलाना चाहते हैं तो हम वैसा करने को तैयार हैं। मुनिश्री को हॉस्पिटल से छुट्टी दिलाकर वकील साहब श्री हुक्मीचन्दजी जैन के मकान के नीचे खाली दुकान पर मुनिश्री को सन्त लेकर पधारे। आज्ञा लेकर वहाँ ठहरे और ज्वराक्रान्त मुनिश्री को श्रुत-स्वाध्याय, जप-तप और मांगलिक-श्रवण का सहयोग बनाए रखकर पूरा साज दिया गया।

आयुष्य की डोर कब टूट जाय, कहा नहीं जा सकता। होनी होकर रहती है। मुनिश्री ने 8 जून को रात्रि में लगभग 11 बजे नश्वर देह का त्याग कर दिया।

आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने उपचार को प्राथमिकता दी और डॉक्टरों के अथक प्रयासों के पश्चात् भी जब लाभ नहीं दिखाई दिया तो श्रुत स्वाध्याय, जप-तप और मंगल-पाठ सुनाने के साथ रात्रि चौविहार में प्रत्याख्यान का सहयोग संघनायक की दूरदर्शिता से सम्भव हो सका।

साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री बदनकँवरजी म.सा. वय सम्पन्नता एवं पादविहार की स्थिति नहीं होने से घोड़ों के चौक-जोधपुर में स्थिरवास विराज रहे थे। आचार्यप्रवर ने वर्ष 1994 का चातुर्मास साधु मर्यादाओं के आगारों से बिजयनगर घोषित किया, परन्तु ओजस्वी वक्ता पण्डित रत्न श्री शुभेन्द्रमुनिजी म.सा. के ऑपरेशन के कारण बिजयनगर श्री संघ की सहमति से संघनायक ने विशेष कारणों से अपना चातुर्मास विजयनगर के बजाय जोधपुर किया ताकि मुनिश्री की सार-सम्भाल के साथ उनका मनोबल भी बना रहे सके, इस कारण चातुर्मास का स्थान-परिवर्तन आवश्यक हो गया।

आचार्यश्री हीरा ने वर्ष 1994 का चातुर्मास नेहरुपार्क क्षेत्र-जोधपुर में किया। संघनायक के जोधपुर चातुर्मास से प्रवर्तिनीजी महाराज को विशेष रूप से सन्तोष का अनुभव हुआ।

आचार्यश्री के चिन्तन में साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महाराज को अन्तिम मनोरथ-सिद्धि में सहयोग करने की भावना को बल मिला। पूज्य गुरुदेव 25 सितम्बर, 1994 को प्रात: घोड़ों के चौक पधारे और पृच्छा की कि आपकी भावना हो तो संथारा करवाया जा सकता है। प्रवर्तिनीजी महासती उस समय अर्द्धचेतना में थे, अत:

स्वीकृति नहीं हो सकी। दूरदर्शी संघनायक ने उप-प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकँवरजी म.सा. को आवश्यक निर्देश देकर एवं मंगलपाठ सुनाकर नेहरुपार्क पधारे।

उसी दिन दोपहर को पूज्य गुरुदेव ने घोड़ों के चौक जाने के लिए बाहर क़दम रखा ही था कि श्रावकों ने अनुरोध किया कि आपश्री धूप ढलने पर पधारें, अभी तो धरती तप रही है। पर, आचार्यश्री के मन में तो साध्वीप्रमुखाजी महाराज को सहयोग देने की भावना थी, अत: कड़ी धूप में घोड़ों के चौक पधारे।

आचार्यश्री को देखते ही प्रवर्तिनी जी महाराज ने सोते-सोते हाथ जोड़े। दूरदर्शी संघनायक ने साध्वीप्रमुखा महाराज से फिर वही पृच्छा की कि आप कहें तो संथारा करवाया जा सकता है? साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री बदनकँवरजी म.सा. ने ''हाँ'' कहकर स्वीकृति दी तो पूज्य गुरुदेव ने सागारी संथारे के प्रत्याख्यान तो करवाए ही, श्रुत स्वाध्याय और जप-तप का सम्बल देने का निर्देश भी किया। मांगलिक सुनाकर संघनायक पुन: नेहरुपार्क पधारे।

दूसरे दिन 26 सितम्बर, 1994 को प्रात: करीब 9 बजे आचार्यश्री घोड़ों के चौक पधारे तो देखा कि प्रवर्तिनीजी महाराज का धीरे-धीरे श्वास चल रहा है। स्थिति-परिस्थिति देख-समझकर संघनायक ने चतुर्विध संघ की साक्षी से यावज्जीवन चौविहार संथारा करवा दिया।

साध्वीप्रमुखा-प्रवर्तिनी महासती श्री बदनकँवर जी म.सा. ने उसी दिन सायं नश्वर देह का त्यागकर दिया। इस संक्षिप्त वृत्तान्त से यह स्पष्ट होता है कि आचार्यश्री हीरा सन्त-सतीवृन्द के अन्तिम मनोरथ-सिद्धि में सहयोग करते हैं तो साथ ही यह भी स्पष्ट हो गया कि आचार्यश्री सावचेत अवस्था में ही संथारा करवाने के पक्षधर रहे हैं।

आचार्यश्री हीरा ने पावटा विराजित **साध्वीप्रमुखा, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.** की अवस्था एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी कारणों पर मन-ही-मन विचार करते सोचा कि उपाध्यायप्रवर जोधपुर में हैं वे अभी पावटा पधारें ही, ऐसा नहीं कहा जा सकता। दूरदर्शी संघनायक ने अपने सुशिष्य श्री मनीषमुनिजी म.सा. को यह कहकर भेजा कि जाकर देखें और साध्वीप्रमुखाजी महाराज की भावना हो तो उन्हें तिविहार संथारा करवाया जा सकता है। चौविहार संथारा फिर श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर करवायेंगे। मुनिश्री द्रुतविहार करके पावटा पधारे और साध्वीप्रमुखाजी महाराज से पृच्छा की कि आपकी भावना हो तो तिविहार संथारा के प्रत्याख्यान करवाये जा सकते हैं। साध्वीप्रमुखाजी महाराज ने सहर्ष स्वीकृति प्रदान की तो श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने चतुर्विध संघ की साक्षी से तिविहार संथारे के प्रत्याख्यान करवाये। (इसका अन्य विवरण पूर्व में आ चुका है)

अन्य सन्त-सतीवृन्द को सहयोग

वयोवृद्ध एवं थोकड़ों के ज्ञाता **श्री दयामुनिजी म.सा.** को क्रियोद्धारक भूमि भोपालगढ़ में विक्रम सम्वत् 2051 में माघ शुक्ला चतुर्दशी की रात में प्रत्याख्यान करके विश्राम कर रहे थे कि उन्होंने रात्रि में समाधिभावों के साथ नश्वर देह छोड़ दी।

वयोवृद्ध **श्री राममुनिजी म.सा.** को पुण्यधरा पीपाड़ में विक्रम सम्वत् 2054 वैशाख शुक्ला दशमी को समत्वभावों में पण्डित-मरण प्राप्त हुआ।

वयोवृद्धा **महासती श्री राजमतीजी म.सा.** को जोधपुर में विक्रम सम्वत् 2055 ज्येष्ठ कृष्णा नवमी को संथारापूर्वक समाधिमरण प्राप्त हुआ।

सरलहृदया **महासती श्री सायरकँवरजी म.सा.** ने अपनी अस्वस्थता में संघनायक की सेवा में समाचार करवाये कि मैं आज जाऊँगी, रहूँगी नहीं। अस्वस्थता में संघ ने डॉक्टर को बुलाकर दिखाया तो डॉक्टर साहब ने स्थानक में एक इंजेक्शन दिया और कहा कि इन्हें समुचित उपचार के लिए हॉस्पिटल में भर्ती कराना होगा। महासती मण्डल ने अस्पताल में भर्ती होने से इन्कार कर दिया और संघनायक के परामर्शानुसार संलेखणा

संथारा–समाधिमरण में सहयोग किया जाय, ऐसे निर्देशों की पालना में महासतीजी की तत्परता रही।

तपस्वी श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. ने प्रतिक्रमण करके आलोचना, प्रायश्चित एवं आवश्यक प्रत्याख्यान करके विश्राम किया। रात्रि में लगभग 12 बजे तपस्वी मुनिश्री ने विक्रम सम्वत् 2063 श्रावण शुक्ला दशमी को नश्वर देह का त्यागकर दिया। स्वर्ग–गमन के दिन तपस्वी सन्तरत्न ने मौन सहित उपवास कर रखा था।

शान्त स्वभावी तपस्विनी महासती श्री शान्तिकँवरजी म.सा. ने विक्रम समवत् 2064 चैत्र कृष्णा सप्तमी को पुण्यधरा पीपाड़ में समाधिमरण का वरण किया।

सेवाभावी महासती श्री सन्तोषकँवरजी म.सा. ने 12 नवम्बर, 2013 को बांदनवाड़ा में संथारे के साथ समाधिमरण प्राप्त किया।

आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य थोकड़ों के ज्ञाता **श्री बलभद्रमुनिजी म.सा.** ने बालोतरा में विक्रम सम्वत् 2047, द्वितीय वैशाख शुक्ला दशमी, सोमवार तदनुसार 24 मई, 2010 को समत्वभावों में स्वर्गगमन किया।

ऐसे अनेक उदाहरण हैं जिनसे ज्ञात होता है कि आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की सदा शुभभावना रहती है कि रत्नसंघीय संत–सतीवृन्द समत्वभावों के साथ समाधिमरण प्राप्त करें। सन्त–सतीवृन्द भी पण्डित–मरण की शुभेच्छा रखते हैं, इससे गौरवशाली संघ की जाहोजलाली बढ़ती जा रही है।

चतुर्विध संघ परम्परा के मूल पुरुष से लेकर पूर्वाचार्यों एवं प्रमुख–प्रमुख सन्त–मुनिराजों तथा महासतीवर्याओं के पुण्य स्मृति–दिवस पर त्याग–तप के साथ गुणगान करके स्वर्गस्थ पुण्यात्माओं को श्रद्धा–सुमन समर्पित करने में सक्रियता–जागरूकता रखता है।

प्रतिपल स्मरणीय परमाराध्य महामहिम आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा. के पुण्य–दिवस पर सामूहिक रूप से त्याग–तप की प्रभावना होती है तो कई वर्षों तक शुक्ल पक्ष की अष्टमी के दिन गुरु हस्ती के गुणगान करने में चतुर्विध संघ तत्पर रहता आया है।

रत्नसंघीय सन्त–मुनिराजों एवं महासतीवर्याओं को प्राय:कर संथारा आया और जिन्हें संथारा न भी आया, उन्होंने प्रतिक्रमण पश्चात् आलोचना, क्षमायाचना और प्रत्याख्यान करके समत्वभावों में नश्वर देह का त्याग किया है।

हम संघनायक गुरु हस्ती एवं उनके पट्टधर गुरु हीरा की दूरदर्शिता से एवं सकारात्मक सोच से प्रभावित तो हैं ही, प्रमुदित भी हैं। पूर्वाचार्यों के शासनकाल के अधिकांश संथारे स्मृति–पटल पर नहीं है, अत: उनका उल्लेख करना सम्भव नहीं हो सका है जबकि गुरु हस्ती और गुरु हीरा के शासनकाल में हुए संथारे जनमानस की स्मृति में तो हैं ही, दोनों महापुरुष दैनिक डायरी लिखते रहे हैं, उससे भी हमें सहजता से आवश्यक जानकारी सुलभ हो जाती है।

– ''पारस'' शिवशक्ति नगर रोड़ नं.1, महामन्दिर
तीसरी पोल के बाहर, जोधपुर-342006 (राज.)

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के नये प्रकाशन

1.	आचार्यश्री हस्ती का साहित्य और समाज को योगदान	सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन,	मूल्य 100 रुपये
2.	स्वस्थ एवं साधक जीवन के लिए आहार	सौ. मंगला चोरड़िया,	मूल्य 40 रुपये
3.	क्यों जरूरी ?	डॉ. श्वेता जैन,	मूल्य 60 रुपये
4.	विनयचन्द चौबीसी	श्री सम्पतराज चौधरी,	मूल्य 75 रुपये
5.	बोध कथाएँ	श्री सम्पतराज चौधरी,	मूल्य 40 रुपये

युवा-स्तम्भ

मूल्य और सामाजिक अपेक्षाएँ

श्री पदमचन्द गाँधी

संस्कार एवं परम्पराएँ किसी भी राष्ट्र की वे महत्त्वपूर्ण धरोहर हैं जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को जोड़ती हैं और जीवन को सुखद सहज, सरल एवं आनन्दमयी बनाती है। सामाजिक मूल्यों का विकास ही समाज को सात्त्विक बल एवं सही दिशा प्रदान करता है। सहयोग, स्नेह, समर्पण, श्रद्धा, आदरभाव, समता, प्रसन्नता, सहकारिता, मधुरता, बन्धुत्व, चारुता, उदारता, विनम्रता आदि ऐसे मूल्य हैं जो जीवन को आदर्श ही नहीं बनाते वरन् जीवन को एक 'उत्सव' की भाँति जीने का मौका देते हैं। लेकिन आधुनिकता के इस संक्रमण काल में इनके मूल्य बदल गये हैं। स्वतन्त्रता में जीवन जीने की अनेक विधियाँ आविष्कृत हुयी। परतन्त्रता एवं उठापटक ने भी भारतीय मूल्यों को स्थिर बनाये रखा, लेकिन आधुनिकता ने तो इस थोड़े समय में सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों को तेजी से क्षीण कर दिया, जिससे सम्पूर्ण सामाजिक स्थिति चरमरा गयी तथा समाज का अस्तित्व खतरे में आ गया। आज स्थिति इतनी गम्भीर होती जा रही है कि मनुष्य पशु की श्रेणी से भी निम्न स्तर पर जा रहा है।

समय की तेज रफ्तार में पुरानी परम्पराएँ सामाजिक मूल्य, पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही पारिवारिक व्यवस्थाएँ अब आधुनिकता के नाम पर तार-तार होकर बिखर रही हैं। प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सञ्चार व्यवस्था, इलेक्ट्रॉनिक युग, विदेशी संस्कृति की घुसपैठ तथा अतिभोगवाद की संस्कृति ने भारतीय संस्कृति को तीव्र रूप से प्रभावित किया है। अतिभोग के लिए आज व्यक्ति आपाधापी में अधिक धनसंग्रह कर विलासितापूर्ण जीवन कर, अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त होकर तथा समाज में झूठी प्रतिष्ठा का प्रदर्शन कर अपने आपको सर्व श्रेष्ठ घोषित करना चाहता है। इसके लिए वह कोई भी घिनौना कृत्य करने को तैयार हो जाता है। आधुनिकता की आड़ में व्यक्ति अपने बुजुर्गों से विरासत में प्राप्त संस्कारों की धरोहर तथा सामाजिक मूल्यों को धीरे-धीरे भूलता जा रहा है। इनके स्थान पर अमर्यादित जीवन तथा फूहड़पन वाली संस्कृति को ग्रहण कर रहा है।

अतिभोगवाद की संस्कृति एवं भूमण्डलीकरण के कारण व्यक्ति ने केवल अर्थोपार्जन को ही अपना एकमात्र लक्ष्य मान लिया है। उसने नैतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों को गौण कर दिया है। आज व्यक्ति 'इजी मनी' प्राप्त करने के लिए गलत कार्य करते हुए भी डरता नहीं है। इस इजी मनी से वह तृप्त होना चाहता है, लेकिन फिर भी वह अतृप्त एवं असन्तुष्ट नज़र आता है। आज ही सब कुछ चाहिए, कल का धीरज नहीं रखने वाली मानसिकता से युक्त व्यक्ति नैतिकता की सभी दीवारें तोड़कर अपने जीवन को दाँव पर लगा रहा है। आज व्यक्ति के पास अत्याधुनिक साधन होने के बाद भी वह सुखी नहीं है, उसे गहरी नींद का सुख नहीं मिलता, क्योंकि वह साधनों के ढेर में अजनबी बनकर अपनापन ढूँढ़ रहा है जो उसे नहीं मिलता। आज भौगोलिक दूरियाँ तो कम हो गयीं, लेकिन मन की दूरियाँ तेजी से बढ़ गयी। एक ही छत के नीचे अपने ही अनजान की तरह रह रहे हैं। एकाकी जीवन पर पाश्चात्त्य प्रभाव इतना हावी हो गया है कि व्यक्ति अपनी सभी सीमाओं एवं मर्यादाओं को लाँघकर मात्र इन्द्रिय सुखों की लालसा में अपना अमूल्य चरित्र भी दाव पर लगा

रहा है तथा उच्छृङ्खल जीवन जीने की राह पर चला जा रहा है। आज व्यक्ति सभी प्रकार के सामाजिक व्यापारिक, आर्थिक एवं प्राकृतिक मर्यादाओं के तट बाँधों को तोड़कर आगे बढ़ रहा है। आर्थिक सत्ता हाँसिल करने के लिए न जाने कितने ताने-बाने बुनता है। कोरोना महामारी से उत्पन्न मृत्यु का ताण्डव चारों तरफ नज़र आ रहा है, लोग ऑक्सीजन एवं दवाओं के लिए तड़प रहे हैं, अस्पतालों में बेड एवं वेन्टिलेटर उपलब्ध नहीं हो रहे हैं। महँगाई चरम स्तर पर पहुँच गयी है। इस भयावह स्थिति में आम आदमी सदमें में आ रहा है, लेकिन इस गम्भीरता को नज़र अन्दाज़ करते हुए प्राणरक्षक वस्तुएँ जैसे-दवाइयाँ, ऑक्सीजन, इञ्जेक्शन इत्यादि की आज कालाबाजारी मनुष्य ही कर रहा है। उसे यह पता नहीं कि वह कल ज़िन्दा भी रहेगा या नहीं, फिर भी लालची बनकर मानवता को मृत्यु में धकेल कर दस गुणा अधिक दाम पर इन चीजों की कालाबाजारी करके काला धन कमा रहा है। आज मनुष्य के लिए मानवता एवं संवेदनशीलता मर चुकी है। इसके कारण उसकी जीवन शैली भी विकृत हो गयी है। मृत्यु से भी उसे डर नहीं लगता। वह क्या करना चाहता है समझ से परे हो रहा है।

समाज के बदलते मूल्यों ने समाज की गरिमामय अखण्डता एवं एकता को खतरा उत्पन्न कर दिया है। प्रभुत्वशाली लोगों का प्रभाव ही हावी हो रहा है, जिनसे वे अपने व्यक्तिगत स्वार्थ पूरे कर रहे हैं। स्वस्थ समाज नहीं रहने से समाज के प्रति समर्पण एवं सम्मान भी क्षीण हो गया है। आधुनिकीकरण एवं बढ़ती मुक्त विचारधारा के कारण समाज की परवाह किए बगैर गलत कार्यों को करने में व्यक्ति को अब डर नहीं लग रहा है। आज संयुक्त परिवार के स्थान पर एकाकी परिवार पनप रहे हैं। माता-पिता एवं अपने बच्चों तक के परिवार बिखर रहे हैं। उनमें भी वैचारिक दरारें पड़ने के कारण टूटने की कगार पर पहुँच गये हैं। पति-पत्नी के संवेदनशील रिश्ते टूट रहे हैं। व्यक्ति एकाकी जीवन व्यतीत करने को मजबूर हो गया है, जिससे उसे कुण्ठा के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलता। ऐसी प्रवृत्तियों के कारण समाज में अनगिनत अनचाही बुराइयाँ प्रविष्ट हो चुकी हैं। समाज में आडम्बर, दिखावा एवं अपव्यय बढ़ रहा है। लेकिन मन की शान्ति एवं विवेक क्षीण हो रहा है।

बदलते परिवेश में अराजकता, नग्नता एवं अनैतिकता अपने पाँव पसार रही है। आधुनिक बनने के चक्कर में व्यक्ति अपने धर्म, संस्कृति एवं संस्कारों की बलि दे रहा है। आज चारों ओर मीडिया एवं टी.वी. चैनलों द्वारा नग्नता का प्रदर्शन किया जा रहा है। इनका सीधा असर समाज पर पड़ता है, खासकर युवापीढ़ी इसे आचरित कर अपने आपको मॉडर्न बनाने का खुलकर प्रयास कर रही है। द्रौपदी ने चीरहरण पर कृष्ण को पुकारा था जिसने उसकी लाज बचायी, लेकिन अब तो द्रौपदियाँ स्वयं भरे बाजार में अपने कपड़े फाड़ कर खड़ी हो जाती हैं। लाञ्छन किसी निरीह पर लगाकर उससे पर्स, मोबाइल, अंगूठी, चैन आदि हड़प लेती हैं। खुले अङ्ग-प्रदर्शन के कारण ही मानसिक प्रदूषण बढ़ता जा रहा है जिसके कारण हत्याएँ, बलात्कार, लूट जैसी घटनाएँ बढ़ रही हैं।

उच्च सामाजिक मूल्यों के कारण ही भारत को अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर गुरुवत् मान-सम्मान मिला हुआ था, लेकिन आज आधुनिकता के नाम पर अपसंस्कृति और मूल्य-हीनता का शिकार बनकर निकृष्टतम अमानवीय मनोवृत्तियों का अखाड़ा बनकर रह गया है। नैतिकता एवं सांस्कृतिक आयोजनों की आड़ में अनैतिकता और अनाचार पोषित हो रहा है। नारी स्वतन्त्रता की आड़ में उनका शोषण हो रहा है। आधुनिक दिखने की चाह में ऊल-जलूल कपड़ों का चलन बढ़ गया है। सिगरेट, शराब तथा मादक पदार्थों का सेवन युवावर्ग

को आधुनिकता का पैमाना प्रतीत हो रहा है। इसमें युवतियाँ भी शामिल हो रही हैं। 'पब' और 'डिस्को' संस्कृति में स्वतन्त्र तथा उन्मुक्त जीवन-जीने की चाह में युवापीढ़ी लिव-इन-रिलेशनशिप को अपना रही है। युवापीढ़ी सामाजिक ज़िम्मेदारी तो क्या पारिवारिक ज़िम्मेदारी को भी निभाना उचित नहीं मानती। बच्चों में संस्कार वही आते हैं जो दिखाया जाता है या सिखाया जाता है। जो कृत्य माँ-बाप करते हैं उसी का अनुसरण बच्चे करते हैं। घरेलू हिंसा, लड़ाई-झगड़े, रिश्तों की दूरियाँ, बदलते परिधान ये सभी बच्चे उनके माँ-बाप से ग्रहण कर रहे हैं। इनका आचरण कैसा होगा जरा सोचें?

परिवार एवं समाज तभी गौरवान्वित होता है जब व्यक्ति के आचरण में शुद्धता, विनम्रता, भ्रातृत्व, सहकार भावना, संस्कारित आचरण का एक उदाहरण अपने बच्चों के सामने प्रस्तुत करें तथा भौतिक कंगूरा नहीं संस्कारों की नींव बनें। शैक्षिक संस्थाओं में नैतिक शिक्षा को अनिवार्य रूप से लागू करें तथा शिक्षक बच्चों पर नैतिकता की गहरी एवं अमिट छाप छोड़ें।

श्रेष्ठ व्यक्ति ही श्रेष्ठ समाज का निर्माण करता है। अत: व्यक्ति अपनी सोच को सकारात्मक रूप देकर समाज को संगठित करे। सामाजिक स्तर पर इन बदलती परिस्थितियों पर चिन्तन किया जाये तथा सामाजिक अंकुश लागू किया जाये, इसके लिए सम्पन्न एवं प्रभुत्वशाली व्यक्ति सबसे पहले समाज के सामने एवं लिए गये अच्छे निर्णयों को लागू करे तथा अमल में लाये। साहित्यकार सत् और प्रेरक साहित्य का सृजन कर चाणक्य की तरह अलख जगाए। सन्त, महात्मा, मुनिजन इन समस्याओं पर आध्यात्मिकता एवं धार्मिकता के आधार पर व्यक्तियों को वास्तविक जीवन जीने के लिए ठोस कार्यक्रम बनाकर निस्वार्थभाव से लागू करें। महिलाएँ 'अर्थ' एवं कैरियर के स्थान पर अपनी भावीपीढ़ी और परिवार को अधिक महत्त्वपूर्ण समझे। युवावर्ग में परिवार, समाज और धर्म के प्रति श्रद्धा समर्पण एवं आस्था की भावना जगे। इन सबसे निश्चित रूप से सामाजिक मूल्यों में बढ़ोतरी होगी तथा समाज सुसंस्कृत होकर सर्वोच्च शिखर को प्राप्त कर सकेगा।

मूल्यों के पतन को रोकना है तो व्यक्ति को अनेकान्तवादी दृष्टिकोण को अपनाना होगा, क्योंकि अनेकान्त दृष्टि वैचारिक संकीर्णताओं को मिटाने के साथ ज्ञान की सम्भावनाओं के अनन्त द्वार खोलती है। यह विवादों, कलह, एवं संघर्षों को मिटाने की एक अमृतमय औषधि ही नहीं वरन् वर्तमान में क्लेशों एवं आतंकवाद के समाधान का महान् रथ है। यदि अनेकान्त दृष्टि को व्यावहारिक जीवन के धरातल पर उतारा जाय तो समतामूलक, अहिंसा मूलक और संघर्ष विहीन स्वस्थ समाज की संरचना सम्भव होगी।

-25, बैंक कॉलोनी, महेश नगर विस्तार-बी,
गोपालपुरा बाईपास, जयपुर-302018 (राज.)

गुरु महेन्द्र सवैया

महासती श्री रुचिताजी म.सा.

महेन्द्राचार्यजी महान्,छत्तीस गुणों की खान,
रत्नसंघ की हैं शान, हीरा पट्टधारी हैं।
जोधाणा में जन्म धार, संघ का सम्भाला भार,
जीवन का निकाला सार, सरस व्याख्यानी हैं।
हृदय से अति गम्भीर, स्वाध्याय का पीते नीर,
धन्ना सम तपोवीर, सेवा अपरम्पारी है।
नवें पाट को दीपाय, महान् अध्यवसायी हैं,
नित्य शीश को झुकाय, वन्दना हमारी है।
ऐसे भावी आचार्यजी को, वन्दना हमारी है।
ऐसे भावी संघनायकजी को, वन्दना हमारी है।

-संकलित : श्रीमती बीना मेहता, जोधपुर (राज.)

तत्त्व-चर्चा

आओ मिलकर कर्मों को समझें (15)

(केवल ज्ञान)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा- पाँच ज्ञानों में से कितने ज्ञान एक साथ हो सकते हैं?

समाधान- (अ) केवलज्ञान अकेला ही होता है। क्योंकि केवलज्ञान क्षायिक ज्ञान है जबकि मति, श्रुत, अवधि और मन:पर्यायज्ञान, ये चारों क्षायोपशमिक ज्ञान हैं।

(ब) मतिज्ञान और श्रुतज्ञान ये दोनों साथ-साथ ही होते हैं। न तो अकेला श्रुतज्ञान होता है और न ही अकेला मतिज्ञान होता है। छद्मस्थ सम्यग्दृष्टि जीवों में मति और श्रुत दोनों ज्ञान एक साथ ही होते हैं। दोनों में कारण-कार्य भाव तथा वाचक-वाच्य भाव रहा हुआ है।

(स) तीन ज्ञान एक साथ दो विकल्प में हो सकते हैं-प्रथम- मति, श्रुत और अवधिज्ञान।

दूसरा- मति, श्रुत और मन:पर्यवज्ञान।

(द) चार ज्ञान- मति, श्रुत, अवधि और मन:पर्यवज्ञान एक साथ हो सकते हैं।

(य) पाँच ज्ञान एक साथ कभी भी प्रकट रूप में नहीं होते हैं।

जिज्ञासा- एक साथ जीव कितने ज्ञान का उपयोग करता है?

समाधान-दो ज्ञान, तीन ज्ञान अथवा चार ज्ञान की लब्धि से सम्पन्न जीव भी एक समय में मात्र किसी एक ज्ञान का ही उपयोग करता है। हाँ, इतना अवश्य है कि एक जीव अलग-अलग समयों में तो अनेक ज्ञानों का उपयोग कर सकता है। अनेक जीवों की अपेक्षा से यदि कथन करें तो एक ही समय में वे जीव भी सभी ज्ञानों का उपयोग कर सकते हैं।

यहाँ एक जीव की अपेक्षा से कथन किया गया है, इसलिए यह कहा जा सकता है कि लब्धि की अपेक्षा चार ज्ञान एक साथ हो सकते हैं, किन्तु प्रवृत्ति (उपयोग) की अपेक्षा एक समय में एक ही ज्ञान होता है।

जिज्ञासा- ज्ञानावरणीय कर्म के सन्दर्भ में लब्धि तथा उपयोग किसे कहते हैं?

समाधान-ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम, उपशम अथवा क्षय होने से प्रकट होने वाली ज्ञान शक्ति को लब्धि कहते हैं। उपयोग का तात्पर्य-ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम अथवा क्षय से प्रकट होने वाली शक्ति में जीव का प्रवृत्त होना।

जिज्ञासा- जीव को ज्ञानोपयोग पहले होता है अथवा दर्शनोपयोग?

समाधान-छद्मस्थ जीवों को पहले दर्शनोपयोग होता है और उसके पश्चात् उन्हें ज्ञानोपयोग होता है। क्योंकि छद्मस्थ जीव पहले सामान्य रूप से जानता है तत्पश्चात् ईहा, अपाय, धारणा आदि के द्वारा विशेष रूप से जानता है। जो केवलज्ञानी बन जाते हैं, उनको पहले ज्ञानोपयोग होता है अथवा दर्शनोपयोग इस सन्दर्भ में निम्नांकित तीन विचारधाराएँ मिलती हैं-

(1) क्रमवादी विचारधारा (2) भेदवादी विचारधारा (3) अभेदवादी विचारधारा।

जिज्ञासा- क्रमवादी विचारधारा किसे कहा गया है?

समाधान-जो ये मानते हैं कि केवलज्ञानी को प्रथम समय में ज्ञानोपयोग होता है और दूसरे समय में दर्शनोपयोग होता है। अनन्त काल तक यही क्रम चलता रहता है। दोनों उपयोग एक साथ एक समय में कभी नहीं होते हैं, उस विचारधारा को क्रमवादी विचारधारा कहा गया है।

प्रज्ञापनासूत्र के तीसरे पश्यता पद में भी वर्णन

मिलता है कि केवली भगवान जिस समय जानते हैं, उस समय देखते नहीं है तथा जिस समय देखते हैं, उस समय जानते नहीं है। इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि आगमकार क्रमिक विचारधारा को अधिक संगत मानते हैं। इस विचारधारा के समर्थक विक्रम सम्वत् की सातवीं शताब्दी के महान् प्रभावक आचार्य सिद्धान्तवादी जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण आदि भी माने जाते हैं।

जिज्ञासा– भेदवादी विचारधारा किसे माना गया है?

समाधान–जिनके मतानुसार केवलियों में ज्ञानोपयोग तथा दर्शनोपयोग साथ-साथ ही होते हैं। उनमें एक समय का भी अन्तर नहीं होता है। इस विचारधारा के समर्थक तर्क शिरोमणि मल्लवादि सूरिजी माने जाते हैं। उनका मानना है कि ज्ञान और दर्शन दोनों अपने-अपने कर्मावरण का पूर्णत: क्षय होने पर प्रकट होते हैं, अत: दोनों एक रूप नहीं हो सकते। दर्शन सामान्य धर्म को तथा ज्ञान विशेष धर्म को जानने वाली शक्ति है।

जिज्ञासा– अभेदवादी विचारधारा किसे माना गया है?

समाधान–जैन जगत के प्रखर तार्किक आचार्य श्री सिद्धसेन दिवाकर जी को अभेदवादी विचारधारा का प्रमुख समर्थक माना जाता है। उनके मतानुसार ज्ञानोपयोग और दर्शनोपयोग रूप दो भिन्न-भिन्न उपयोग छद्मस्थ अवस्था में ही रहते हैं, क्योंकि छद्मस्थ अवस्था में विभिन्न आवरण विद्यमान होने से सामान्य और विशेष रूप भेद होते हैं। कैवल्य अवस्था में इस प्रकार का भेद नहीं होता है। उसमें विषयों को जानने की एकमात्र ज्ञायक शक्ति होती ही होती है।

इनका यह भी तर्क है कि यदि उपयोगों में समय का अन्तर माना जाये तो ज्ञानोपयोग के समय दर्शनोपयोग नहीं होगा तथा दर्शनोपयोग के समय ज्ञानोपयोग नहीं रहेगा। जब केवलज्ञानी देखते हैं तब जानते नहीं और जब जानते हैं तब देखते नहीं, यदि ऐसा मानें तो उन्हें सर्वज्ञ-सर्वदर्शी नहीं कहा जा सकता है।

ज्ञानावरणीय तथा दर्शनावरणीय दोनों कर्मों का सर्वथा क्षय होने से तेरहवें गुणस्थान में ज्ञानोपयोग-दर्शनोपयोग को कौन आवरि करता है ? अर्थात् कोई भी नहीं। अत: अभेद शक्ति मानना ही उपयुक्त है।

जिज्ञासा– इन तीनों विचारधाराओं में नय दृष्टि से समन्वय किन्होंने किस रूप में किया?

समाधान– विक्रम की सतरहवीं शताब्दी के महान् तार्किक उपाध्याय यशोविजय जी ने इन तीनों विचारधाराओं का नय दृष्टि से समन्वय किया। उन्होंने ऋजुसूत्र नय की दृष्टि से क्रमिक विचारधारा को उचित माना है। यह दृष्टि वर्तमान समय को ग्रहण करती है। पहले समय का ज्ञान कारण है तथा दूसरे समय का दर्शन उसका कार्य है। ज्ञान और दर्शन में कारण-कार्य का क्रम है।

व्यवहार नय की दृष्टि से भेद वाली विचारधारा को संगत माना है तथा संग्रह नय की दृष्टि से अभेदवाली विचारधारा को संगत माना है।

पहले समय में वस्तुगत भिन्नताओं को जानना और दूसरे समय में भिन्नगत-अभिन्नता को जानना स्वभाव सिद्ध है। ज्ञान का स्वभाव ऐसा ही है। भेदोन्मुखी ज्ञान सबको जानता है और अभेदोन्मुखी दर्शन सबको देखता है। अभेद में भेद और भेद में अभेद समाया हुआ है, फिर भी भेद प्रधान ज्ञान और अभेद प्रधान दर्शन का समय एक नहीं होता है।

जिज्ञासा– केवलज्ञान को पाँच ज्ञानों में सबसे अंत में क्यों रखा गया?

समाधान–केवलज्ञान को पाँच ज्ञानों में सबसे अंत में रखने के कतिपय कारण इस प्रकार बतलाये गये हैं–

1. **विशुद्धता**–घाती कर्मों का क्षय होने से यह आवरण रहित है, अत: यह ज्ञान परम विशुद्ध है।
2. **सम्पूर्णता**–यह ज्ञान सकल रूप में उपलब्ध होता है। विकलता से रहित है।
3. **असाधारणता**–केवलज्ञान के समान अन्य कोई भी ज्ञान नहीं है, अत: यह अपूर्व, अद्वितीय तथा असाधारण है।
4. **अनन्तता**–अनन्त द्रव्य, क्षेत्र, काल तथा भावों से युक्त है तथा अनन्तकाल तक अवस्थित रहने से

अप्रतिपाती भी है।

5. **निर्व्याघात**–लोक तथा अलोक में स्थित सम्पूर्ण ज्ञेय पदार्थों को केवलज्ञानी बिना किसी व्याघात के केवलज्ञान से जानते हैं।
6. **अनुपम**–केवलज्ञान की प्राप्ति के समय मति आदि चारों ज्ञान नहीं रहते हैं, यह अकेला ही रहता है, अत: अनुपम है।
7. **अन्त में प्राप्ति**–केवल ज्ञान सबसे अन्त में अर्थात् चरम मनुष्य भव में प्राप्त होता है, इसलिए इसे सबसे अन्त में रखा गया है।

-रजिस्ट्रार, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न
आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राजस्थान)

ये मधुर-मधुर रिश्ते

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

ये मधुर–मधुर रिश्ते, जीवन की धरोहर हैं,
मिलता है सुकून हमको, सुख का यह सरोवर है।
ये मधुर–मधुर रिश्ते......।।टेर।।
रिश्तों की गरिमा को, हृदय से निभाना है,
संशय से दूर रहकर, विश्वास जगाना है।
आङ्गन की खुशहाली, बड़ी लगती मनोहर है,
ये मधुर–मधुर रिश्ते......।।1।।
कटु वचनों को तजकर, सदा प्रीति बढ़ाना है,
हो जाए भूल गर तो, नहीं ध्यान लगाना है।
करें 'लेट गो' शिकवे, जीवन में हितकर हैं,
ये मधुर–मधुर रिश्ते......।।2।।
नहीं गाँठ बाँधना तुम, कोई बात को ले करके,
हर बात को सहना तुम, समभाव में रह करके।
सदा सहनशील बनना, सब अपने प्रियवर हैं,
ये मधुर–मधुर रिश्ते......।।3।।
निभना और निभाना है, जीवन को सजाना है,
मिला समय कीमती है, नहीं उसको गँवाना है।
नहीं रहे क्लेश घर में, समझाते गुरुवर हैं,
ये मधुर–मधुर रिश्ते......।।4।।
रखना है सोच ऊँची, नहीं अपनी टेक रखना,
सम्मान बड़ों को दें, छोटों को स्नेह देना।
माँ–बाप को खुश रखना, ये अपने पूज्यवर हैं,
ये मधुर–मधुर रिश्ते......।।5।।

-जनता साड़ी सेण्टर, फरिश्ता कॉम्पलेक्स,
स्टेशन रोड़, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

हम वन्दन करते हैं

श्रीमती मंजू जैन

(तर्ज :: जब कोई नहीं आता .....)

धन्य पीपाड़नगरी की, मांटी की महक है ये
हस्ती की बगिया के, माली जग में चमकते हैं
गुरु हीरा चरणों में, हम वन्दन करते हैं
गुरु महेन्द्र चरणों में, हम वन्दन करते हैं।
माँ सोहनी के लाला, पितु पारस दुलारे हो
रत्नसंघ की बगिया में, चमकते सितारे हो
हम धन्य हुये ऐसे, गुरुवर को पाकर के
गुरु महेन्द्र चरणों में, हम वन्दन करते हैं।
दुनिया में ढूँढ़ा हमने, ना कोई नज़र आया
जो चाहते थे हम वो, गुण सब तुममें पाया
पाये पुण्य पुरुष ऐसे, जो किस्मत से मिलते हैं
गुरु महेन्द्र चरणों में, हम वन्दन करते हैं।
आज्ञा ही प्रण और प्राण, आज्ञा में सब कुर्बान
दो हमको ये वरदान, तुम हो मेरे भगवान
तेरी हर आज्ञा को हम, सिर पर धारण करते हैं
गुरु महेन्द्र चरणों में, हम वन्दन करते हैं।
उपकार किया तुमने, ना कोई कर सकता
संयम की शिक्षा दे, भटकों को मार्ग दिया
तुम मग्गदयाणं हो, हम दिल से कहते हैं।
गुरु महेन्द्र चरणों में, हम वन्दन करते हैं।
जो दर्शन करता है, आश्चर्य करे भारी
पंचम आरे में भी, खिली चौथे–सी फुलवारी
हम धन्य हुये ऐसे, गुरुवर को पाकर के
गुरु महेन्द्र चरणों में, हम वन्दन करते हैं।
इन पावन चरणों में हम वन्दन करते हैं।

-प्राचार्या, श्री जैन रत्न आ.शि.सं., मानसरोवर,
जयपुर(राज.)

रिपोर्ट

आचार्य हस्ती-स्मृति व्याख्यान माला के अन्तर्गत चातुर्मास, क्षमा एवं सफल व्यक्तित्व पर वेबिनार का आयोजन

डॉ. धर्मचन्द जैन

---

8 अगस्त, 2021 को सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा आचार्य हस्ती स्मृति व्याख्यान-माला के अन्तर्गत 16वीं वेबिनार आयोजित हुई। जिसके प्रमुख वक्ता श्री कुशलचन्दजी गोटेवाला, सवाईमाधोपुर ने **'अध्यात्म उन्नयन का अवसर है चातुर्मास'** विषय पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि वर्ष के 12 माह में चातुर्मास के 4 माह धर्माराधना के लिए विशिष्ट हैं। साधु-साध्वी भी इन चार माह में एक ही स्थान पर स्थिर रहकर आत्मसाधना करते हैं और श्रावक-श्राविकाओं को भी धर्म-साधना के लिए प्रेरित करते हैं। जीव की यतना और धर्म करणी के लिए यह काल अत्यन्त उपयोगी है। दान, शील, तप एवं भाव चतुष्टय में हम विशेष रूप से प्रवृत्त हो सकते हैं तथा अपने जीवन का निर्माण कर सकते हैं। चातुर्मास में श्राविका मण्डल, युवक परिषद् आदि ज्ञानाराधन के क्षेत्र में विशेष प्रगति कर सकते हैं। इसमें प्रतिक्रमण, थोकड़े और आगमों के स्वाध्याय को आगे बढ़ाया जा सकता है। चातुर्मास काल आध्यात्मिक उन्नति में सहायक बनता है।

श्री कुशलचन्दजी गोटेवाला, संयोजक चातुर्मास समिति के द्वारा इस अवसर पर प्रस्तुत किए गए आध्यात्मिक गति-प्रगति-पत्रक का अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष न्यायाधिपति श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया ने लोकार्पण किया और स्वयं ने एक वर्ष तक प्रतिमाह एक दिन मौनव्रत धारण करने का संकल्प लेकर मार्गदर्शन किया। इस आध्यात्मिक गति-प्रगति-पत्रक में ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप के क्षेत्र में आगामी पाँच वर्षों के लिए लक्ष्य निर्धारित करने का प्रावधान किया गया है। प्रत्येक व्यक्ति इस आध्यात्मिक गति-प्रगति-पत्रक को भरकर अपनी आध्यात्मिक प्रगति का संकल्प अवश्य करे। आदरणीय श्रीमान् टाटिया साहब ने आत्मा की ओर लक्ष्य बनाने हेतु महती प्रेरणा की। टाटिया साहब ने यह भी कहा कि चातुर्मास में मिठाई का प्रयोग न हो तो सर्वोत्तम है, यदि मिठाई हो तो उसमें रस का प्रयोग न हो तथा किसी आगन्तुक के अनुसार मीनू में परिवर्तन न हों। डॉ. धर्मचन्दजी जैन ने कहा कि हमें लक्ष्य निर्धारित करके संकल्प लेकर आगे बढ़ना चाहिए। हमारे आत्म-विकारों को दूर करने पर ही आत्मशुद्धि सम्भव है। विकारों को दूर करने में चातुर्मास एक सुअवसर है।

अन्त में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष श्री धर्मचन्दजी जैन ने आदरणीय टाटिया साहब, प्रमुख वक्ता श्री कुशलचन्दजी गोटेवाला एवं वेबिनार से जुड़ने वाले अन्य सभी लोगों का धन्यवाद ज्ञापित किया। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कोषाध्यक्ष श्री रितुलजी पटवा ने बड़ी निपुणता के साथ वेबिनार का कुशल सञ्चालन किया।

19 सितम्बर, 2021 को आयोजित 17वीं वेबिनार के मुख्य वक्ता रहे श्री पदमचन्दजी गाँधी, जयपुर। उन्होंने **'क्षमा का अमृत'** विषय पर विचाराभिव्यक्ति की। उन्होंने कहा कि क्षमा ऐसा अमृत है जो मैत्री और स्नेह की धारा प्रवाहित करता है। क्षमा करने वाले का हृदय पवित्र होता है। बदले की भावना नहीं होने पर ही कोई किसी को क्षमा कर सकता है। क्षमा बिना शर्त के किया जाता है। श्री गाँधी ने भगवान महावीर एवं अनेक साधकों की क्षमाशीलता के उदाहरण प्रस्तुत किए। आत्मशुद्धि के लिए क्षमा अमृत है। वक्ता के उद्बोधन के पूर्व सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री चंचलमलजी बच्छावत, कोलकाता ने वेबिनार में

उपस्थित प्रमुख वक्ता सहित समस्त श्रोताओं का हार्दिक अभिनन्दन किया।

डॉ. धर्मचन्दजी जैन ने कहा कि आज अनन्त चतुर्दशी है, इस दिन क्षमा पर वेबिनार का आयोजन इसकी प्रासङ्गिकता को बढ़ा देता है। उन्होंने कहा कि क्षमा के दोहरे लाभ हैं एक तो क्षमा आत्मशुद्धि का साधन बनता है, दूसरा इससे मैत्री की स्थापना होती है। पारस्परिक द्वेष, मालिन्य एवं कलह के भाव समाप्त हो जाते हैं। यह क्षमा का बहिरङ्ग फल है, आत्मा की मलिनता का दूर होना अन्तरङ्ग फल है। दूसरों के व्यवहार का अगर बुरा न मानें तो कलह का प्रसङ्ग नहीं बनता।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के मन्त्री श्री अशोक कुमारजी सेठ ने प्रमुख वक्ता का धन्यवाद ज्ञापित किया। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कोषाध्यक्ष सी.ए. श्री रितुलजी पटवा ने इस वेबिनार का सुन्दर सञ्चालन किया।

17 अक्टूबर, 2021 को 18वीं वेबिनार का आयोजन हुआ। इसमें **'सफल व्यक्ति की विशेषताएँ' (आचाराङ्गसूत्र में)** विषय पर प्रेरक वक्ता युवारत्न श्री निपुणजी डागा सुपुत्र श्री नरेन्द्रजी डागा, जयपुर ने हावभाव के साथ प्रेरक शैली में उद्बोधन दिया। प्रारम्भ में मंगलाचरण के पश्चात् उनका एवं श्रोताओं का स्वागत सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष श्री विनयचन्दजी डागा द्वारा किया गया।

प्रमुख वक्ता श्री निपुणजी डागा ने आचाराङ्गसूत्र के द्वितीय अध्ययन में वर्णित भिक्षु की 11 विशेषताओं को आधार बनाकर सपल व्यक्ति की विशेषताओं का रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक निरूपण किया। उन्होंने कहा कि जो सफल व्यक्ति होता है वह कालज्ञ होता है। समय को पहचान कर कार्य करता है। वह बलज्ञ होता है, अपनी शक्ति को जानता है एवं उसके अनुसार कार्य में प्रवृत्त होता है। वह मात्रज्ञ होता है, कितनी मात्रा में किस कार्य के लिए समय शक्ति एवं साधन की आवश्यकता है, इसको भली-भाँति जानता है। वह क्षेत्रज्ञ होता है कि कहाँ किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए, इसके साथ ही वह खेद को भी जानता है कि कहाँ कितने श्रम की जरूरत है।

सफल व्यक्ति क्षणज्ञ होता है। वह उचित अवसर को जानता है और प्रत्येक क्षण का महत्त्व समझता है। वह विनयशील होता है, गुणिजनों का आदर करता है और अहंकार से दूर रहकर अपने चित्त को कार्य में एकाग्र करता है। वह अपने सिद्धान्तों का ज्ञाता होता है तथा उसके विपरीत आचरण करने के दोषों को भी जानता है। उसमें दूसरों के भावों को समझने में कुशलता होने से वह भावज्ञ होता है। जिनके साथ व्यवहार करता है, उनके भावों को समझना आवश्यक होता है। भिक्षु की भाँति सफल व्यक्ति जो कुछ अर्जित या प्राप्त करता है उसके प्रति ममत्व नहीं रखता और यथासमय कार्य में प्रवृत्त होता है। वह अपने कार्य को मायाशल्य आदि से रहित होकर सम्पन्न करता है। वह आग्रही नहीं होता। अनेकान्त दृष्टि से वस्तुस्थिति को जानकर कार्य करता है। इस प्रकार इन 11 विशेषताओं से युक्त व्यक्ति जीवन में सफल होता है।

जिनवाणी सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन ने कहा कि आचाराङ्गसूत्र में अनेक ऐसे वाक्य-रत्न बिखरे पड़े हैं जो हमारे जीवन को सफलता की ओर ले जाते हैं। कतिपय सूत्रों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि जो लक्ष्य निर्धारित किया जाय, उसमें हमारी दृष्टि स्पष्ट होनी चाहिए तथा उसमें पूर्ण रूप से तन्मूर्तिक होकर कार्य करना चाहिए। कदाचित् कार्य में निष्फलता होने पर भी शोक नहीं करना चाहिए। पुनः अप्रमत्त होकर कार्य में लग जाना चाहिए। व्यक्ति सफलता प्राप्त होने पर मद नहीं करे और असफल होने पर शोक नहीं करे। दूसरों के साथ मायावी व्यवहार न करे और लोभ पर नियन्त्रण रखे।

अन्त में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के मन्त्री श्री अशोक कुमारजी सेठ ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि आचाराङ्गसूत्र में जो बातें साधुओं के लिए कही गई हैं वे श्रावकों के लिए भी व्यावहारिक जीवन में लागू होती हैं। मण्डल के कोषाध्यक्ष श्री रितुलजी पटवा ने वेबिनार का सञ्चालन अत्यन्त निपुणता के साथ किया।

-संकलन : धर्मेन्द्र कुमार जैन

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

श्री गौतमचन्द जैन

आचार्यश्री हस्ती का साहित्य और समाज को योगदान-सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन, **प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थल**-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, सुबोध बॉयज सीनियर सैकेण्डरी स्कूल के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 (राज.) फोन नं. 0141-2575997, 2. जोधपुर-0291-2624891, 3. अहमदाबाद 9429303088, 4. बेंगलोर-9844158943, 5. जोधपुर-9461026279, 6. जलगाँव-9422591423, **प्रथम संस्करण**-2021, **पृष्ठ**-288 + 31 = 319, **मूल्य**-100 रुपये।

प्रस्तुत पुस्तक स्थानकवासी परम्परा में रत्नसंघ के सप्तमपट्टधर पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. के द्वारा प्रदत्त साहित्य और समाज को योगदान पर विस्तार से विशद रूप में प्रकाश डालती है। प्रस्तुत पुस्तक में मुख्य रूप से 'आचार्यश्री हस्ती का साहित्य और समाज को योगदान' विषय पर पाली-मारवाड़ (राजस्थान) में 13-14 नवम्बर, 2010 को आयोजित राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में विभिन्न विद्वानों के द्वारा प्रस्तुत किये गये शोधपूर्ण लेखों का समावेश किया गया है।

पुस्तक का दो खण्डों में विभाजन किया गया है। प्रथम-खण्ड में 'साहित्य को योगदान' से सम्बन्धित बीस विद्वत्तापूर्ण आलेखों का समावेश किया गया है। द्वितीय-खण्ड में 'समाज को योगदान' के अन्तर्गत चौदह आलेख सम्मिलित हैं।

पुस्तक के प्रारम्भ में ही अध्यात्म-योगी युगमनीषी आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. की जीवन रेखा प्रस्तुत करते हुए कल्याणकारी संस्थाओं की सूची प्रस्तुत की गई है, इससे उनके विराट् व्यक्तित्व एवं साहित्य और समाज को योगदान की स्पष्ट झलक पाठकों को प्राप्त हो जाती है।

पूज्य आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. के उद्बोधनों से सज्जित इस पुस्तक के प्रथम खण्ड में प्रमुख आलेख हैं- आचार्यश्री हस्ती की काव्य साधना-डॉ. नरेन्द्रजी भानावत, उनके काव्यपदों में आध्यात्मिकता-श्री सम्पतराजजी चौधरी, इतिहास-दर्शन, संस्कृति-संरक्षण-डॉ. प्रेमसुमनजी जैन, आगम-टीका परम्परा को आचार्यश्री का योगदान-डॉ. धर्मचन्दजी जैन, आचार्यश्री हस्ती की 'तत्त्वाधिगम गीता' का वैशिष्ट्य-प्रो. गणेशीलालजी सुथार, आचार्यश्री की दार्शनिक मान्यताएँ-डॉ. सुषमाजी सिंघवी, 'श्रीमन्नन्दीसूत्रम्' का सम्पादकीय वैशिष्ट्य-प्रो. सत्यप्रकाशजी दुबे आदि। आचार्यश्री हस्ती की कृति आध्यात्मिक आलोक, गजेन्द्र व्याख्यानमाला, अंतगडदसासूत्र-विवेचन, दशवैकालिकसूत्र-सम्पादन एवं टीका, जैन आचार्य चरितावली, कुलक कथाएँ, प्रार्थना-प्रवचन, जैनधर्म का मौलिक इतिहास आदि को आधार बनाकर विद्वानों के द्वारा प्रस्तुत आलेख इसमें समाविष्ट हैं।

आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. ने साहित्य जगत् की अनेक विधाओं में उच्चकोटि की रचनाएँ की हैं, वे कालजयी हैं।

पुस्तक के द्वितीय खण्ड में आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. का समाज को योगदान का विस्तार से वर्णन किया गया है। इसके अन्तर्गत स्वाध्याय, सामायिक, स्वाध्याय संघ, साधना-विभाग, चरित्र-निर्माण, संघ-ऐक्य, नारी-जागरण, आधुनिक समस्याओं के समाधान आदि के सम्बन्ध में विद्वज्जनों के महत्त्वपूर्ण आलेख उपलब्ध हैं। न्यायाधिपति श्री जसराजजी चौपड़ा, श्री चंचलमलजी चोरड़िया, प्रो. दयानन्दजी भार्गव, डॉ. दिलीपजी धींग, डॉ. मंजुलाजी बम्ब आदि के आलेखों में उपर्युक्त विषयों पर प्रकाश डाला गया है।

पोरवाल, पल्लीवाल, मारवाड़, महाराष्ट्र, जयपुर, दक्षिण भारत आदि क्षेत्रों में आचार्यप्रवर के योगदान विषयक लेखों में विद्वत्श्रावकरत्न श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना, श्री विमलचन्दजी डागा, श्री धर्मेन्द्र कुमारजी जैन, श्री अशोक कुमारजी जैन, श्री कस्तूरचन्दजी बाफना, डॉ.

दिलीपजी धींग आदि ने विशद विवेचन किया है।

सम्पूर्ण समाज के विकास के लिए उनका सतत चिन्तन एवं दीर्घदृष्टि रहती थी। प्रस्तुत पुस्तक के अध्ययन से आचार्यश्री हस्ती के साहित्य एवं समाज को योगदान की पाठक को सम्पूर्ण एवं विशद जानकारी प्राप्त होती है, जिससे पाठक उनके प्रति श्रद्धा से नतमस्तक हो जाता है। पुस्तक मनीषी विद्वानों के आलेखों से समृद्ध है और सभी सुज्ञजनों के लिए पठनीय एवं प्रेरणास्पद है।

जीने की राह-लेखक-श्री रणजीतसिंह कूमट (सेवानिवृत्त आई.ए.एस.), **प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थल**-प्राकृत भारती अकादमी, 13 ए, गुरु नानक पथ, मेन मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राजस्थान), **प्रथम संस्करण**-2021, ISBN : 978-81-952891-6-5, **पृष्ठ**-174, **मूल्य**-225 रुपये।

प्रस्तुत पुस्तक 'जीने की राह' वास्तव में अपने नाम को सार्थक करती है और पाठक को जीने की राह दिखाने वाली है। लेखक ने जीवनोपयोगी अनेक विषयों पर अपने लेखों के माध्यम से शास्त्र-सम्मत एवं अनुभूत तथा स्पष्ट मौलिक विचार प्रस्तुत किये हैं, जो पाठक के लिए विचारणीय एवं ग्राह्य हैं। लेखक ने आध्यात्मिक परिपक्वता, आत्मसिद्धि, स्वयं सत्य का अन्वेषण करें आदि महत्त्वपूर्ण विषयों पर शोधपरक एवं अनुभूतिपरक विचार प्रस्तुत किये हैं। आध्यात्मिक कौन, प्यार ही संसार, सच्चा मित्र, जो दीप जलाये माटी के, मिले सुर मेरा तुम्हारा, पंछी बैठा तू क्यों डगर पर, मस्ती ही मुक्ति और मेरी शरण में आ जाओ, मामेकं शरण व्रज-शीर्षकों से युक्त कण्ठस्थ करने योग्य सुन्दर कविताओं का भी पुस्तक में समावेश किया गया है। सहनशीलता, मैत्रीभाव, सेवा और दान, गीता में ध्यान योग तथा धर्मध्यान एवं विपस्सना विषयक लेखों में लेखक ने शास्त्रीय उद्धरण प्रस्तुत कर तर्कसंगत एवं सहजबुद्धि गम्य विचार प्रस्तुत किये हैं, जो सहज स्वीकार्य हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में कतिपय महापुरुषों एवं उपकारी महानुभावों के जीवन-परिचय के साथ प्रेरक-प्रसङ्गों का भी उल्लेख किया गया है। 'रात्रि-भोजन त्याग से सम्बन्धित आध्यात्मिक और शारीरिक लाभ' शीर्षक लेख में तर्क संगत प्रेरणादायी विचार प्रस्तुत किये गये हैं। 'आचार्य में नेतृत्व कला' विषयक लेख में नेतृत्व सम्बन्धी गुणों का विशद विवेचन किया गया है। पुस्तक के अन्त में महावीर स्मारक सेवा समिति, अजमेर का परिचय दिया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक सभी सुधी पाठकों के लिए पठनीय एवं सुखी तथा आनन्दमय जीवन जीने के लिए पथ-प्रदर्शक है।

जीवन के रंग-जीवन के संग-लेखक-सी.ए. सुशील भण्डारी, **प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थल**-राजस्थानी ग्रन्थागार, प्रथम माला, गणेश मन्दिर के सामने, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर (राजस्थान) फोन नं. 0291-2657531, 2623933, Email : info@rgbooks.net, Web : www.rgbooks.net, ISBN : 978-93-91446-15-4, **संस्करण**-2021, **पृष्ठ**-110, **मूल्य**-150 रुपये।

प्रस्तुत पुस्तक 'जीवन के रंग-जीवन के संग' में लेखक ने अपने अमूल्य विचारों को कलमबद्ध करके संकलित किया है। इनमें से कई लेख पूर्व में कई पत्र-पत्रिकाओं में भी प्रकाशित हुए हैं। पुस्तक को पाँच भागों में विभक्त किया गया है। प्रथम भाग में संस्कार और शिक्षा से सम्बन्धित चार लेख हैं। द्वितीय भाग में मनुष्य के सामाजिक एवं व्यावहारिक जीवन से सम्बन्धित ग्यारह लेख हैं। तृतीय भाग में राष्ट्र से सम्बन्धित बारह विषयों पर चर्चा प्रस्तुत की गई है। चतुर्थ भाग में धार्मिक एवं आध्यात्मिक विषयों पर महत्त्वपूर्ण विचारों का संकलन है और पाँचवें भाग में कोरोना महामारी और मानव को केन्द्र में रखकर मानव में मानवता जागृत करने का सफल प्रयास किया गया है।

लघु लेखों से संपृक्त सम्पूर्ण पुस्तक सभी के लिए पठनीय, विचारणीय एवं प्रेरणादायी है।

-पूर्व डी.एस.ओ., 70, 'जयणा', विश्वकर्मा नगर-द्वितीय, महारानी फॉर्म, जयपुर (राजस्थान)

पर्युषण-रिपोर्ट

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के 238 स्वाध्यायियों द्वारा 105 क्षेत्रों में पुर्यषण पर्वाराधना सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा विगत 76 वर्षों से, जैन सन्त-सतियों के चातुर्मास से वञ्चित ग्राम/नगरों में विद्वान्, क्रियावान, योग्य एवं अनुभवी स्वाध्यायियों को भेजकर अष्ट दिवसीय पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की साधना एवं आराधना का महान् रचनात्मक कार्य किया जा रहा है। इस संघ के लगभग 1,200 स्वाध्यायी सदस्य हैं, जिनमें से अधिकांश स्वाध्यायी पर्युषण के लिए संघ द्वारा निर्देशित क्षेत्रों में जाकर अपनी अमूल्य सेवाएँ प्रदान करते हैं। अनेक स्वाध्यायी ऐसे भी हैं, जो व्यावहारिक जगत् में न्यायाधिपति, चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट, इञ्जीनियर, प्रोफेसर, प्रशासनिक अधिकारी, एडवोकेट, उद्योगपति, व्यापारी, शिक्षक आदि प्रतिष्ठित पदों पर कार्यरत होते हुए भी अपनी बहुमूल्य सेवाएँ संघ को प्रदान कर रहे हैं। अनेक स्वाध्यायी, स्नातक, बी.एड., एल.एल.बी., पी-एच.डी. एवं एल.एल.एम. जैसी वरिष्ठ उपाधियों से अलंकृत हैं। पर्युषण पर्व दिवस में सभी स्वाध्यायी अपना अमूल्य समय निकाल कर अपने आप सेवा प्रदान करने को उत्साही रहते हैं।

इस वर्ष पर्युषण पर्व 04 से 11 सितम्बर, 2021 तक मनाया गया। पर्वाराधना में उत्तरप्रदेश, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान में मेवाड़, मारवाड़, पोरवाल-पल्लीवाल आदि क्षेत्रों में विभिन्न छोटे-बड़े दूर एवं निकट के 105 क्षेत्रों में 238 स्वाध्यायियों द्वारा अपनी उल्लेखनीय सेवाएँ प्रदान की गईं। सभी स्थानों पर सामायिक, दया, संवर, उपवास, पौषध तथा छोटी-बड़ी अनेक तपस्याएँ सम्पन्न हुईं। स्वाध्यायियों द्वारा सभी स्थानों पर ज्ञान वृद्धि हेतु शिविर तथा अन्य कार्यक्रमों के साथ ही विभिन्न प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की गईं।

महाराष्ट्र क्षेत्र

नरडाणा	श्री मनोजजी संचेती, जलगाँव
	श्री सुरेशजी विनायकिया, जलगाँव
	श्री राजेन्द्रजी कवाडिया, जलगाँव
वणी	श्री शुभमजी बोहरा, जलगाँव
	श्री सन्देशजी जैन, पुणे
	श्री हर्षजी सेठिया, शिरपुर
परतवाडा	सौ. रसीलाजी बरडिया, जलगाँव
	कु. राशिजी जैन, जलगाँव
रत्नागिरी	श्री रोशनजी चौपड़ा, जलगाँव
	श्री यशजी जैन, जलगाँव
पारशिवनी	श्री सचिनजी जैन, वरणगाँव
	श्री चन्द्रकान्तजी हिरण, घोड़नदी
वरणगाँव	सौ. किरणजी कोठारी, बोदवड़
	कु. गरिमाजी खिंवसरा, तोंडापुर
	सौ. रत्नाबाईजी धोका, बोदवड़
नागद	सौ. मंगलाजी ललवानी, शिरूड़
	सौ. मनीषाजी भण्डारी, शिरूड़
	सौ. सरलाजी वेदमुथा, नागद
दुसरबीड़	श्री नेमीचन्दजी देसर्डा, पुणे
	श्री चैनकरणजी कटारिया, जलगाँव
	श्री सुरेशजी लोढ़ा, पुणे
वालुज	श्री दीपचन्दजी बोथरा, पाचोरा
	श्री मनीषजी जैन, जलगाँव
वाशिम	श्री नन्दलालजी जैन, उनियारा
	श्री सक्षमजी जैन, जयपुर सिद्धान्तशाला
तोंडापुर	सौ. सुनन्दाजी सांखला, जलगाँव
	सौ. चन्द्रकलाजी सुराणा, जलगाँव

चिखली	श्री रितेशजी सुराणा, जलगाँव
	श्री नरेशजी कांकरिया, जलगाँव
धरणगाँव	श्री मुकेशजी चोरडिया, पारोला
	श्री निलेशजी चोरडिया, पारोला
	श्री कल्याणमलजी धाडीवाल, कजगाँव
चांदुर रेलवे	श्री ललित कुमारजी चोरडिया, शिरपुर
	श्री कपिलजी जैन, जयपुर सिद्धान्तशाला
मांडल	सौ. तिलोत्तमाजी ओस्तवाल, भडगाँव
	सौ. मायाजी श्रीश्रीमाल, भडगाँव
मुक्ताई नगर	श्रीमती लीलाजी सालेचा, जलगाँव
	कु. मृणालजी खिंवसरा, माण्डल
	कु. श्रद्धाजी जैन, जलगाँव
इच्छापुर	सौ. अनिताजी लूंकड़, जलगाँव
	कु. दियाजी कोठारी, जलगाँव
	सौ. राजश्री बडोला, जलगाँव
चांगुटोला	डॉ. वर्धमानजी लोढ़ा, मालेगाँव
	सौ. उषाजी लोढ़ा, मालेगाँव
चौपड़ा	श्री शिखरजी छाजेड़, करही
	श्री विमलजी तातेड़, इन्दौर
रालेगाँव	कु. तन्वीजी खिंवसरा, मुकटी
	कु. कोमलजी खिंवसरा, धुलिया
	श्रीमती उषाजी धोका, धामणगाँव
शिरूड़	सौ. आशाजी खिंवसरा, तोंडापुर
	कु. रियाजी जैन, जलगाँव
	श्रीमती उषाजी चोरडिया, भडगाँव
सौंदाणा	श्री महावीरजी आंचलिया, मुम्बई
	सौ. अंजलीजी आंचलिया, मुम्बई
	श्री दक्षजी आंचलिया, मुम्बई
उम्बरखेड़	सौ. सुजाताजी पारख, वाघली
	कु. आंचलजी खिंवसरा, तोंडापुर
विटनेर	सौ. मंगलाजी वेदमुथा, वाघली
	सौ. जयश्रीजी छाजेड़, धुलिया
मुकटी	सौ. शोभाजी ललवाणी, भुसावल
	सौ. सीमाजी कोटेचा, भुसावल
जायखेड़ा	सौ. निर्मलाजी दुधेडिया, जलगाँव
	श्रीमती दर्शनाजी अजमेरा, जलगाँव
बडनेरा	सौ. छायाजी भण्डारी, जलगाँव
	सौ. पदमाजी चंगेडिया, इचलकरणजी
	सौ. अंजलीजी डोसी, जलगाँव
	श्री विरागजी कोठारी, जलगाँव
पिलखोड़	श्रीमती कमलाबाईजी पगारिया, धरणगाँव
	सौ. लताजी मुथा, नाशिक
भोपाल	श्री राजमलजी संचेती, अमलनेर
	श्री चेतनजी धाडीवाल, कजगाँव
भड़गाँव	श्री कन्हैयालालजी जैन, भीलवाड़ा
	श्री अम्बालालजी चंडालिया, प्रतापगढ़
पलासखेड़ा	सौ. बसन्ताजी संकलेचा, नरडाणा
	श्रीमती चन्दनबालाजी अलीझाड़, शिरूड़
मांगलादेवी	वैरागन मुमुक्षु मधुबालाजी दर्डा, धुलिया
	सौ. पूजाजी नाहर, मांगलादेवी
	श्री स्वरूपचंदजी खिंवसरा, मांगलादेवी
होलनांथा	कु. पायलजी पारख, होलनांथा
	कु. करिश्माजी सुराणा, होलनांथा
कासारे	सौ. मंगलाजी पारख, कासारे
भोपाल	श्री अलंकारजी मुणोत, भोपाल
	श्रीमती हेमलताजी वणी, महेश्वर
	श्रीमती शकुंतलाजी जैन, बैतुल

मध्यप्रदेश क्षेत्र

बागली	श्री लक्ष्यजी जैन, सवाई माधोपुर
	श्री हर्षितजी जैन, सवाई माधोपुर
	श्री सौरभजी जैन, सवाई माधोपुर
हातोद	श्री पारसजी जैन, नैनवा
	श्री अरिहंतजी जैन, दुणी

सिवनी माल्वा	श्री महावीर प्रसादजी जैन, बजरिया
	श्री श्यामसुन्दरजी जैन, आवासन मण्डल
करही	श्री प्रकाशजी जैन, जयपुर
	श्री कान्ताजी जैन, जयपुर
	विरक्ता प्रियलजी जैन, जोधपुर
	श्री सहज सुराणा, चेन्नई
मगरदा	श्री अभिषेकजी नाहर, इंदौर
	श्री विमलजी पोरवाल, इंदौर

मेवाड़ क्षेत्र

दरीबा माइन्स	श्री इन्द्रसिंहजी कोठारी, भीलवाड़ा
	श्री पारसजी पारलेचा, चित्तौड़गढ़

मारवाड़ क्षेत्र

आसोप	श्री कांतिलालजी जैन, आसोप
	श्री शांतिलालजी जैन, आसोप
आगोलाई	श्रीमती शकुंतलाजी हींगड़, पाली
	सुश्री पूर्णिमाजी गाँधी, जोधपुर
जालोर	श्री जेठमलजी मुणोत, जोधपुर
	श्री नवरतनजी डागा, जोधपुर
	श्री शिखरजी बोहरा, जोधपुर
मेड़ता सिटी	कु. नेहाजी चोरडिया, जलगाँव
	श्री निपुणजी डागा, जयपुर
	श्रीमती महकजी डागा, जयपुर

पोरवाल क्षेत्र

उनियारा	श्री देशराजजी मीणा, उखलाणा
	श्री धनरूपजी मीणा, उखलाणा
अलीगढ़	श्रीमती मोहनकौरजी जैन, जोधपुर
	विरक्ता कल्याणीजी, जोधपुर
बाबई	श्री पंकजजी जैन, चौथ का बरवाड़ा
	श्री बाबूलालजी जैन, सवाई माधोपुर
सुमेरगंज मण्डी	श्री रतनलालजी जैन, कुश्तला
	श्री बाबूलालजी जैन, महावीरनगर स.मा.
दुणी	श्री अनिलजी जैन, कोटा
	श्री महावीरप्रसादजी जैन, कोटा
पचाला	श्री प्रमोदजी जैन, चौथ का बरवाड़ा
कुश्तला	श्रीमती राजेशजी जैन, सवाई माधोपुर
	श्रीमती विमलाजी जैन, सवाई माधोपुर

महावीर नगर, सवाईमाधोपुर

	श्री सुभाषजी हुण्डीवाल, जोधपुर
	विरक्ता दिव्याजी जैन, जोधपुर

आवासन मण्डल, सवाईमाधोपुर

	श्री शान्तिलालजी गाँधी, सिंगोली
	श्री सन्तोषजी गाँधी, सिंगोली

बजरिया, सवाईमाधोपुर

	श्री मानसिंहजी खारीवाल, भीलवाड़ा
	श्री राकेशजी जैन, जयपुर
	श्री मीतजी खारीवाल, भीलवाड़ा

आदर्श नगर, सवाईमाधोपुर

	श्री सागरमलजी सर्राफ, उदयपुर
	सुश्री कविताजी जैन, सवाई माधोपुर
श्योरपुरकलाँ	श्री महावीरजी जैन, गंगापुर सिटी
	श्री नरेशजी जैन, श्योरपुरकलाँ
इन्द्रगढ़	श्री पारसजी जैन, इन्द्रगढ़
	श्री चम्पकजी जैन, इन्द्रगढ़
देवली	श्री लल्लुलालजी जैन, आवासनमण्डल
	श्री प्रज्वलजी जैन, सवाई माधोपुर
जरखोदा	श्री शिवकुमारजी जैन, जरखोदा

पल्लीवाल क्षेत्र

खेरली	श्री सुरेशजी जैन, खेरली
	श्री महेन्द्रजी जैन, खेरली
खोह	कु. पूर्वीजी जैन, खोह
	कु. हर्षिताजी जैन, खोह
हिण्डौन सिटी	श्री कुशलचंदजी गोटेवाला, सवाईमाधोपुर

	श्री कनिष्कजी जैन, बजरिया
गंगापुर सिटी	श्रीमती आशाजी जैन, सवाई माधोपुर
	श्रीमती रूपाजी जैन, सवाई माधोपुर
नदबई	श्रीमती विमलाजी चौपड़ा, जोधपुर
	श्रीमती विमलाजी मुल्तानी, जोधपुर
	सुश्री आयुषीजी जैन, नदबई
मण्डावर	श्री मुन्नालालजी भण्डारी, जोधपुर
	श्री जगदीशमलजी कुम्भट, जोधपुर
	श्री रमेशजी भण्डारी, जोधपुर
भरतपुर	श्री रिंकुजी जैन, उज्जैन
	श्री योगेशजी जैन, हिण्डौन सिटी
	श्री मनीषजी जैन, सवाई माधोपुर
बडौदामेव	श्री प्रसुनजी जैन, खौह
	श्रीमती खुशबूजी जैन, खौह
गोपालगढ़, भरतपुर	
	श्री पारसचंदजी जैन, भरतपुर
पहरसर	श्रीमती प्रियदर्शनाजी जैन, आवासनमण्डल
	कु. साक्षीजी जैन, चौथ का बरवाड़ा
अम्बेडकर कॉलोनी, अलवर	
	श्रीमती सुशीलाजी जैन, नदबई
	श्रीमती सुभद्राजी जैन, अलवर
नसिया गंगापुर	श्रीमती सुधाजी जैन, गंगापुर सिटी

अन्य क्षेत्र

कोलकाता	श्री धर्मेन्द्रजी जैन, जयपुर
	श्री गजेन्द्रजी जैन, जयपुर
सिलवासा	श्री राकेशजी जैन, शिरपुर
	श्री विनोदजी छल्लाणी, सूरत
नारनोल	श्री राकेशजी जैन, सुमेरगंज मण्डी
	श्री पदमचन्दजी गोटेवाला, बजरिया
दूदू	श्री सुरेशजी हींगड़, पहुंना
	श्री शान्तिलालजी बाफना, सूरत
	सुश्री मोनाजी बाफना, गोटन
	सुश्री सिमरनजी जैन, मेड़ता सिटी
बलरामपुर	श्री गोपाल राजजी अबानी, जोधपुर
	श्री रविजी मुथा, जोधपुर
उमरगाँव	श्रीमती पुष्पाजी मुथा, पीपाड़ सिटी
	सुश्री अंजलीजी लुणावत, पीपाड़ सिटी
	श्री अखिलजी लुणावत, पीपाड़ सिटी
प्रतापनगर, जयपुर	
	श्री त्रिलोकजी जैन, जयपुर
	श्रीमती सुनीताजी मेहता, जोधपुर
	विरक्ता मोनिकाजी जैन, जोधपुर

चेन्नई (तमिलनाडु) क्षेत्र

एम.एम.डी. कॉलोनी	श्री बुधमलजी बोहरा, चेन्नई
	श्री सुनीलजी सांखला, चेन्नई
	श्री राजमलजी बेगानी, चेन्नई
एम.के.बी. नगर	श्री राजेशजी ललवानी, चेन्नई
	श्रीमती इन्द्राजी कोठारी, चेन्नई
	श्रीमती ताराजी बाफना, चेन्नई
	श्रीमती मिट्ठूबाईजी कर्णावट, चेन्नई
कृष्णागिरी	श्री अशोकजी बाफना, चेन्नई
कावेरीपाक्कम	श्री नवरतनजी बाघमार, चेन्नई
कोंडितोप	श्रीमती शकुनजी गुलेच्छा, चेन्नई
	श्री निखिलजी कांकरिया, चेन्नई
	श्री राकेशजी खिंवसरा, चेन्नई
कडम्बातुर	श्रीमती प्रेमाबाईजी बोहरा, चेन्नई
कलाकुरची	श्री अभयजी सुराणा, चेन्नई
	श्रीमती विनीताजी सुराणा, चेन्नई
माधावरम फ्लेट	श्री रविन्द्रजी बोथरा, चेन्नई
तिरूपति	श्री कमलचन्दजी ओस्तवाल, चेन्नई
	श्री विनोदजी जैन, चेन्नई
तिरूवनमियूर	श्री मोहितजी छाजेड़, चेन्नई

	श्री विरेन्द्रजी कांकरिया, चेन्नई
होसुर	श्री जम्बुजी पीपाड़ा
	श्री सतीशजी मुणोत, चेन्नई
	श्री सम्पतराजजी बाघमार, चेन्नई
पोलुर	श्री महावीरचन्दजी बाघमार, क्रोमपेठ
	श्री विमलचन्दजी मुथा, पल्लीपट्ट
पट्टाभिरम	सुश्री आरतीजी जांगड़ा, चेन्नई
	श्री रमेशचन्द्रजी जांगड़ा, क्रोमपेठ
	श्रीमती सज्जनबाईजी बोहरा, चेन्नई
पूनमल्लई	श्रीमती मालाजी भंसाली, चेन्नई
	श्री दिलीपजी चौपड़ा, चेन्नई
	श्री प्रसन्नचन्दजी भंसाली, चेन्नई
पल्लीपेठ	श्री गौतमचन्दजी मोहनोत, चेन्नई
	श्री निर्मलजी बोहरा, चेन्नई
पल्लावरम	श्री आशीषजी सुराणा, क्रोमपेठ
	श्री जिनेन्द्रजी जैन, चेन्नई
	श्री प्रेमजी हुण्डीवाल, चेन्नई
शेनॉय नगर	श्री राजेन्द्र कुमारजी बाघमार, चेन्नई
स्वाध्याय भवन, चेन्नई	
	श्री अशोकजी रांका

	श्री बादलचन्दजी बाघमार, चेन्नई
	श्री चम्पालालजी बोथरा, चेन्नई
वडप्पलानी	श्री सुनीलजी ललवाणी, चेन्नई
	श्री रमेशजी कांकरिया, चेन्नई
तेरापंथ नगर, माधवरम	
	श्रीमती चन्द्राजी बोथरा, चेन्नई
नंगनल्लुर	श्री महावीर चन्दजी तातेड़, चेन्नई
	श्री नवरतनमलजी चोरडिया, चेन्नई
तुंगम्बाक्कम	श्री दिलीपजी धींग, चेन्नई
	श्री प्रणतजी धींग, चेन्नई
	श्री सुपारसजी चोरडिया, चेन्नई
अंकुरवाणी	श्री पीयूषजी ओस्तवाल, चेन्नई
आरकोट	श्री प्रेमचन्दजी बाफना, चेन्नई
आलन्दुर	श्री ज्ञानचन्दजी बाघमार, चेन्नई
	श्री लीलमचन्दजी बाघमार, चेन्नई
	श्री सुमेरमलजी बाघमार, चेन्नई
गुडियात्तम	श्रीमती इन्द्राजी चोरडिया, चेन्नई
	श्रीमती मंजूलाजी पीपाड़ा, चेन्नई

-संयोजक, सुभाष हुण्डीवाल
-सचिव, सुनील संकलेचा
श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर (राज.)

कन्या

जिस घर में कन्या पैदा होती है,
वह घर पावन हो जाता है।
जिस घर में कन्या ब्याही जाती है,
वह घर सुखमय हो जाता है।
तपती धूप में छॉव है बेटियाँ,
दिखावे की दुनिया में गुप्तदान है बेटियाँ।
टिका जिनसे परिवार वह बुनियाद है बेटियाँ,
घर की शान और ख्वाब बनाती हैं बेटियाँ

परिवार रूप महल की नींव हैं बेटियाँ

झुकना अच्छा है

फल आने से वृक्ष झुक जाते हैं।

सम्पत्ति आने के समय सज्जन भी नम्र होते हैं या झुक जाते हैं। परोपकारियों का स्वभाव ऐसा ही है। विश्व में कर्म की प्रधानता है। मनुष्य जैसा कर्म करता है, उसको वैसा ही फल मिलता है।

-संकलनकर्त्ता : श्री पीरचन्द चोरड़िया
-जोधपुर (राजस्थान)

ISSN 2249-2011

समाचार विविधा

पीपाड़ में आचार्यप्रवर एवं भावी आचार्यप्रवर की सन्निधि में तप-त्याग, शीलव्रत, ओली तप आदि की सोल्लास आराधना

जिनशासन गौरव, आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, व्यसनमुक्ति-रात्रिभोजन त्याग एवं शीलखंध के प्रबल प्रेरक, रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर परम **श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., भावी आचार्य** महान् अध्यवसायी **परम श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-6** श्रीमती शरदचन्द्रिका मोफतराज मुणोत सामायिक-स्वाध्याय भवन में एवं **व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा., महासती श्री प्रतिष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-3** महिला स्वाध्याय भवन, पीपाड़ शहर में चातुर्मासार्थ सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

परमाराध्य पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के मुखारविन्द से स्वयं के शासनकाल में ही 'भावी आचार्य' की घोषणा किये जाने पर सम्पूर्ण भारत के जैन जगत् एवं श्रद्धालुओं में हर्षोल्लास का सञ्चार होने से दर्शनार्थ उपस्थिति एवं विनति के साथ शुभकामनाओं-बधाइयों का तांता लगा हुआ है।

हर्ष का विषय है कि मुमुक्षु प्रियलजी जरगड़-जयपुर, मुमुक्षु श्रुतिजी नागसेठिया-शिरपुर, मुमुक्षु श्री अंशजी हीरावत-जयपुर के परिवारजन, रिश्तेदार और आत्मीयजन ने आकर आज्ञा-पत्र प्रदान किये हैं।

सुश्रावक श्री सोहनलालजी कांकरिया (साथिन वाले), पीपाड़ ने 27 उपवास की तपस्या पूर्ण कर 'नक्षत्र-मासखमण' का तपार्घ्य अर्पित किया एवं इनकी सुपुत्रवधू सुश्राविका श्रीमती डिम्पलजी धर्मपत्नी श्री जितेन्द्रजी कांकरिया ने 15 उपवास की तपाराधना की। तपाराधक श्री जितेन्द्रजी बोहरा ने तथा धर्मपत्नी सुश्राविका श्रीमती सुमनजी बोहरा, पीपाड़ ने 15-15 उपवास की तपाराधना सम्पन्न की। तपाराधिका सुश्री सपनाजी सुपुत्री श्री दौलतराजजी बोहरा ने 11 उपवास की, सुश्राविका श्रीमती सन्तोषजी धर्मपत्नी श्री महावीरजी बोहरा, पीपाड़ ने 9 उपवास की तपाराधना, सुश्राविका श्रीमती संगीता धर्मपत्नी श्री बाबूलालजी सुराणा, पीपाड़ एवं तपाराधिका बहिन श्रीमती सुवर्णाजी मराठा दोनों ने 8-8 उपवास की तपाराधना पूर्ण की। 10 तेले भी सम्पन्न हुए हैं।

पूज्य आचार्यप्रवर के 59वें दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में एकाशन के 59 सिद्धितप का लक्ष्य रखा गया था, जिसमें बढ़-चढ़कर प्रत्याख्यान ग्रहण किये जा रहे हैं। पीपाड़ से 52 एवं पीपाड़ से बाहर रहने वाले श्रद्धालुओं द्वारा 10 से अधिक सिद्धितप आराधना की जा रही है। नवपद आयम्बिल ओली में 12 से 20 अक्टूबर तक सभी संघों के 35 श्रद्धालुओं द्वारा आयम्बिल तप किया गया। तेले की लड़ी, आयम्बिल की लड़ी, एकाशन की लड़ी बद्ध तपाराधना सतत चल रही है।

शरद पूर्णिमा के पावन प्रसङ्ग पर रात्रि में 15-15 सामायिक साधना पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवन्त की चरण सन्निधि में स्थानक में चारों संघों के श्रावकों ने तथा व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. की सन्निधि में चारों संघों की श्राविकाओं ने की।

शीलव्रत ग्रहण-23 जुलाई को पीपाड़ चातुर्मास प्रारम्भ होने से 26 अक्टूबर, 2021 तक अग्राङ्कित श्रावकों द्वारा गुरुदेव के मुखारविन्द से सदार आजीवन शीलव्रत अङ्गीकार किया गया-(1) श्री सागरजी सेठिया सदार-शिरपुर, (2) श्री महावीरचन्दजी डेडिया सदार-रियाँ बड़ी, (3) श्री राजेन्द्रजी बाघमार सदार-कोसाणा-

चेन्नई, (4) श्री चन्दनमलजी रूणवाल सदार-हरसोलाव-मैसूर, (5) श्री अंकितजी जैन-इन्दौर, (6) श्री पवन कुमारजी जैन सदार-मण्डावर-(दौसा), (7) श्री रमेशजी सिंघवी सदार-गायत्रीनगर-जोधपुर, (8) श्री विजयराजजी बाफना सदार-भोपालगढ़/शाहपुर मुम्बई, (9) श्री शिवकुमारजी जैन सदार-जरखोदा (10) श्री रमेश नथमलजी बरड़िया सदार-धुले, (11) श्री रमेशजी पोरवाल सदार-नवसारी/सवाईमाधोपुर, (12) श्री नेमीचन्दजी चोरड़िया सदार (पीपाड़ वाले)-चेन्नई, (14) श्री इन्दरचन्दजी कोठारी सदार-विल्लुपुरम, (15) श्री ज्ञानचन्दजी तातेड़ सदार-मेड़तासिटी, (16) श्री प्रकाशजी रांका सदार-मधुर, मण्डिया-मैसूर, (17) श्री अनोप कुमारजी कोचर सदार-लासूर स्टेशन, (18) श्री आनन्द कुमारजी कोचर सदार-लासूर स्टेशन, (19) श्री प्रकाशचन्दजी ढड्ढा सदार-जयपुर, (20) श्री अमृतजी गुलेच्छा सदार-जोधपुर, (21) डॉ. धर्मचन्दजी जैन सदार (मधुजी)-जयपुर (22) श्री रमेश कुमारजी गुन्देचा सदार (सोजत रोड वाले)-बैंगलोर।

15-16 अक्टूबर को आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, जयपुर (सिद्धान्त शाला) के सभी छात्र, अपने अधिष्ठाता सुश्रावक श्री दिलीपजी जैन के साथ पीपाड़ पूज्य आचार्य भगवन्त की चरण सन्निधि में रहे एवं जलगाँव स्वाध्याय संघ से 60 सदस्यीय समूह 24 अक्टूबर को पीपाड़ आया। सभी ने पूज्य आचार्य भगवन्त, भावी आचार्यप्रवर, श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा. के द्वारा जीवन-निर्माण के सूत्र प्राप्त किए।

सम्पूर्ण भारत से श्रद्धालुओं एवं श्री संघों का दर्शनार्थ एवं विनति हेतु आवागमन चल रहा है। अनेकानेक स्थानों से आगमन सतत गतिशील है।

संघहित चिन्तन एवं संघीय क्रिया-कलापों हेतु समय-समय पर परमाराध्य पूज्य आचार्यप्रवर की सेवा में पीपाड़ के श्री मोफतराज पी. मुणोत, श्री कैलाशजी हीरावत, श्री गौतमजी हुण्डीवाल, श्री नौरतनमलजी मेहता, सुश्राविका श्रीमती (डॉ.) मंजुलाजी बम्ब एवं श्री धनपतजी सेठिया, श्री मनमोहनजी कर्णावट, श्री प्रकाशजी सालेचा, सुश्राविका श्रीमती बीनाजी मेहता, श्री प्रमोदजी लोढ़ा, श्री कान्तिलालजी चौधरी, श्री महेन्द्रजी कटारिया, श्री सुमेरसिंहजी बोथरा आदि केन्द्रीय पदाधिकारियों एवं अनेकानेक शाखाओं के पदाधिकारीगण स्वयं एवं ससंघ बहुआयामी उद्देश्यार्थ गुरुचरण सन्निधि में पधारे।

पीपाड़ श्री संघ सभी पधारने वाले दर्शनार्थियों की आवास एवं भोजन व्यवस्थाओं में विशेष रूप से तत्पर है। श्रावक संघ, श्राविका मण्डल, युवक परिषद्, बालिका मण्डल के सभी सदस्य आतिथ्य सत्कार में अपना अमूल्य योगदान दे रहे हैं। उत्साह, उमङ्ग से धर्मोल्लासमय वातावरण बना हुआ है। *-गिर्राज जैन*

जयपुर नगरी में युवक-युवती भी धर्मस्थान में रहते हैं अग्रणी

मानसरोवर-जिनशासन गौरव परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी महाराज साहब के आज्ञानुवर्ती **मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी महाराज साहब आदि ठाणा-3** चातुर्मासार्थ सुखसातापूर्वक विराज रहे हैं। मानसरोवर का यह चातुर्मास अनेक उपलब्धियों के साथ यशस्वी बनकर उभर रहा है। क्या तो युवाओं का उत्साह और क्या महिलाओं की धर्म क्रियाओं में होड़। स्थानीय हर व्यक्ति के दिल-दिमाग में इस चातुर्मास की किसी भी गतिविधि में भाग लेने की बराबर उत्सुकता रहती है। यही कारण है कि प्रवचन-प्रभावना में आज भी उपस्थिति प्रशंसनीय और आदर्श बनी हुई है, जिसमें रविवार के दिन एवं अष्टमी-चतुर्दशी के दिन तो हॉल भी छोटा पड़ता है। लगभग चार-पाँच सौ की उपस्थिति रहती है। बाहर के दर्शनार्थियों का निरन्तर आवागमन और कई बार तो एक साथ अनेक लोगों की उपस्थिति से धर्मस्थानक में पर्युषण जैसा आभास होने लगता है।

श्रद्धेय सन्तों के प्रवचनों हेतु पूरा शहर दूरस्थ होते हुए भी प्रसङ्गानुसार एवं सप्ताह में दो-तीन बार आकर सन्तों के दर्शन-वन्दन और प्रवचन का लाभ लेने में उत्सुक रहता है। रविवारीय प्रातः 7 से 8 बजे की धार्मिक कक्षा विविध

विषयों पर पहले वक्ताओं द्वारा सम्बोधित की जाती है तदनन्तर श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. के प्रभावी उद्‌बोधन से युवाओं के क़दम स्वत: धर्मस्थानक की ओर बढ़ जाते हैं और देखते ही देखते धर्मस्थान युवा, युवतियों और महिलाओं से भर जाता है। उपस्थिति को देखकर हर किसी के मन में प्रश्न खड़ा होता कि किसने कहा कि युवा धर्म से विमुख है? युवक एवं युवतियों में धर्मबोध के आस्वादन हेतु महाराज साहब के सान्निध्य में रविवारीय कक्षाओं के आयोजन का क्रम चातुर्मास प्रवेश से ही निर्बाध गतिमान है। इसी क्रम में श्री पदमचन्दजी गाँधी ने 'सामायिक और स्वाध्याय', श्री अंकितजी लोढ़ा (Gratitude Club) ने "Law of attraction & Gratitude", श्री महेन्द्रजी पारख (भारतीय प्रशासनिक अधिकारी) ने 'युवा अपनाएँ खुशमिज़ाज जीवनशैली', श्रीमती आस्थाजी टाटिया ने 'कैसे करें सामना कष्टों और चुनौतियों का' तथा श्री आनन्दजी चौपड़ा (कार्याध्यक्ष-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ) ने 'युवा शक्ति और आदर्श व्यक्तित्व विकास' विषय पर अपने ओजस्वी वक्तव्यों से उपस्थित जनमानस को दिशाबोध प्रदान किया।

चातुर्मास मंगलमय क्षणों के साथ व्यतीत हो रहा है। आने वाले दिनों में भगवान महावीर के निर्वाण दिवस को लेकर 29 अक्टूबर से उत्तराध्ययन सूत्र के वाचन का आह्वान किया है तो साथ ही आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 59वाँ दीक्षा-दिवस को तप-त्याग से मनाने के लिए आह्वान किया है, जिसमें उस दिन 5-5 सामायिक, 108 संवर करने का लक्ष्य है। एकाशन सिद्धितप का क्रम तो चल ही रहा है, जिसमें 59 भाई-बहिनों की भागीदारी चल रही है। उसी दिन तप अनुमोदना का लक्ष्य रखा है। श्रीमती रेणुजी धर्मसहायिका श्री प्रदीपजी हीरावत ने उपवास का सिद्धि तप करके चातुर्मास की सफलता में सोने में सुगन्ध भर दी।

अभी भी एकाशन, आयम्बिल, नींवी, उपवास एवं तेले की लड़ी, दया, संवर, पौषध आदि का क्रम अनवरत चल रहा है। *-धर्मचन्द जैन (पाटोली वाले), मन्त्री*

महारानीफार्म, जयपुर-साध्वीप्रमुखा महासती श्री तेजकँवरजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सुमनलताजी म.सा. आदि ठाणा का उत्तम स्वाध्याय भवन, महारानी फार्म, जयपुर में पूर्ण उत्साह एवं उमङ्ग से चातुर्मास गतिमान है। प्रवचन प्रतिदिन चल रहा है तथा उपवास, आयम्बिल आदि के प्रत्याख्यान हो रहे हैं। 29 सितम्बर से लगभग 35 श्रावक-श्राविका एकाशन का सिद्धितप कर रहे हैं। आयम्बिल ओली के दिवसों में श्रावक-श्राविकाओं ने सोत्साह आयम्बिल तप किया। शरद पूर्णिमा की रात्रि में श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जयपुर सहित लगभग 125 श्राविकाओं एवं ऊपर की मञ्ज़िल पर संस्थान के छात्रों सहित 20 श्रावकों ने रात्रि में प्रतिक्रमण पूर्वक 15, 11 एवं 5 सामायिक की साधना कर धर्मजागरणा की। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 59वें दीक्षा दिवस पर 10 नवम्बर को नींवी तप का आह्वान किया गया है तथा उसके पूर्व 10 दिनों तक उपवास, आयम्बिल, एकाशन आदि 10 प्रत्याख्यानों की प्रेरणा की गई है। *-केवलचन्द जैन (सर्राफ), सह संयोजक*

लालभवन जयपुर-जिनशासन गौरव परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी महाराज साहब के आज्ञानुवर्तिनी व्याख्यात्री महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-4 का चातुर्मास खूब धर्म-ध्यान के साथ गतिशील है। महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा. रोजाना प्रात: 8.45 से 9.30 बजे तक युवक-युवतियों के साथ-साथ श्रावक-श्राविकाओं को गुणस्थान के बारे में समझा रहे हैं, आगे कर्मग्रन्थ का अध्ययन करवाने का भाव है। उसके बाद महासतीजी म.सा. के सारगर्भित प्रवचन होते हैं। आपका मधुर व्याख्यान सभी को मन्त्रमुग्ध करते हुए अन्दर से झिझोर देता है। शरद पूर्णिमा पर महावीर भवन में अनेक श्राविकाओं ने संवर, सामायिक कर खूब धर्मध्यान किया।

-सुरेशचन्द कोठारी, मन्त्री

अजमेर में तपस्या की निरन्तरता

अजमेर-जिनशासन गौरव परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी महाराज साहब के आज्ञानुवर्ती **सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणजी म.सा. आदि ठाणा** चातुर्मासार्थ सुखसातापूर्वक विराज रहे हैं। सन्त भगवन्तों की प्रेरणा से अजमेर में पर्युषण के बाद भी तप आराधकों द्वारा तपस्या निरन्तर की जा रही है। श्री चमनसिंहजी छाजेड़ ने शरद पूर्णिमा और नवपद आराधना की पूर्णाहुति के दिन 40 और 41 की तपस्या के प्रत्याख्यान ग्रहण किए। श्री छाजेड़ एक साधक आत्मा हैं, दृढ़ मनोबली हैं। इतनी दीर्घ तपस्या के पूर्व आपने उपवास से अधिक कोई आराधना नहीं की, और 2021 के चातुर्मास में 41 उपवास का तप किया। उस दिन अनेक श्रावक और श्राविकाओं ने तप अनुमोदनार्थ एकाशन, उपवास, आयम्बिल, तेला आदि तप की आराधना की। एक उनके मित्र जैनेतर बन्धु ने पूर्ण मांसाहार-व्यसन का त्याग किया। चातुर्मासिक गतिविधियाँ प्रार्थना, कक्षा, प्रवचन, वाचनी और नया सिखाने का कार्यक्रम निरन्तर गतिमान है। रात्रि संवर की साधना भी अनवरत रूप से चल रही है। श्री जैन रत्न युवक परिषद्, अजमेर की नयी कार्यकारिणी का गठन भी किया गया है। श्री रविजी कोठारी को अध्यक्ष और श्री अमितजी गाँधी को मन्त्री बनाया गया है। नयी कार्यकारिणी ने श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. की प्रेरणा से युवाओं को जोड़ने, व्यसन मुक्ति की प्रतिज्ञा तथा अन्य कार्यक्रम शुरु किए है। सन्तगणों और विदुषी महासती श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. की प्रेरणा से आयम्बिल और नींवी से नवपद आराधना के 15 आराधकों के तप हुए है। श्रीमती सुनीताजी धम्माणी ने तीन माह एकाशन तप किया तो श्रीमती कमलेशजी बोहरा ने दो माह एकाशन तप किया।

-चन्द्रप्रकाश कटारिया, मन्त्री

धर्माराधना-तपाराधना में सक्रिय है जोधपुर शहर

जिनशासन गौरव, पूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी महाराज साहब के आज्ञानुवर्ती **श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.आदि ठाणा**-4 के सान्निध्य में सूर्यनगरी जोधपुर स्थित नेहरुपार्क, सरदारपुरा का चातुर्मास बड़े हर्षोल्लास के साथ चल रहा है।

'यह चातुर्मास मेरा चातुर्मास' का उद्घोष जोधपुरवासियों के लिए प्रेरणादायक बना हुआ है। चातुर्मास प्रारम्भ से जो धर्म-ध्यान, ज्ञानाराधना तथा तपश्चर्याएँ प्रारम्भ हुईं, वे निरन्तर गतिमान हैं। चातुर्मास प्रारम्भ से ही 20 विहरमान प्रभु की आराधना का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ, जिसमें शताधिक श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लेकर आराधना की। युवारत्न श्री हरिशंकरजी भंसाली ने मुनिश्री की तपस्या से प्रभावित होकर एक साथ नौ उपवास के प्रत्याख्यान ग्रहण करके युवक संघ का गौरव बढ़ाया। इसी के साथ 27 की तपस्या, 20 की तपस्या, 15 की तपस्या, 11 की तपस्या, अठाई की तपस्या तथा उपवास, एकाशन आदि के प्रत्याख्यान हुए। साथ ही चातुर्मास लगने के साथ ही प्रारम्भ हुई 20 विहरमान आराधना की पूर्णाहुति का कार्यक्रम भी उसी दिन सम्पन्न हुआ।

यहाँ नियमित रूप से प्रार्थना, प्रवचन, वाचनी, प्रतिक्रमण आदि में श्रावक-श्राविकाएँ लाभ ले रहे हैं। जैनत्व के संस्कार जागृत करने हेतु युवाओं के लिए 'गेटवे ऑफ जैनिज्म' विषय पर प्रभावी प्रवचन हो रहे हैं। प्रवचन सभा का सञ्चालन श्रावकरत्न श्री अरुणजी मेहता द्वारा किया रहा है।

पर्युषण महापर्व पर नेहरुपार्क में सिद्धपद आराधना कार्यक्रम में 90 श्रावक-श्राविकाओं ने लाभ लिया। नवकार मन्त्र का अखण्ड जाप आठों ही दिन अनवरत रूप से चला। अष्ट दिवसों में लगभग 40 तेले और 16 अठाई की तपस्या के साथ सैंकड़ों की संख्या में एकाशन, उपवास, बियासन आदि हुए। संवत्सरी पर्व पर 100 से अधिक पौषध हुए। संघ अध्यक्ष श्री सुभाषजी गुन्देचा एवं क्षेत्रीय संयोजक श्री प्रकाशजी चौपड़ा के नेतृत्व में सभी कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से कार्यक्रम निरन्तर गतिमान है।

-नवरतनमल गिड़िया-मन्त्री, जोधपुर

घोड़ों का चौक, जोधपुर-जोधपुर सूर्यनगरी के भीतर शहर में स्थित सामायिक स्वाध्याय भवन घोड़ों का चौक में **व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. आदि ठाणा** का चातुर्मास धर्मध्यान एवं तप-त्याग के साथ गतिमान है। महासती श्री शशिकलाजी म.सा. ने भी अठाई की तपस्या की। पर्युषण महापर्व के अवसर पर नवकार महामन्त्र का अखण्ड जाप हुआ। दस की तपस्या-2, नौ की तपस्या-2, अठाई-4, सात-2, छह-2, पाँच-1 के साथ ही 21 तेले और 5 बेले की तपस्याएँ हुईं। अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने रात्रिकालीन पौषध-संवर का लाभ लिया। *-नरेन्द्र बुबकिया-क्षेत्रीय संयोजक*

शक्ति नगर, जोधपुर-व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में शक्तिनगर की पावन धरा पर चातुर्मास लगने के साथ धर्मध्यान और तपस्या की लहर छाई हुई है। पर्युषण महापर्व की आराधना हेतु व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. ने महासती श्री शिक्षाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-4 को पावटा स्थानक भेजा। यहाँ पर 30 तेले की तपस्या, अठाई-6 तथा अनेक छोटी तपस्याएँ भी हुईं। 80 साधकों ने सिद्धपद आराधना में भाग लिया। महासतीजी की प्रेरणा से पावटा क्षेत्र में एक वर्ष के लिए आयम्बिल की लड़ी प्रारम्भ की गई। संवत्सरी महापर्व पर सैंकड़ों की संख्या में पौषध हुए। संघ मन्त्री श्री नवरतनजी गिड़िया, श्राविका मण्डल मन्त्री श्रीमती काजलजी जैन तथा क्षेत्रीय संयोजक श्री सुरेशजी गांग के नेतृत्व में कार्यक्रम उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुए।

-गजेन्द्र चौपड़ा, अध्यक्ष-श्री जैन रत्न युवक परिषद्

महासती मण्डल के कतिपय चातुर्मासों में धर्माराधना

कालाहस्ती-परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी **व्याख्यात्री महासती श्री इंदुबालाजी म.सा., महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा.** आदि ठाणा 6 जैन स्थानक में चातुर्मासार्थ सुख-साता पूर्वक विराजमान हैं। अब तक श्री राकेश कुमारजी कोठारी, श्री विमल कुमारजी कोठारी, श्री महावीरचन्दजी बाफना के मासखमण की तपस्या सम्पन्न हो चुकी है। श्री रमेशचन्दजी कोठारी, श्री देवराजजी छाजेड़, श्री धर्मीचन्दजी कोठारी, श्री इन्द्रचन्दजी बाफना एवं श्री महावीरचन्दजी कांकलिया ने आजीवन शीलव्रत के प्रत्याख्यान अङ्गीकार किये हैं। श्राविका शिविर में 20 श्राविकाओं ने भाग लिया, जिसमें 16 थोकड़ों का अध्ययन कराया गया। युवा शिविर में जैनधर्म के सिद्धान्तों के विषय में अभ्यास करवाया गया। धर्म के प्रति स्थानीय श्रावकों में उत्साह एवं उमङ्ग है। *-रेखचन्द बाघमार, अध्यक्ष*

मैसूर-व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा-6 सुखसाता पूर्वक विराजमान हैं, स्वास्थ्य में समाधि है। चातुर्मास सुचारु रूप से गतिमान है। प्रवचन में उपस्थिति प्रमोद योग्य है। चातुर्मास में पर्युषण के पश्चात् दो मासखमण हुए-श्रीमती अंशिताजी पुत्रवधू श्री सन्तोष कुमारजी मुणोत और श्रीमती कविताजी पुत्रवधू श्री मिट्ठालालजी गुलेच्छा। आयम्बिल ओली में 9 ही दिन आयम्बिल करने वाले श्रावक-श्राविकाएँ लगभग 35 थे। अन्तिम दिन युवा संगठन द्वारा स्वागत सम्मान किया गया। 9 ही दिन नित्य आयम्बिल नींवी करने वाले लगभग 40 लोग थे। तीन दिन का महिला शिविर रखा गया, करीब 50 महिलाओं ने भाग लिया। शरद पूर्णिमा को रात्रि जागरण में लगभग 50-60 महिलाओं ने स्थानक में जागरण के साथ 15-15 सामायिक की साधना की। संस्कृति कन्या मण्डल का गठन 17 अक्टूबर, 2021 को किया गया, जिसमें 45-50 बालिकाएँ सदस्य बनीं। चेन्नई से लगभग 150 श्रावक-श्राविकाएँ संघ रूप में पधारे, शेखेकाल की विनति रखी गयी। आनन्दराजजी पटवा के 25 उपवास के पच्चक्खाण हुए एवं आगे बढ़ रहे हैं। यह पाँचवाँ मासखमण है। *-वी. सुभाषचन्द धोका, मानद् मन्त्री*

विल्लुपुरम-व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-4 सुखसाता पूर्वक विराजमान हैं, स्वास्थ्य में समाधि है। यहाँ पर श्री स्वरूपजी सुपुत्र स्व. श्री फतेहचन्दजी ओस्तवाल, श्रीमती पूनमजी धर्मपत्नी श्री

मनीषजी बोहरा और श्री निर्मलजी पुजारी (मन्दिर वाले जैन विधि से) के मासखमण की तपस्या सम्पन्न हो चुकी है।

-रिखबचन्द बम्ब

आचार्य हस्ती-स्मृति-सम्मान 2021 तथा संघ द्वारा प्रदत्त अन्य सम्मान हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

(1) आचार्य हस्ती-स्मृति सम्मान

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर द्वारा प्रतिवर्ष जैन आगम, जैन धर्म-दर्शन, कला एवं संस्कृति तथा जैन जीवन-पद्धति के क्षेत्र में लेखन, शोध तथा जैन सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में विशिष्ट योगदान करने वाले विद्वान् को 'आचार्य हस्ती-स्मृति-सम्मान' से सम्मानित किया जाता है। इस सम्मान हेतु लेखकों से सम्मान योग्य कृति की चार प्रतियाँ **20 दिसम्बर 2021** तक आमन्त्रित हैं। उक्त तिथि के पश्चात् प्राप्त प्रविष्टियाँ सम्मिलित नहीं की जाएगी। सम्मान हेतु नियम इस प्रकार हैं-

(A) विद्वान् की एक कृति अथवा उनके सम्पूर्ण योगदान के आधार पर भी सम्मानित किया जा सकेगा।

(B) सम्मान हेतु प्रकाशित अथवा अप्रकाशित (टंकित) कृति की चार प्रतियाँ प्रेषित की जानी चाहिए।

(C) प्रकाशित कृति सन् 2018 से पूर्व की नहीं होनी चाहिए।

(D) पूर्व में किसी भी संस्था से पुरस्कृत कृति पर यह सम्मान नहीं दिया जाएगा।

(E) कृति का विशेषज्ञ विद्वानों से मूल्यांकन कराया जाएगा।

(F) कृति के मौलिक एवं पूर्व में पुरस्कृत न होने का प्रमाण-पत्र संलग्न करना होगा।

(G) सम्मान के रूप में 1 लाख की रुपये की राशि प्रशस्ति-पत्र के साथ प्रदान की जाती है।

आवदेन-पत्र कृति की चार प्रतियों के साथ अपने बायोडेटा एवं सम्पर्क सूत्र सहित संघ कार्यालय के पते पर प्रेषित करें।

(2) युवा प्रतिभा- शोध साधना-सेवा-सम्मान (45 वर्ष की आयु तक)-

(A) **प्रशासनिक चयन-** राज्यस्तरीय व केन्द्रीय प्रशासनिक सेवा, न्यायाधिपति आदि विशिष्ट पदों पर चयन।

(B) **प्रोफेशनल विशिष्ट-** डॉक्टर, इंजीनियर, चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट, कम्पनी सचिव व अन्य प्रोफेशनल पाठ्यक्रम में योग्यता सूची में स्थान पाने पर।

(C) **शोध-** वैज्ञानिक खोज (अहिंसा व जैन सिद्धान्तों को पुष्ट करने वाली)

(D) **संघ-सेवा-** चतुर्विध संघ सेवा, विशेष धार्मिक अध्ययन, धार्मिक लेखन इत्यादि।

(3) विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान (एक श्राविका, एक युवा, एक वरिष्ठ स्वाध्यायी)- कम से कम 10 वर्ष स्वाध्याय संघ, जोधपुर से स्वाध्यायी (पर्युषण पर्वाराधन) के रूप में सक्रिय सेवा। (युवा स्वाध्यायी के लिए आवश्यक होने पर सेवा वर्ष में छूट दी जा सकेगी।)

(4) न्यायमूर्ति श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा स्मृति युवा शिक्षा प्रतिभा सम्मान

संघ द्वारा प्रदत्त न्यायमूर्ति श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा स्मृति युवा शिक्षा-प्रतिभा सम्मान हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित हैं। इसके अन्तर्गत उन छात्र-छात्राओं की प्रविष्टियाँ स्वीकार की जायेंगी, जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त की हो। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, विश्वविद्यालय आदि की परीक्षाओं में वरीयता सूची में विशिष्ट स्थान प्राप्त करने वाले श्रेष्ठ छात्र को 21 हजार रुपये की राशि से सम्मानित किया जाएगा। प्रतियोगी एवं प्रोफेशनल पाठ्यक्रमों में उच्च वरीयता प्राप्त छात्र-छात्रा को भी सम्मानित किया जा सकता है।

इच्छुक अभ्यर्थी आवेदन करते समय अंकतालिका की सत्यापित प्रतिलिपि संलग्न करें।

(5) डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान

जैन धर्म-दर्शन से सम्बद्ध विषय पर पी-एच्.डी एवं डी.लिट् उपाधि प्राप्त करने वाले शोधकर्त्ताओं को 'डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान' से सम्मानित किया जाएगा। इस हेतु आवश्यक बिन्दु इस प्रकार हैं-

(A) जिन शोधकर्त्ताओं ने 18 फरवरी 2018 से 17 फरवरी 2021 की अवधि में पी-एच.डी/डी.लिट् उपाधि प्राप्त की है, उनमें से 4 पी-एच.डी. उपाधिधारक तथा 1 डी.लिट् उपाधिधारक को क्रमश: 11 हजार रुपये एवं 15 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि से सम्मानित किया जाएगा। डी.लिट् उपाधिधारक नहीं होने पर 5 पी-एच.डी उपाधिधारकों को सम्मानित किया जा सकेगा।

(B) 18 फरवरी 2018 से 17 फरवरी 2021 के मध्य जो भी पी-एच.डी. एवं डी.लिट् उपाधि प्राप्तकर्त्ता होंगे, वे इस सम्मान हेतु आवेदन कर सकते हैं। आवेदन-पत्र के साथ पी-एच.डी./डी. लिट् उपाधि के समुचित सर्टिफिकेट एवं शोधकार्य का सारांश संलग्न करना होगा।

(C) सम्मान राशि 'श्री सरदारमल भण्डारी चेरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर' के सौजन्य से प्रदान की जाएगी।

उक्त सभी सम्मानों हेतु अपनी प्रविष्टियाँ संघ के निम्नांकित पते पर संबंधित सम्मान का नाम लिखते हुए **20 दिसम्बर 2021** से पूर्व प्रेषित करें।-धनपत सेठिया, महामंत्री, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.), फोन नं. 0291-2636763

आवश्यकसूत्र की परीक्षा का परिणाम घोषित

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के तत्त्वावधान में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा 15 अगस्त, 2021 रविवार को आयोजित आवश्यकसूत्र आगम की खुली किताब लिखित परीक्षा का परिणाम घोषित किया जा चुका है। अस्थायी वरीयता सूची इस प्रकार है-

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम	केन्द्र	प्राप्ताङ्क	स्थान
4518	डॉ. आभाकिरणजी गाँधी	धागड़मऊ (राज.)	98.00	प्रथम
5538	वंदना प्रवीणजी डोसी	औरंगाबाद (महा.)	97.75	द्वितीय
5490	अरुणा गौतमजी सिंघी	नागपुर (महा.)	97.50	तृतीय

परीक्षा परिणाम सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण जानकारी

आवेदक	उपस्थित	उत्तीर्ण	उत्तीर्ण प्रतिशत	केन्द्र
6109	3224	2661	82.53	294

वरीयता पुरस्कार	90 से अधिक अंक पाने वाले	80 से 90 के बीच में अंक पाने वाले	50 से 80 के बीच अंक पाने वाले
3	231	569	1858

सम्मान पुरस्कार-वरीयता सूची में प्रथम स्थान पाने वाले को 25000/-, द्वितीय स्थान पाने वाले को 21000/-, तृतीय स्थान पाने वाले को 15000/-, 90 से अधिक अंक पाने वालों को 1000/-, 80 से 90 अंक

पाने वालों को 500/- का सम्मान पुरस्कार संघ की ओर से प्रदान किया जायेगा।

नोट-1. परीक्षा पुरस्कार सम्बन्धित परीक्षार्थी के बैंक खाते में सीधे जमा कराये जायेंगे। शिक्षण बोर्ड की जैनागम स्तोक वारिधि (थोकड़ा-परीक्षा) कक्षा 1 से 12 तक की परीक्षा 09 जनवरी-2022, रविवार को दोपहर 12:30 से 3:30 बजे तक आयोजित की जायेगी। शिक्षण बोर्ड की कक्षा 1 से 12 तक की पाठ्यक्रम की परीक्षा 17 जुलाई-2022, रविवार को आयोजित की जायेगी।

सम्बन्धित आवेदन पत्र, पुस्तकें आदि के लिए शिक्षण बोर्ड कार्यालय से सम्पर्क करने की कृपा करावें। 0291-2630490, 76109-53735 (व्हाट्सएप)

आवश्यकसूत्र आगम की परीक्षा आयोजन में जिन-जिन संघीय सहयोगी संस्थाओं, महानुभावों का प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग प्राप्त हुआ, उन सभी कार्यकर्त्ताओं, निरीक्षकों, अधीक्षकों का हार्दिक आभार एवं धन्यवाद। जिन भाई-बहिनों ने परीक्षा में भाग लेकर अपनी ज्ञानवृद्धि की उन सब के प्रति भी शिक्षण बोर्ड हार्दिक आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित करता है।

प्रकाश टाटिया	**धनपत सेठिया**	**अशोक बाफना**	**सुभाषचन्द नाहर**
संघाध्यक्ष	संघ-महामन्त्री	बोर्ड-संयोजक	बोर्ड-सचिव

जोधपुर में द्विदिवसीय मेगा शिविर "FIL" का आयोजन

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल तथा श्री जैन रत्न युवक परिषद् के द्वारा जोधपुर में पहली बार युवक-युवतियों का एक मेगा शिविर कार्यशाला के रूप में "FIL" Fruitfurl Inspiration in Life-2021 के नाम से 23-24 अक्टूबर को सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा में आयोजित किया गया। संघ के अध्यक्ष श्रीमान सुभाष जी गुन्देचा ने अपने चिंतन को गुरु आज्ञा से क्रियान्वित करने का सुंदर प्रयास किया। कार्यक्रम की घोषणा के दिन से ही जोधपुर के श्रावकों, युवाओं एवं श्राविकाओं का उत्साह सराहनीय रहा। संघ के सदस्यों ने घर-घर जाकर कार्यशाला की प्रेरणा करते हुए उनसे सपरिवार कार्यशाला में आने के लिए संकल्प पत्र भरवाये गये। कार्यशाला की तैयारियाँ सभी कार्यकर्ताओं के सहयोग से आगे बढ़ने लगी, कार्यशाला के प्रचार हेतु हस्तनिर्मित पोस्टर तैयार किए गए साथ ही हस्तलिखित वेलकम नोट और बहुत सी ऐसी तैयारियों को पूर्ण करने में श्राविकाओं एवं युवतियों ने अपना अधिकांश श्रम एवं समय लगाया। कार्यशाला का दिन नजदीक आया, दिनांक 23 और 24 अक्टूबर 2021 को सामायिक स्वाध्याय भवन पावटा में प्रातः 8.00 से शाम 4.00 बजे तक इस कार्यशाला का सुन्दर आयोजन हुआ।

पहले दिन की कार्यशाला में लगभग 600 युवक-युवतियों एवं श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। कार्यशाला की शुरुआत **व्याख्यात्री महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा.** सहित महासती मण्डल द्वारा प्रार्थना के माध्यम से की गई। प्रथम दिन Foolish Run सत्र के दौरान **महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा** ने जीवन में निरर्थक एवं मूर्खतापूर्ण दौड़ को खत्म करते हुए सार्थक दौड़ की ओर आगे बढ़ने की सुन्दर प्रेरणा की, तो उसी क्रम में **श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा.** ने The Ultimate Truth के सत्र में साक्षात मृत्यु के दर्शन कराते हुए जीवन की सच्चाई का चित्रण किया एवं आत्मा के लिए समय निकालने तथा धर्म आराधना करने की महती प्रेरणा की। Atomic Habits सत्र में अच्छी-बुरी आदत में फ़र्क समझने का एवं EYE ON " I " सत्र के माध्यम से अपनी आत्मा का स्वनिरीक्षण करने के लिए प्रेक्टिकल अवसर प्रदान किया। ईरोड से पधारे हुए भारतीय जैन संघटना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान राजेन्द्रजी लूंकड़ ने "मैजिक ऑफ स्मार्ट माइण्ड" विषय पर अनेक उदाहरणों के माध्यम से मार्मिक उद्बोधन प्रदान किया। उसी दिन The story of Mr. Teen नाम से एक नाटिका प्रस्तुत की गई, जिसके माध्यम से सप्त कुव्यसनों के त्याग की प्रेरणा की गई। इसी कड़ी में बच्चों के द्वारा मोबाइल ऐप्प पार्टी का कार्यक्रम

भी प्रस्तुत किया गया, जिसके माध्यम से मोबाइल में उपलब्ध अनेक एप्स में समय बर्बाद न करने की प्रेरणा दी गई। कार्यशाला के विभिन्न सत्रों के मध्य में छोटे-छोटे टास्क के रूप में कई ऐसी बातें सिखाई गईं जो जीवन को ऊँचाइयों तक ले जाने वाली हैं, जैसे-मिलने वाले को कहना ''आप बहुत अच्छे हैं'', अपने पड़ोसी, अपने परिजन सभी को चरण छू कर कहना-''आप धन्य हैं'', भोजन के उपरान्त अपनी थाली को धोकर पीना आदि-आदि।

दूसरे दिन सुबह तक इस कार्यशाला की सौरभ इतनी फैल चुकी थी कि देखते ही देखते संख्या में बढ़ोतरी हुई और लगभग 700 युवक-युवतियों एवं श्रावक श्राविकाओं ने सुबह 8.00 से शाम 4.00 बजे तक सामायिक व्रत करते हुए कार्यशाला में उपस्थिति दर्ज की। रविवार के दिन इस कार्यशाला में धर्म संसद के रूप में विशेष प्रेरक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया, जिसमें शुद्ध जैन धर्म के प्रति श्रद्धा न रखने वाली आज की युवा पीढ़ी को धर्म से जोड़ने हेतु एवं धर्म पर श्रद्धा करने के लिए विशेष प्रेरणात्मक प्रस्तुति दी गई। धर्म के प्रति अरुचि रखने वालों में धर्म के प्रति रुचि जगाने का सुन्दर प्रयत्न किया गया। तत्पश्चात् The story of Mr. Teen का पार्ट-2 प्रस्तुत किया गया, जिसके माध्यम से पैसा, प्रतिष्ठा, नौकरी परिवार सबके साथ रहते हुए भी सेवा भावना, धर्म से जुड़े रहना एवं अंतिम समय में संथारा संलेखना करते हुए मरण को प्राप्त करना ऐसी सुंदर भावना के साथ अपने जीवन को व्यतीत करने हेतु प्रेरित किया गया। मध्याह्न में जप एवं अनुमोदना कार्यक्रम के तहत विरक्ता बहनों की अनुमोदना के साथ-साथ जोधपुर के छोटे-छोटे बालक बालिका एवं युवा साथी एवं युवतियाँ जो ज्ञान-ध्यान में अध्यात्म के क्षेत्र में निरन्तर आगे गतिमान हैं, उन चमकते हुए सितारों (Jodhpur Shine) की अनुमोदना की गई। जिन्होंने शिक्षण बोर्ड की परीक्षाओं में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया, उन सबकी भी अनुमोदना की गई।

द्विदिवसीय इस कार्यशाला का कुशल संचालन कार्यक्रम के संयोजक श्री राजेश जी कर्णावट द्वारा किया गया तथा युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री गजेन्द्रजी चौपड़ा ने समय-समय पर हर सत्र के बाद अपनी काव्य रचना के माध्यम से उस सत्र का सारांश प्रस्तुत करते हुए उत्साह का सञ्चार किया।

कार्यशाला को सफल बनाने में श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री सुभाषजी गुन्देचा, मन्त्री श्री नवरतनमलजी गिड़िया, कोषाध्यक्ष श्री जिनेन्द्रजी ओस्तवाल एवं श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती सुमनजी सिंघवी एवं मन्त्री श्रीमती काजलजी जैन के साथ ही इस कार्यक्रम के सह संयोजक श्री रवीन्द्रजी गिड़िया तथा जोधपुर के सभी क्षेत्रों के कार्यकर्ताओं का अपार सहयोग प्राप्त हुआ। कार्यशाला में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारियों ने भी पधारकर उत्साहवर्द्धन किया। कार्यशाला में एक नया जोश और उल्लास सभी कार्यकर्ताओं में देखने को मिला।

कार्यशाला की विशेष उपलब्धियाँ-(1) मेरा शासन महान्-''शासन पुकार रहा है'' विषय पर महासती श्री भाग्यप्रभा जी महाराज साहब के हृदयस्पर्शी उद्बोधन को सुनकर कार्यशाला स्थल पर विराजित सभी भाव विभोर हो गए और संघ-सेवा में अपने आप को समर्पित करने हेतु तत्पर हुए। जिनशासन की विशेषताओं के 25 बिन्दुओं को कई पोस्टरों के माध्यम से समझाया गया तथा यह प्रेरणा दी कि इनमें से जितने बिन्दु जो आपको विशेष प्रभावित करें, उन्हें लिखकर सदैव अपने पास रखें और जरूरत पड़ने पर दूसरों को बतायें। अनेक लोगों ने इसको क्रियान्वित करने का संकल्प ग्रहण किया। **(2) पारिवारिक आनन्द दिवस**-महीने में एक दिन इस दिवस को सपरिवार पारिवारिक 14 नियम, जिनके बारे में बताया गया, उन्हें पालन करते हुए धार्मिक, आध्यात्मिक एवं प्रेम के वातावरण में जीने हेतु प्रेरित किया। अनेक परिवार के भाई-बहिनों ने इसका संकल्प ग्रहण किया। **(3) युवती मण्डल (श्री जैन रत्न बहू-बालिका मण्डल)**-जोधपुर के 15 से 35 वर्ष की युवतियों के एक संगठन की स्थापना श्रावक संघ एवं श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती सुमनजी सिंघवी के नेतृत्व में की गई, जिसमें लगभग

50 युवतियों ने खड़े होकर इसके सदस्य बनकर सेवा देने की अपनी भावना व्यक्त की। **(4) विहार सेवा**–महीने में एक दिन संत-सतियों की विहार सेवा हेतु जब भी संघ याद करे, तब सेवा देने हेतु लगभग 120 युवक-युवतियों ने खड़े होकर संकल्प ग्रहण किया। **(5) जैनिक**–जिस तरह देश की रक्षा के लिए सैनिक सदैव तत्पर रहते हैं, उसी तरह जिनशासन की रक्षा एवं प्रगति के लिए तन-मन-धन और समय प्रदान कर स्वयं को शासन के लिए समर्पित करने का लगभग 100 युवक-युवतियों ने संकल्प ग्रहण किया। **(6) पाँच अणुव्रत की पालना**–जीवन को संयमित, नियमित और मर्यादित बनाने के लिए, व्रती बनने के लिए, धर्मसंघ का सदस्य बनने के लिए अहिंसा आदि पाँच अणुव्रतों को समझकर उसे प्रायोगिक रूप से पालन करने का लगभग 150 युवक-युवतियों ने संकल्प ग्रहण किया।

-नवरतनमल गिड़िया-मन्त्री, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

मानसरोवर जयपुर में श्री जैन रत्न युवति मण्डल द्वारा नवतत्त्व पर त्रिदिवसीय शिविर आयोजित

क्या हम श्रावक-श्राविका हैं? क्या हमारे द्वारा किया गया पच्चक्खाण सुपच्चक्खाण की श्रेणी में आता है? इस संसार में सारभूत क्या है? वे कौनसी क्रियाएँ हैं जिनको करने से ही आत्मकल्याण सधता है? हमारी आत्मा की विशुद्धि के साधन कौनसे हैं? इस संसार में जानने योग्य क्या है? हमारे पालने योग्य क्या है? और हमारे छोड़ने योग्य क्या है? इन्हीं सब प्रश्नों के समाधान एवं हमारे जिनशासन के प्राण 'नवतत्त्व' पर 14-16 अक्टूबर, 2021 को त्रिदिवसीय शिविर का आयोजन रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

शिविर की शुरुआत युवति मण्डल की सहमन्त्री श्रीमती सेहल जैन (हरकावत) द्वारा रचित नवतत्त्व भजन से की गई। तत्पश्चात् श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने फरमाया कि धर्म का प्रारम्भ ही नवतत्त्व से होता है। जैन कुल में जन्म लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति को नवतत्त्व की जानकारी होना बहुत आवश्यक है। उन्होंने 'पुण्य' के बारे में विस्तार से समझाया और नौ पुण्यों का विवेचन करते हुए उदाहरण एवं दृष्टान्तों से समझाते हुए हृदयस्पर्शी उद्बोधन दिया। पुण्य की परिभाषा समझाते हुए बताया कि 'पुनाति इति पुण्यं' अर्थात् जो आत्मा को पवित्र करे उसका नाम ही पुण्य है। फिर जीव, अजीव तत्त्व के बारे में बताते हुए श्री त्रिलोकचन्दजी जैन ने जीव के छह एवं अजीव के छह भेदों को विस्तृत रूप से समझाया।

दूसरे दिन श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा. ने Gate Way इन दो शब्दों से आस्रव और संवर को बहुत सरल तरीके से परिभाषित किया। Gate मतलब संवर और Way मतलब आस्रव। कर्मों के आने के रास्ते को Way एवं आते हुए कर्मों को रोकना Gate कहलाता है। आस्रव एवं इनके कितने भेद हैं उन्हें भी उदाहरण के माध्यम से समझाया। पाप एवं बन्ध तत्त्व को श्री त्रिलोकचन्दजी जैन ने समझाते हुए बताया कि जितना हम साँप से डरते हैं उतना एक सम्यग्दृष्टि जीव पाप से डरता है। 18 पापों का विवेचन, उसके पश्चात् बन्ध को परिभाषित किया गया। कर्मों का आत्मा से जुड़ जाना बन्ध कहलाता है तथा बन्ध के चार प्रकार के उदाहरण देते हुए बड़ी सरलता से समझाया।

तृतीय दिवस की शुरुआत युवति मण्डल गीत से हुई जिसकी रचना युवति मण्डल मानसरोवर की कार्यकारिणी सदस्या श्रीमती शिपिकाजी जैन ने की एवं उसकी धुन तर्ज युवति मण्डल सदस्या मेघाजी जैन ने दी। तत्पश्चात् श्री त्रिलोकचन्दजी जैन ने निर्जरा तत्त्व को नाव के उदाहरणों से समझाया कि पानी जब नाव में आ गया तो उसे निकालना निर्जरा कहलाता है अर्थात् कर्मों को हटाना निर्जरा कहलाता है। सकाम निर्जरा एवं अकाम निर्जरा को ताम्बली तापस और धन्ना अनगार के उदाहरण से समझाया तथा बारह प्रकार के तप के बारे में भी समझाया। अन्तिम तत्त्व

मोक्ष तत्त्व को लेकर श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा. ने लक्ष्य का बोध कराया और जीवन का उद्देश्य समझाया।

चातुर्मास काल में युवति मण्डल सदस्याओं द्वारा जो तपस्या की गई उन सभी तपस्वी बहनों का सम्मान भी किया गया। पुन: इसी उत्साह के साथ अगले किसी भी सम्भावित कार्यक्रम में फिर से मिलने के संकल्प के साथ शिविर का समापन हुआ। श्रद्धेय मुनिश्री जी ने इस तरह उत्साहपूर्वक तत्त्व आराधना में आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा देते हुए मंगल पाठ फरमाया। *-संगीता लोढ़ा*

प्रभु महावीर की दिव्यवाणी का फिल्मांकन

प्रभु महावीर की दिव्यवाणी को एक फिल्म के रूप में दर्शाने का जयपुर जैन समाज की श्रीमती सुमन विनयजी कोठारी, जयपुर द्वारा एक अनूठा प्रयास किया गया है। जिसका निर्देशन श्री श्रवणजी, उषाजी जैन ने किया है। 23 कहानियों और 800 कलाकारों के साथ बनी यह फिल्म आदर्श और नैतिक जीवन जीने की कला सीखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायेगी। यह फिल्म इण्टरनेशन, नेशनल रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज करवा चुकी है।

'प्रभु महावीर की दिव्यवाणी' का लोकार्पण पहले 1 अक्टूबर की शाम को अपने आवास पर राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री अशोकजी गहलोत ने किया तथा सांसद राजकुमारी दिया कुमारीजी द्वारा 2 अक्टूबर, 2021 को जयपुर के राजमन्दिर सिनेमा हॉल में किया गया। जयपुर समाज के वरिष्ठ पदाधिकारी सहित लगभग एक हजार की संख्या के साथ बच्चे, युवा, वृद्धजनों ने प्रभु की अमृतवाणी एवं घटना-प्रसङ्गों का चित्रण देखा तथा भावपूर्ण दृश्यों को देखकर सभी अभिभूत हो गए। फिल्म में प्रमुख रूप से उत्तराध्ययनसूत्र के उपदेशों एवं घटनाओं का जीवन्त फिल्मांकन किया गया है। श्री गहलोत साहब और दिया कुमारीजी ने कहा- 'एक महिला और उनकी टीम द्वारा किया गया यह पहला प्रयास सराहनीय है। उन्होंने कहा-प्रभु महावीर के कल्याणकारी सन्देश न केवल जैन समाज के लिए अपितु 36 कौमों के लिए बहुत उपयोगी हैं, इसका प्रसार देश-विदेश में होना चाहिये।' श्रीमती सुमनजी कोठारी का स्वप्न था प्रभु की जिनवाणी जन-जन तक पहुँचे, वह स्वप्न साकार हुआ। फिल्म की बुकिंग के लिए **सम्पर्क सूत्र-** श्रीमती सुमनजी कोठारी 9829252113, श्रीमती महकजी डागा 9929441929 एवं श्री निपुणजी डागा 9821044803।

विद्यार्थियों के जीवन-निर्माण में बनें सहयोगी

छात्र संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण योजना

(प्रतिवर्ष एक छात्र के लिए रुपये 24,000 सहयोग की अपील)

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, (सिद्धान्त शाला) जयपुर, संघ व समाज के प्रतिभाशाली छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए वर्ष 1973 से सञ्चालित संस्था है। इस संस्था से अब तक सैकड़ों विद्यार्थी अध्ययन कर प्रशासकीय, राजकीय एवं प्रोफेशनल क्षेत्र में कार्यरत हैं। अनेक छात्र व्यावसायिक क्षेत्रों में सेवारत हैं। समय-समय पर ये संघ-समाजसेवी कार्यों में निरन्तर अपनी सेवाएँ भी प्रदान कर रहे हैं। वर्तमान में भी यहाँ अध्ययनरत विद्यार्थियों को धार्मिक-नैतिक संस्कारों सहित उच्च अध्ययन के लिए उचित आवास-भोजन की नि:शुल्क व्यवस्थाएँ प्रदान की जाती है। व्यावहारिक अध्ययन के साथ छात्रों को धार्मिक अध्ययन की व्यवस्था भी संस्था द्वारा की जाती है। वर्तमान में संस्थान में 71 विद्यार्थियों के लिए अध्ययनानुकूल व्यवस्थाएँ हैं। संस्था को सुचारू रूप से चलाने एवं इन बालकों के लिए समुचित अध्ययननाकूल व्यवस्था में आप-सबका सहयोग अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि छात्रों के जीवन-निर्माण के इस पुनीत कार्य में बालकों के संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण में सहयोगी बनें।

इसमें सहयोगी बनने वाले महानुभावों के नाम जिनवाणी में क्रमिक रूप से प्रकाशित किये जा रहे हैं। संस्थान के लिए पूर्व छात्रों का एवं निम्नलिखित महानुभावों का सहयोग प्राप्त हुआ है-

15. डॉ. लोकेशजी जैन-जयपुर-प्रोफेसर, राजस्थान विश्वविद्यालय (पूर्व छात्र)	24,000/-
16. श्री मुकेशजी पोद्दार-जयपुर (पूर्व छात्र)	24,000/-
17. श्री कपिल कुमार जैन-नदबई, जयपुर (पूर्व छात्र)	11,000/-
18. श्री जैन सेवा संघ, मुम्बई	50,000/-
19. श्री राजेन्द्रजी कर्णावट, मुम्बई	51,000/-

आप द्वारा दिया गया आर्थिक सहयोग 80जी धारा के तहत कर मुक्त होगा। आप यदि सीधे बैंक खाते में सहयोग कर रहे हैं तो चेक की कॉपी, ट्राँजेक्शनस्लिप अथवा जानकारी हमें अवश्य भेंजे।

खाते का विवरण:-Name : ***GAJENDRA CHARITABLE TRUST***, Account Type : *Saving*, Account Number : ***10332191006750***, Bank Name : *Punjab National Bank*, Branch : Khadi Board, Bajaj Nagar, Jaipur, Ifsc Code : PUNB0103310, Micr Code : 302022011, Custumer ID : 35288297 **निवेदक :** डॉ. प्रेमसिंह लोढ़ा (व्यवस्थापक), सुमन कोठारी (संयोजक), अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें-दिलीप जैन 'प्राचार्य' 9461456489, 7976246596

नवल वीरायतन में 'सामाजिक सौहार्द एवं शान्ति की स्थापना में जैनधर्म-दर्शन की भूमिका' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न

इण्टरनेशनल स्कूल ऑफ जैन स्टडीज (ISJS), पुणे, अमर प्रेरणा ट्रस्ट, पुणे एवं भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद् (ICPR), नईदिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में पुणे के निकट स्थित नवल वीरायतन में 23-24 अक्टूबर, 2021 को एक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित हुई। संगोष्ठी में 17 शोधपत्र प्रस्तुत हुए तथा लगभग 40 विद्वानों ने भाग लिया। संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद् के सदस्य सचिव प्रो. सच्चिदानन्द मिश्र के मुख्य आतिथ्य, इतिहासविद् प्रो. अरविन्द जामखेड़कर के बीज वक्तव्य एवं अमर प्रेरणा ट्रस्ट के प्रमुख एवं समाजसेवी डॉ. अभय फिरोदिया की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। उद्घाटनसत्र में व्यापक फलक पर सौहार्द एवं शान्ति की स्थापना और सम्प्रति व्याप्त आतंकवाद तथा अशान्ति के सम्बन्ध में विचार प्रकट किए गए। अन्तरराष्ट्रीय जैन अध्ययन शाला के प्रमुख एवं सम्मानित अतिथि डॉ. शुगनचन्दजी जैन ने संगोष्ठी की उपयोगिता के सम्बन्ध में प्रकाश डाला, संस्था के संयुक्त निदेशक डॉ. श्रीनेत्र पाण्डे ने उद्घाटन भाषण दिया।

संगोष्ठी के प्रथम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता प्रो. धर्मचन्द जैन, जयपुर ने की तथा संयोजन डॉ. नवीनजी श्रीवास्तव ने किया। इस सत्र में प्रो. जयन्तीलालजी जैन, अलीगढ़ (उत्तरप्रदेश), डॉ. प्रियदर्शनाजैन-चेन्नई, सुश्री पीतल अजमेरा एवं जिनित अजमेरा ने सम्यग्दर्शन, शान्ति, अणुव्रत आदि विषयों पर शोधपत्र प्रस्तुत किए। द्वितीयसत्र की अध्यक्षता डॉ. प्रमोद पाण्डेय, कुलपति-डेक्कन कॉलेन ने, तृतीयसत्र की अध्यक्षता प्रो. जयन्तीलालजी जैन ने की। प्रो. फूलचन्दजी जैन 'प्रेमी' वाराणसी ने दान, प्रो. धर्मचन्द जैन, जयपुर ने हरिभद्रसूरि के षोडशकप्रकरण में धर्मतत्त्व, प्रो. अशोक सिंह, पुणे ने नन्दीसूत्रवृत्ति पर शोधपत्र प्रस्तुत किए। वाराणसी के डॉ. शान्तिस्वरूप सिन्हा, दिल्ली के डॉ. वीरेन्द्रसिंह बिट्टू के भी शोधपत्र हुए। डॉ. मलय पटेल, डॉ. मेघ कल्याण सुन्दरम्, प्रज्ञा जैन, एन्थनी जेम्स रूडा, तृष्णा, जिनेश आर.सेठ, शिखा शर्मा, सुलभ जैन आदि के भी शोधपत्र प्रस्तुत हुए।

24 अक्टूबर को समापनसत्र के मुख्य अतिथि प्रो. पंकज जैन, पुणे थे। साध्वी श्री शिलापीजी ने विशेष

वक्तव्य में कहा कि जैनधर्म के अनुयायी सामाजिक सौहार्द एवं शान्ति में सदैव अग्रणी रहे हैं। डॉ. शुगनचन्द जैन ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया तथा डॉ. अभय फिरोदिया ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

जैनधर्म-दर्शन की सामाजिक सौहार्द एवं शान्ति की स्थापना में भूमिका को विभिन्न विद्वानों ने साहित्य, मूर्तिकला, अहिंसा, अनेकान्त, सप्तकुव्यसन, धर्म, तत्त्वमीमांसा आदि के सन्दर्भ में स्पष्ट किया।

-डॉ. श्रीनेत्र पाण्डेय, संयुक्त निदेशक

जैन विद्वद् अकादमी (Jain Academy of Scholars) के द्वारा निरन्तर कार्यक्रमों का आयोजन

देश में जैन विद्वद् अकादमी (Jain Academy of Scholars) की स्थापना जून 2020 में इस उद्देश्य से हुई कि इसके द्वारा जैनधर्म-दर्शन के सिद्धान्तों का वैज्ञानिक रीति से एवं तर्कपूर्वक अध्ययन किया जाएगा तथा यह जैन सिद्धान्तों एवं अवधारणाओं का उपयोग वैज्ञानिक सिद्धान्तों को समृद्ध करने में भी करेगी। इस संस्था से देश-विदेश के लगभग 50 विद्वान् जुड़े हुए हैं, जिनमें जैन वैज्ञानिक अधिक हैं। यह एक प्रकार से 'चिन्तन बैंक' (Think Tank) का कार्य करती है और जैनदर्शन के अनछुए एवं महत्त्वपूर्ण पक्षों पर शोधकार्य में संलग्न है।

इस संस्था के द्वारा प्रति सप्ताह (प्रायः मंगलवार या शनिवार) विशेषज्ञ विद्वान् द्वारा ऑनलाइन एक व्याख्यान होता है और उस पर गहन चर्चा होती है। इनमें कुछ व्याख्यान यू-ट्यूब (https : youtube.com/channel/ UCLiCWWAFOOGEJZe NslyarZA) पर तथा JAS website <https ://www.jain scholars.com> पर उपलब्ध हैं।

यह संस्था अपने व्याख्यानों का प्रोसीडिंग के रूप में भी प्रकाशन करती है। यह प्रकाशन सॉफ्ट एवं हार्ड कापी दोनों में होता है। इसके तीन अंक तैयार हो गए हैं तथा प्रथम अंक की हार्ड कापी प्रकाशित हो चुकी है। लोक (universe), ज्ञान, स्वास्थ्य जैनदर्शन एवं आधुनिक दृष्टि आदि विभिन्न विषयों पर 50 से अधिक व्याख्यान हो चुके हैं।

संस्था से श्वेताम्बर एवं दिगम्बर दोनों परम्पराओं के विद्वान् एक साथ मिलकर दोनों परम्पराओं के ग्रन्थों के आधार पर प्रस्तुति देते हैं एवं चर्चा करते हैं। इस संस्था के सहयोग से फ्लोरिडा इण्टरनेशनल यूनिवर्सिटी, मियामी, अमेरिका के द्वारा 'विज्ञान एवं जैनदर्शन' विषयान्तर्गत चेतना (Consciousness) पर एक महत्त्वपूर्ण अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन मार्च माह में हो चुका है।

इस संस्था में इसरो के चन्द्रयान अभियान से जुड़े वैज्ञानिक डॉ. नरेन्द्रजी भण्डारी, अहमदाबाद अध्यक्ष हैं। वैज्ञानिक डॉ. सुरेन्द्रसिंहजी पोखरना सचिव हैं। जिनवाणी सम्पादक डॉ. धर्मचन्दजी जैन उपाध्यक्ष हैं तथा डॉ. अनिलजी जैन, जयपुर संयुक्त सचिव हैं। उदयपुर के प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. एन. एल. कच्छारा, डॉ. पारसमल अग्रवाल, डॉ. विनेय जैन, गुड़गाँव, डॉ. देव कुमार, डॉ. सुषमा सिंघवी आदि अनेक विद्वज्जन जुड़े हुए हैं। इसमें फेलो एवं मेम्बर के रूप में सदस्य बनने के इच्छुक विद्वान् एवं विद्यार्थी सम्पर्क करें-nnbhandari@yahoo.com, Mobile 9824077890

-डॉ. नरेन्द्र भण्डारी, अहमदाबाद

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (सिद्धान्त-शाला) जयपुर के छात्रों को गुरुदेवों से मिले जीवन सूत्र

जयपुर में छात्रों के लिए सञ्चालित आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान के नवीन सत्र 2021-22 की शुरुआत के साथ ही नवीन एवं अध्ययनरत छात्रों का चार दिवसीय गुरु-दर्शन-वन्दन-प्रवचन श्रवण-सेवा-

सन्निधि गोटन-पीपाड़-जोधपुर का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

14 अक्टूबर को संस्थान के सभी छात्र तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-4 एवं महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा. के दर्शन-वन्दन एवं सन्निधि का लाभ प्राप्त करने हेतु उपस्थित हुए। श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. ने ध्यान शिविर की व्यस्तता के बावजूद संस्थान के विद्यार्थियों के लिए अपना अमूल्य समय निकालकर पावन प्रेरणा की। श्रद्धेय श्री सुभाषमुनिजी म.सा. और श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा. ने छात्रों को जीवन-निर्माण के सूत्र दिए और जिज्ञासाओं का समाधान किया।

छात्रों ने 15 अक्टूबर को प्रात:काल पीपाड़ शहर उपस्थित होकर आचार्य भगवन्त की सेवा में रहकर दो दिन तक वहीं धर्माराधना, ज्ञान-ध्यान, संवर-साधना का लाभ लिया। पूज्य आचार्य भगवन्त ने महती कृपा कर सिद्धान्त-शाला के छात्रों को जीवन को उत्तम बनाने के लिए चार सूत्र फरमाये-

1. सिद्धान्त-शाला में आप सभी ने प्रवेश लिया और अब धर्म-संघ आप सभी की व्यवस्था कर रहा है। इसलिए आप सभी को ज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ना है और प्रमाद को दूर करना है।
2. आप सभी बच्चे भविष्य में जहाँ भी रहें वहाँ भी आप सबमें ऐसे संस्कार हों कि सिद्धान्त-शाला का नाम ऊँचा हो, संघ का उपकार मानें और आपको जिनका भी सहयोग प्राप्त हो रहा है, उन्हें भी आपकी वजह से गर्व हो।
3. पूज्य भगवन्त ने बच्चों को चिन्तन करने को कहा कि-''आप इस धर्म-संघ को प्रतिफल में क्या दे सकते हैं?'' इस संघ को भविष्य में किस प्रकार आप ऊँचाई पर ले जा सकते हैं? ऐसी पावन चिन्तन-प्रेरणा की।
4. आज तक जैनधर्म की अनेक संस्थाएँ हुई, परन्तु 'सिद्धान्त-शाला' से विगत दशकों में कोई भी छात्र संयम के मार्ग पर आगे नहीं बढ़ा है। तो इस ओर भी विचार करें।

वहीं भावी आचार्य श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा, व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-3 की पावन सन्निधि में नियमित कक्षाओं में जिज्ञासा समाधान, 800 बोल की बन्धी का थोकड़ा एवं संयम मार्ग पर आगे बढ़ने के अनेक प्रेरणादायक मार्ग प्रशस्त हुए।

17 अक्टूबर को सभी छात्र श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-4 की सेवा-दर्शन-वन्दन हेतु जोधपुर उपस्थित हुए। श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा. ने संस्थान के विद्यार्थियों को विशेष रूप से पावन प्रेरणा प्रदान की।

वर्तमान में संस्थान में 38 छात्र अध्ययनरत हैं, जो व्यावहारिक ज्ञान के साथ-साथ आध्यात्मिक ज्ञान में भी प्रगति कर रहे हैं। संस्थान में धार्मिक गतिविधियाँ निरन्तर रूप से जारी हैं। इसके अन्तर्गत हर शनिवार को मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 की सेवा में उपस्थित होकर श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री दीपेशमुनिजी म.सा. से ज्ञान-चर्चा कर वहीं रात्रिकालीन संवर का लाभ लेते हैं और हर रविवार को प्रात: होने वाली कक्षाओं में व्याख्यान आदि में भाग लेते हैं।

संस्थान के छात्र तप के क्षेत्र में भी निरन्तर रूप से आगे बढ़ रहे हैं और वर्तमान में भी छह छात्र सिद्धितप आराधना में संलग्न हैं। इसी साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ते हुए तीन छात्र सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-4 की सेवा-शुश्रुषा में गए हैं।

-दिलीप जैन, प्राचार्य

संक्षिप्त समाचार

नईदिल्ली-अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान् डॉ. अनुपमजी जैन का अभिनन्दन समारोह एवं 'अनुपम गणितज्ञ'

अभिनन्दन ग्रन्थ के लोकार्पण का कार्यक्रम हर्षोल्लासपूर्वक शिक्षक दिवस पर सम्पन्न हुआ। चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर महाराज की अक्षुण्ण परम्परा के सप्तम पट्टाचार्य आचार्य श्री अनेकान्तसागरजी महाराज एवं चारित्रचन्द्रिका गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के ससंघ सान्निध्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि माननीय श्री रामनिवासजी गोयल, दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष एवं श्री सुरेशजी जैन, कुलाधिपति तीर्थङ्कर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर के अध्यक्ष एवं पीठाधीश स्वस्तिश्री श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी ने की।

-विजय कुमार जैन, प्रबन्ध मन्त्री, जम्बूद्वीप हस्तिनापुर

बधाई

जयपुर-श्री अखिलजी सुपुत्र श्री राकेश कुमारजी जैन, सुपौत्र श्री भैरुलालजी जैन (कुश्तला वाले) ने सीएस-फाइनल ईयर की परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान के पूर्व छात्र हैं।

-अंकित जैन

जलगाँव-चि. दर्शनजी सुपुत्र श्री ईश्वरजी-सौ. मंगलाजी चोरड़िया ने सी.ए. फाईनल परीक्षा 66% अंकों के साथ उत्तीर्ण कर जलगाँव जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। *-प्रकाशचन्द जैन, जयपुर*

श्रद्धाञ्जलि

बरेली (भोपाल)-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती शान्ताजी धर्मसहायिका श्री राजेन्द्रजी नाहर (ट्रस्टी, गजेन्द्र फाउण्डेशन) का 9 अक्टूबर, 2021 को संथारा सहित समाधिमरण हो गया। आप विगत एक माह से सागारी संथारा के नियम पालन कर रही थी। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ मध्यप्रदेश के क्षेत्रीय प्रधान एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, इन्दौर के अध्यक्ष श्री विजयजी नाहर इन्दौर की आप लघुभ्राता वधू थी। आपकी परम पूज्य गुरुदेव पर अनन्य आस्था थी, आपकी धार्मिक एवं सादगी पूर्ण जीवनशैली से अनेक लोग प्रभावित थे। आपका सम्पूर्ण परिवार संघ द्वारा सञ्चालित गतिविधियों एवं प्रवृत्तियों में निष्ठापूर्वक जुड़ा हुआ है। आपने अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की मध्यप्रदेश सम्भाग की क्षेत्रीय प्रधान के रूप में अपना दायित्व बखूबी निर्वहन किया। आपके धर्मसहायक श्री राजेन्द्रजी नाहर का संघ एवं संघीय संस्थाओं की विभिन्न गतिविधियों में सहयोग प्राप्त होता है। आदरणीय श्री संजयजी नाहर संघ की कार्यकारिणी सदस्य के रूप में अपनी महनीय सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। रत्नसंघीय सन्त-सतीवृन्द के मध्यप्रदेश क्षेत्र में पधारने पर नाहर परिवार विहार सेवा में अपनी सेवाएँ प्रदान करने के साथ संघ की गतिविधियों में अपना सहयोग प्रदान करता है। आप अपने पीछे दो सुपुत्र, सुपुत्रवधू, सुपौत्र और भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

जोधपुर-संघसेवी सुश्राविका श्रीमती कृष्णाजी भण्डारी का 28 सितम्बर, 2021 को देहावसान हो गया। पारिवारिक सुंस्कारों से संस्कारित धार्मिक संस्कारों के प्रति जागरूक श्राविका सन्त-सतीवृन्द की सेवा में तत्पर रहती थी। आपका जीवन सरलता, मधुरता, सहिष्णुता, उदारता जैसे सद्गुणों से ओतप्रोत था। आपके चेहरे पर सदा शान्ति-सौम्यता झलकती रहती थी। आप नियमित रूप से

घोड़ों के चौक स्थानक में पधार कर गुरु भगवन्तों के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ प्राप्त करने वाली अग्रणी श्राविका थी। आप रत्नसंघीय श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. की सांसारिक धर्मसहायिका थी। केवल आप ही नहीं सम्पूर्ण भण्डारी परिवार रत्नसंघ की सभी गतिविधियों में सक्रिय रूप से जुड़ा हुआ है। सन्त-सतीवृन्द की सेवा तथा स्वधर्मी भाई-बहिनों के आतिथ्य-सत्कार में भी भण्डारी परिवार सदैव तत्पर रहा है।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

चेन्नई-धर्मनिष्ठ, संघ-सेवी, सुश्रावक श्री सूरजमलजी भण्डारी का 20 अक्टूबर, 2021 को देहावसान हो गया। सबके साथ सामञ्जस्य पूर्ण व्यवहार आपके जीवन की प्रमुख विशेषता थी। गुरु भगवन्तों के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ प्राप्त करने में आप अग्रणी थे। वर्ष 2016 में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा तथा व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा के निमाज चातुर्मास में आपने सपरिवार अपूर्व धर्म-ध्यान का लाभ प्राप्त किया। सम्पूर्ण परिवार संघ द्वारा सञ्चालित गतिविधियों एवं प्रवृत्तियों में निष्ठा पूर्वक जुड़ा हुआ है। आदरणीय श्री सूरजमलजी भण्डारी ने अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय संयुक्त महामन्त्री पद का दायित्व बखूबी निर्वहन किया था। स्वाध्याय संघ के माध्यम से चेन्नई में स्वाध्यायियों की नियुक्ति में भी आप कई वर्षों तक सक्रिय रहे। सन्त-सतीवृन्द की सेवा तथा स्वधर्मी भाई-बहिनों के आतिथ्य-सत्कार में भण्डारी परिवार सदैव तत्पर है।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

जोधपुर-धर्मनिष्ठ, श्रद्धानिष्ठ, संघ-सेवी युवा श्री लोकेशजी सिंघवी का 16 अक्टूबर, 2021 को देहावसान हो गया। आप स्थानक पधार कर गुरु भगवन्तों के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ प्राप्त करने में अग्रणी थे। आप रत्नसंघीय श्रद्धेय स्व. श्री कैलाशमुनिजी म.सा. के सांसारिक वीर भतीजे थे। केवल आप ही नहीं सम्पूर्ण सिंघवी परिवार रत्नसंघ की सभी गतिविधियों में सक्रिय रूप से जुड़ा हुआ है। बारणी एवं जोधपुर में पधारने वाले सन्त-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में भी सिंघवी परिवार पूर्ण रूप से सन्नद्ध रहता है। रजलानी गाँव में सामायिक-स्वाध्याय भवन के निर्माण में आपका अपूर्व सहयोग रहा। व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकँवरजी म.सा. आदि ठाणा के बारणी चातुर्मास में आप सहित समस्त सिंघवी परिवार ने अपूर्व धर्म-ध्यान का लाभ प्राप्त किया। सन्त-सतीवृन्द की सेवा तथा स्वधर्मी भाई-बहिनों के आतिथ्य-सत्कार में सिंघवी परिवार सदैव तत्पर रहा है।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

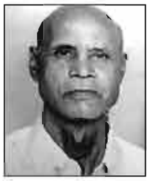

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री सिद्धराजजी सुपुत्र स्वर्गीय श्री मानकराजजी-स्व. श्रीमती केशरकँवरजी सुराणा का 22 जून, 2021 को स्वर्गगमन हो गया। आप सरल स्वभावी, मधुर भाषी श्रावक रत्न थे। गुरु हस्ती-हीरा-मान के प्रति समर्पित श्रावकरत्न का जीवन सामायिक-स्वाध्याय में रत था। आप जीवदया प्रेमी भी थे। घोड़ों का चौक क्षेत्र में सन्त-सतीवृन्द की सेवाभक्ति में सदैव तत्पर रहते थे। संघ की सभी गतिविधियों में आपका सहयोग प्राप्त होता रहता था।

अहमदाबाद-धर्मपरायण सुश्राविका श्रीमती कमला देवीजी धर्मपत्नी श्री हीरालालजी जीरावला का 20 अक्टूबर को अहमदाबाद में संथारा सहित देवलोकगमन हो गया। दरियापुरी सम्प्रदाय के साध्वी श्री चारुलताजी महाराज ने संथारे के प्रत्याख्यान करवाए और परिवारजनों ने अन्तिम समय तक सेवा के साथ धार्मिक भजनों का गान किया एवं नवकार महामन्त्र जाप किया। 84 वर्षीय श्रीमती कमला देवीजी का जीवन धर्म परायण, तप त्याग, सामायिक साधना एवं साधु-साध्वी की सेवा शुश्रूषा से युक्त

रहा। विदुषी महासती श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. आदि ठाणा के गाँधीनगर तथा व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा और सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के अहमदाबाद चातुर्मास में आप सहित समस्त परिवारजनों ने दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण के साथ धर्म-ध्यान का लाभ प्राप्त किया। सन्त-सतीमण्डल के बालोतरा-अहमदाबाद शेखेकाल विराजने पर तथा चातुर्मास में जीरावला परिवार की महनीय सेवाएँ रही हैं। स्वर्गीय हीरालालजी जीरावला, आचार्यश्री हस्तीमल जी महाराज के अनन्य श्रावक रहे, स्थानकवासी परम्परा के प्रति सदैव सेवा में तत्पर रहते। उनकी 6 सुपुत्रियों, जमाई एवं विशेषत: श्री प्रकाशजी पारेख परिवार ने श्रीमती कमला देवीजी की स्वास्थ्य साधना एवं धर्म साधना में पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

-सुरेंद्र जीरावला, ओम प्रकाश बांठिया, ललित गुलेछा, अहमदाबाद

बून्दी-संघसेवी सुश्रावक श्री धनराजजी सुपुत्र स्व. श्री नोलीलालजी भड़कत्या का 02 अक्टूबर, 2021 को स्वर्गवास हो गया। आप एक सुधर्मी, दृढ़धर्मी श्रावक थे। आप स्थानक में आकर प्रतिदिन सामायिक करते थे तथा सामायिक एवं पच्चीस बोल को सीखने एवं सिखाने की प्रेरणा किया करते थे। स्थानक के निर्माण एवं जीर्णोद्धार में आपका विशेष सहयोग रहा। आपने मुख्य स्थानक एवं गुगलियों वाले स्थानक की सार-सम्भाल की जिम्मेदारी बहुत ही कुशलता से निभाई। आप एक कुशल सर्राफा व्यवसायी थे। ज्वैलरी एसोसियेशन के आप अध्यक्ष भी रहे। आप अपने पीछे भरापूरा सुसंस्कारित परिवार छोड़कर गये हैं।

-चन्द्रप्रकाश मेहता, मन्त्री

जोधपुर-धर्मनिष्ठ, संघ-सेवी श्री अमरमलजी मेहता का 20 अक्टूबर, 2021 को संथारापूर्वक समाधिमरण हो गया। आपका जीवन संघ एवं समाज सेवा में समर्पित रहा। आपकी सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आप नियमित सामायिक-प्रतिक्रमण आदि धर्म-साधना करते थे। गुण ग्राहकता, अप्रमत्तता-निरभिमानता आपके विशिष्ट गुण थे। आत्मचिन्तन-आत्मरमण में लीन आपने शरीर से ममत्व त्याग तो किया ही, कुछ समय पश्चात् समाधिभावों में नश्वर देह का त्याग भी कर दिया। मेहता परिवार संघ-सेवा में सक्रिय है।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं सभी सम्बद्ध संस्थाओं के सदस्यों की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

जिनवाणी पर अभिमत

श्री पारसचन्द जैन

खुशनसीब हैं वे सब,
जो नित पढ़ते हैं 'जिनवाणी'
घर बैठे मिल जाती भाई,
पढ़ने को सन्तों की वाणी,
कर कर्मों की निर्जरा,
मोक्ष मार्ग पर बढ़ाती है 'जिनवाणी'
अणुव्रतों का पालन करने को,
कहती हरदम हमको 'जिनवाणी'
दिलवाकर विजय कषायों पर,
जीवन निर्मल बनाती 'जिनवाणी'
मोक्ष मार्ग पर निश्चय ही बढ़ते हैं,
जो पढ़ते हैं 'जिनवाणी'
धन्य हैं सम्पादक मण्डल भी,
जो छपवाते नियमित 'जिनवाणी'
हर अंक में नयी सामग्री लेकर
हर माह आती है 'जिनवाणी'

-सेवानिवृत्त संयुक्त निदेशक शिक्षा, बस स्टैण्ड के पीछे, जनता कॉलोनी, देवली-304804, जिला-टोंक (राजस्थान)

❀ साभार-प्राप्ति-स्वीकार ❀

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 16255 से 16261 तक कुल 7 सदस्य बने।

जिनवाणी मासिक पत्रिका प्रकाशन योजना हेतु साभार प्राप्त

100000/-	पुष्पा चन्द्रराज सिंघवी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई (महा.)
100000/-	श्री राजेन्द्रजी नाहर, भोपाल (मध्यप्रदेश)
100000/-	श्रीमती लाड जी हीरावत, जयपुर (राजस्थान)

जिनवाणी मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त

5100/-	श्री निर्मलकुमारजी मनोहरकुमारजी बम्ब (निमाज वाले) बैंगलौर, सुपौत्री कुमारी कियाराजी के सातवें जन्म दिवस 15.10.2021 के उपलक्ष्य में।
5100/-	श्रीचन्दनमलजी रूणवाल, मैसूर, सदार (सुशीला जी) आजीवन शीलखंद गुरुदेव से ग्रहण करने के उपलक्ष्य में।
3100/-	मदनलालजी, विजयकुमारजी, अभयजी, दर्शनजी बोहरा सोईन्तरा वाले, आवडी-चैन्नई, गुरुचरण सन्निधि में साधना आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में।
3100/-	श्रीमती कंचनजी, नरेन्द्रजी, सुरेन्द्रजी, पदमजी रांका, जोधपुर, स्व. श्री शान्ति लालजी रांका (पालासनी वाले) का 07 अक्टूबर, 2020 को स्वर्गगमन हो जाने पर उनकी प्रथम पुण्य स्मृति में।
2500/-	श्रीमती प्रभाजी जैन धर्मपत्नी डॉ. राजकुमारजी छाबडा, जयपुर जिनवाणी को सप्रेम भेंट।
2100/-	श्रीमती दाखाबाईजी जैन, अलीगढ-रामपुरा अपने सुपौत्र अर्चित जैन (सुपुत्र श्री राजेन्द्र कुमार जी जैन) के आई.टी.जी.आई. में एग्ज्युक्युटिव पद पर पदभार ग्रहण करने के उपलक्ष्य में।
2100/-	श्री शान्तिलालजी गांधी, भीलवाडा, जिनवाणी हेतु सप्रेम।
2100/-	श्रीमती प्रमिलाबाई मोहनलालजी जोगड, पिलखोड (चालीस गांव) जिनवाणी को सप्रेम।
2100/-	वीरमाता श्रीमती विमलादेवीजी कांकरिया धर्मपत्नी स्व. श्री भंवरलालजी कांकरिया, नागौर एवं परिवार महासती श्री हेमप्रभाजी म.सा. की मासखमण की तपस्या के उपलक्ष्य में।
2100/-	श्री प्रकाशमलजी सुनीलजी, हर्षजी बोथरा (भोपालगढ़ वाले) जोधपुर जिनवाणी को सप्रेम।
2100/-	श्री निर्मलकुमारजी डागा, बून्दी, सपरिवार गुरुचरण सन्निधि में साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में।
2100/-	श्री महेन्द्रजी, बुधमलजी, जितेन्द्रजी पुत्र स्व. श्री हस्तीमलजी बोहरा (रतकुडिया वाले), पीपाडसिटी बोहरा परिवार में श्री महावीरजी-मासखमण, रमेशजी-11, अशोकजी-11, पवनजी-11, हेमलताजी-11, अंजुजी-11, महिमाजी-11, संगीताजी-10, चेतनाजी-10, पूजाजी-9, महेन्द्रजी-8, सुमनजी-तेला, सुरभिजी-तेला की तपस्या पारणक सातापूर्वक होने के उपलक्ष्य में।
2100/-	श्री दिलीपजी, राजेशजी बाफना, चेन्नई महासती श्री शशिकलाजी म.सा. के सांसारिक भ्राता (वीर भ्राता) द्वारा मासक्षपण की तपस्या सानन्द सम्पन्न करने के उपलक्ष्य में।
2100/-	वीरपिता श्री शान्तिलालजी वीरभ्राता श्री मेघराजजी जैन (चौरू वाले), जयपुर की ओर से सप्रेम।
2000/-	श्री सागरमलजी, महावीरचन्दजी, राजेशजी छाजेड, कुरछी-धनारी वाले हालमुकाम-चेन्नई जिनवाणी सहयोगार्थ।
2000/-	श्री सागरमलजी, महावीरचन्दजी, राजेशजी छाजेड, कुरछी-धनारी वाले हालमुकाम-चेन्नई सपरिवार गुरुचरण सन्निधि में साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में।
2000/-	श्री एस.एस.जैन संघ, विल्लुपुरम, विल्लुपुरम श्रीसंघ में रत्नसंघीय महासतीवर्याओं के चातुर्मास से धर्मध्यान, तप-त्याग, व्रत-प्रत्याख्यानपूर्वक धर्मोल्लास व्याप्त होने की खुशी में।
2000/-	श्री रिखबचन्दजी सुपुत्र स्व. श्री हीरालालजी बम्ब (निमाज वाले), विल्लुपुरम पुत्रवधू श्रीमती अनीताजी-15, श्रीमती शीतल-11, सुपौत्री सुश्री रक्षिताजी के 11 की तपस्याएँ समाधिपूर्वक सम्पन्न

होने की खुशी में।

2000/- श्री रिखबचन्दजी सुपुत्र स्व. श्री हीरालालजी बम्ब (निमाज वाले) विल्लुपुरम, स्वयं के तेला, सुपुत्र श्री सुशीलजी के तेला, सुपौत्र श्री हितेषजी के तेला, श्री यशवन्तजी सुपौत्र के पचौला की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

2000/- श्री उम्मेदमलजी, श्रीमती शान्तिदेवीजी, श्री नरेन्द्र कुमारजी लुणावत, जोधपुर/मुम्बई सपरिवार गुरु भगवन्त एवं सन्त-सतीवृन्द की चरण सन्निधि में साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में।

1100/- श्री सागरमलजी, महावीरचन्दजी, राजेशजी छाजेड (कुरछी-धनारी वाले), चेन्नई, सुपुत्र श्री राजेशजी द्वारा सपत्नीक गुरु आम्नाय ग्रहण करने की खुशी में।

1100/- श्री राकेशजी भडकतिया, बून्दी पूज्य पिताजी श्री धनराजजी भडकतिया का 02 अक्टूबर, 2021 को स्वर्गवास होने पर पुण्य स्मृति में।

1100/- श्रीमती शकुन्तलाजी जैन, अलवर सप्रेम।

1100/- श्री सुरेशकुमारजी, दिलीपकुमारजी, चन्द्रकान्ताजी रांका परिवार पालासनी वाले, हालमुकाम पीपलगांव गुरुचरण सन्निधि में साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में।

1100/- श्री प्रकाशचन्दजी, आशीषजी, अमितजी डोसी, चेन्नई, गुरुचरण सन्निधि में साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में।

1100/- श्री सुरेशकुमारजी, अशोककुमारजी, भरतकुमार जी, भावेशकुमारजी हिंगड़, पहुना-चित्तौड़गढ़, श्रीमती जतनदेवीजी धर्मसहायिका श्री सुरेशकुमार जी हिंगड़ के ग्यारह की तपस्या एवं भतीजे श्री भावेशजी सुपुत्र श्री अशोककुमारजी हिंगड़ के प्रथम बार तेले की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री राजमलजी गौतमचन्दजी ओस्तवाल (भोपालगढ़ वाले) बैंगलौर, सपरिवार गुरुचरण सन्निधि में साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में।

1100/- श्री डालचन्दजी मोहित कुमारजी जैन, मौजपुर, अलवर, पुत्रवधू सुहानीजी के सी.ए. बनने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री नरेन्द्रजी जैन, श्रीमती रेणुकाजी जैन, श्री आदेशजी जैन-श्रीमती कोमलजी जैन, कुमारी सुहानी, कुमार-अबीर लुणावत जैन, जोधुपर/मुम्बई जिनवाणी सहयोगार्थ।

1100/- श्री राजेन्द्रजी सौरभजी हर्ष जी चोरड़िया, बैंगलौर, गुरुचरण सन्निधि में साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल हेतु साभार

1100/- वीरमाता श्रीमती विमलादेवीजी कांकरिया धर्मपत्नी स्व.श्री भंवरलालजी कांकरिया, नागौर एवं परिवार महासती श्री हेमप्रभाजी म.सा. की मासखमण की तपस्या के उपलक्ष्य में।

आगामी पर्व-तिथि

कार्तिक शुक्ला 8, गुरुवार	**11.11.2021**	**अष्टमी**
कार्तिक शुक्ला 13, बुधवार	**17.11.2021**	**संघ समर्पण दिवस (संकल्प दिवस)**
कार्तिक शुक्ला 14, गुरुवार	**18.11.2021**	**चातुर्मास समापन (चातुर्मासिक पर्व)**
कार्तिक शुक्ला 15, शुक्रवार	**19.11.2021**	**वीर लोंकाशाह जयन्ती**
मार्गशीर्ष कृष्णा 2, रविवार	**21.11.2021**	**युवाशक्ति दिवस (व्यसन-मुक्ति दिवस)**
मार्गशीर्ष कृष्णा 8, शनिवार	**27.11.2021**	**अष्टमी**
मार्गशीर्ष कृष्णा 12, बुधवार	**01.12.2021**	**आचार्य पूज्य श्री विनयचन्द्रजी म.सा. का 106 वाँ स्मृति-दिवस**
मार्गशीर्ष कृष्णा 14, शुक्रवार	**03.12.2021**	**चतुर्दशी, पक्खी**
मार्गशीर्ष शुक्ला 8, शनिवार	**11.12.2021**	**अष्टमी**

बाल-जिनवाणी

प्रतिमाह बाल-जिनवाणी के अंक पर आधारित प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को सुगनचन्द प्रेमकँवर रांका चेरिटेबल ट्रस्ट-अजमेर द्वारा श्री माणकचन्दजी, राजेन्द्र कुमारजी, सुनीलकुमारजी, नीरजकुमारजी, पंकजकुमारजी, रौनककुमारजी, नमनजी, सम्यक्जी, क्षितिजजी रांका, अजमेर की ओर से पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-600 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-400 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 300 रुपये तथा 200 रुपये के तीन सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

सामायिक-प्रश्नोत्तर

प्र. 1–तिक्खुत्तो के पाठ में आये हुए 'सक्कारेमि' और 'सम्माणेमि' का क्या अर्थ है?

उत्तर– 'सक्कारेमि' का अर्थ है-गुणवान पुरुषों को वस्त्र, पात्र, आहार, आसन आदि देकर उनका सत्कार करना। 'सम्माणेमि' का अर्थ है–गुणवान पुरुषों का मन और आत्मा से बहुमान करना।

प्र. 2–पर्युपासना कितने प्रकार की होती है?

उत्तर– पर्युपासना तीन प्रकार की होती है-1. विनम्र आसन में सुनने की इच्छा सहित वन्दनीय के सम्मुख हाथ जोड़कर बैठना, कायिक पर्युपासना है। 2. उनके उपदेश के वचनों का वाणी द्वारा सत्कार करते हुए समर्थन करना, वाचिक पर्युपासना है। 3. उपदेश के प्रति अनुराग रखते हुए मन को एकाग्र रखना, मानसिक पर्युपासना है।

-'श्रावक सामायिक प्रतिक्रमणसूत्र' पुस्तक से

Question Answer

Sh. Dulichand Jain

Q1. How Can we practice austerities?

Ans. The objective of performing austerities (*tapa*) is to reduce the buildup of karmic particles on the soul. Two types of austerities are mentioned in Jaina literature : external (*bāhya*) and interal (*ābhyantara*)

External austerities are of six kinds :

1. *Anaśana* : Fasting for a defined period.
2. *Ūnodarī* : Eating less than required.
3. *Vṛtti Saṁkṣepa* : Restrictions in seeking alms (esp. for ascetics) and eating.
4. *Rasa parityāga* : Abstinence from delicious food.
5. *Kāyakleśa* : Penance, Enduring bodily affliction.
6. *Partisaṁlīnatā* : Staying in a forlorn place by renouncing comforts.

Internal austerities are of six kinds :

1. *Prāyaścitta* : Atonement for our sins.
2. *Vinaya* : Humility and reverence.
3. *Vaiyāvṛttya* : selfless service to monks, nuns and needy, including animals and birds.
4. *Svādhyāya* : Study of scriptures.
5. *Kāyotsarga* : Detachment from bodily activities.
6. *Dhyāna* : Meditation.

-Book "With the Ferrgman"

संयम शिरोमणि

कोमल जैन

सं – संयम समाचारी, अनुशासन दृढ़ता का।
सभी से, व्यवहार करते हैं मृदुता का।।

य – यतनापूर्वक क्रिया दिखती है जीवन में।
यशस्वी हैं जिनशासन के उपवन में।।
म – मधुर है आपका प्रवचन प्रवाह।
मन सुनकर करता है वाह-वाह।।
दि – दिव्य-भव्य व्यक्तित्व को करते हैं नमस्कार।
दिन-रात प्रभु में, प्रभु वाणी में रहते हैं एकाकार।।
व – वर्णन कहाँ तक करे गुणों का।
वरदान हैं आप संयम के प्राणों का।।
स – सत्यान्वेषी बन प्रभु पथ पर डग भरते।
सहिष्णुता के गुण से संघनभ में गुरु हीरा चमकते।।

-सुपुत्री श्री राजेन्द्र कुमारजी जैन,
5/90, गाँधीनगर, जयपुर-302015 (राज.)

बातचीत का तरीका

मीनाक्षी चौपड़ा

एक कहावत है, 'बातन हाथी पाइए, बातन हाथी पाँव।' इसका मतलब यह है कि अगर ढंग से बात की जाए तो सुनने वाला खुश होता है, ईनाम भी दे सकता है। अगर बातचीत का तरीका गलत या खराब हो, तो लोग नाराज़ हो सकते हैं, यहाँ तक कि सज़ा भी दे सकते हैं।

अब घर की ही बात लो। घर में माता-पिता होते हैं, दादा-दादी होते हैं और भी बहुत-से बड़े लोग होते हैं। वे सब तुम्हारी देखभाल करते हैं। इस बात का प्रयत्न करते हैं कि तुम अच्छे बनो, अपने पैरों पर खड़े हो सको और समाज में सम्मान पा सको। जब वे तुम्हारे लिए इतना सब कुछ करते हैं, तो तुम्हारा भी कर्त्तव्य हो जाता है कि उनसे नम्रता से, शिष्टता से बात करो। सबसे बड़ी बात यह है कि कल तुम भी बड़े हो जाओगे, तब तुम्हें क्या अच्छा लगेगा कि छोटे तुमसे अशिष्टता से बात करें।

हर समाज में बातचीत अलग-अलग ढंग से होती हैं, किन्तु सब चाहते हैं कि बड़ों के प्रति आदर का भाव रहे। बातचीत इस तरह से हो कि सुनने वाले को चोट न पहुँचे, उसका मन दु:खी न हो। बातचीत के अच्छे तरीकों में पहली महत्त्वपूर्ण बात है, विनम्रता। मान लो, किसी बड़े व्यक्ति ने तुम्हें बुलाया। अगर बातचीत का तरीका तुम्हें आता है, तो तुम कहोगे, 'जी आया।' नहीं तो कहोगे 'हाँ आता हूँ।' पहले उत्तर से बुज़ुर्ग खुश होंगे। दूसरे उत्तर से वे नाराज़ भले न हों, पर खुश भी नहीं होंगे।

बातचीत में विनय झलकना चाहिए। बातचीत करते समय अपनी ही बात नहीं हाँकनी चाहिए। सामने वाले की बात को भी पूरे ध्यान और धीरज से सुनना चाहिए। बीच में ही बार-बार टोकना अच्छा नहीं माना जाता। अगर टोकना जरूरी हो, तो कहना चाहिए- ''माफ कीजिए, मैं आपसे सहमत नहीं हूँ या माफ कीजिए, आपकी बात स्पष्ट नहीं है।''

तुम्हें देखना होगा कि कभी-कभी जब कई लोग किसी विषय पर बातचीत कर रहे होते हैं, तो कुछ लोग एक साथ उठकर प्रश्न करने लगते हैं, नतीजा यह होता है कि किसी की बात किसी को सुनाई नहीं पड़ती और केवल हो-हल्ला होने लगता है। अगर ऐसा मौका आए, तो तुम भी अपनी बारी आने पर ही प्रश्न पूछना।

यह तो तुम जानते ही हो कि अपने से बड़ों से, कम परिचित या बराबरी वालों से 'कृपा कर, कृपया' आदि कहकर कोई चीज़ माँगनी चाहिए और जब वस्तु मिल जाए तो 'धन्यवाद' कहना चाहिए।

तुमने एक बात देखी होगी कि पास-पास बैठकर बातचीत करते हुए भी कुछ लोग बहुत जोर-जोर से बोलते हैं। कभी-कभी यह भी देखा होगा कि प्रश्न पूछने वाला तो धीरे से प्रश्न पूछता है, लेकिन उत्तर देने वाला जोर-जोर से बोलकर जवाब देता है। ऐसा करना अच्छा नहीं माना जाता। सामने वाला कोई बहरा तो है नहीं। जोर से बोलने पर आस-पास के लोगों को परेशानी हो सकती है। आवाज़ ऐसी होनी चाहिए कि सामने वाला आसानी से सुन सके।

अच्छी बातचीत के लिए अच्छी भाषा भी होनी चाहिए। अच्छी भाषा के लिए ज़रूरी है कि अच्छी-अच्छी पुस्तकें पढ़िए। जब कोई बातचीत में किसी अच्छे शब्द का प्रयोग करे, तो उसे ध्यान से सुनिए। धीरे-धीरे अपनी बातचीत में उन शब्दों को लाने की कोशिश कीजिए।

सबसे बड़ी बात है कि बातचीत बहुत सहज और स्वाभाविक लगनी चाहिए। इसलिए जरूरी है कि विनम्रता और शिष्टाचार आपके जीवन का एक हिस्सा बन जाए। बातचीत में दिखावा या बनावटीपन न झलके।

-सुपुत्री श्री प्रकाशचन्दजी चौपड़ा, शिवनगर, फॉयसागर रोड़, अजमेर-305001 (राजस्थान)

खड़े होकर पानी पीने से होने वाली बीमारियाँ

श्री अभय कुमार जैन

आयुर्वेद में पानी पीने के कई नियम बताये गये, इन्हीं में से एक नियम है-बैठकर पानी पीना। अगर हम खड़े होकर पानी पीते हैं तो इससे कई तरह की बीमारियाँ होने की आशंका बढ़ जाती है। इसका हमारे शरीर के कई हिस्सों पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है।

किडनी में खराबी-पानी बिना छने ही किडनी से बाहर निकलने लगता है, इससे किडनी में इन्फेक्शन या किडनी खराब होने का खतरा बढ़ जाता है।

हृदय रोग-भोजन का पाचन ठीक तरह से नहीं हो पाता है, ऐसे में यह भोजन कोलेस्ट्रॉल में बदलने लगता है, जो हृदय रोग की आशंका बढ़ाता है।

गठिया-शरीर में तरल पदार्थ का अनुपात बिगड़ने से जोड़ों को पर्याप्त तरल नहीं मिल पाता है जिससे गठिया की समस्या हो सकती है।

अल्सर की समस्या-एसोफेगस नली के निचले हिस्से पर बुरा असर पड़ने लगता है, ऐसे में अल्सर की समस्या का खतरा बढ़ सकता है।

अपाचन-खाना ठीक तरीके से पच नहीं पाता, ऐसे में अपच तथा कब्ज़ की समस्या बढ़ जाती है।

लेकिन जब आप बैठकर पानी पीते हैं तो आपकी इन्द्रियों को शान्ति मिलती है, पानी को घूँट-घूँट कर बैठकर पीना चाहिए। एक गिलास पानी पीने में एक-डेढ़ मिनट लगना चाहिए। पानी एक साथ भी नहीं पीना चाहिए। थोड़े-थोड़े अन्तराल पर पानी पीयें, ऐसा करने से पानी में मौजूद पोषक तत्त्व अच्छे से अवशोषित हो पायेंगे और पेट फूलने, गैस और हाइपर टेंशन की समस्या की आशंका कम रहेगी।

-'तृप्ति', बन्दा रोड़, भवानीमण्डी-326502 (राज.)

साँप की सीख

डॉ. प्रेमसुख सुराणा

एक व्यक्ति अपने गाँव से शहर जा रहा था। रास्ते में उसे एक वन के बीच में से गुजरना था। धूप और पसीने से व्याकुल जब वह उस सघन वन में पहुँचा, तो वृक्षों की शीतल छाया देखकर, एक बहुत घने पेड़ के नीचे अपनी चादर बिछाकर लेट गया।

सहसा उसने देखा कि पेड़ की जड़ में बनी बाँबी में से एक साँप धीरे-धीरे बाहर आ रहा है। वह डरकर एकदम उठ-बैठा, किन्तु साँप ने उसकी ओर देखा तक नहीं। साँप के मुँह में एक मणि थी, जो बहुत चमक रही थी। बाँबी से कुछ दूर आकर साँप ने वह मणि जमीन पर रख दी और लौट गया। मणि देखकर आदमी अवाक् रह गया, लेकिन आगे बढ़कर उस मणि को छूने या उठाने का साहस न कर सका। बस, चुपचाप बैठा उस चमचमाती मणि को देखता रहा।

थोड़ी ही देर के बाद साँप फिर बाहर आया। इस बार भी उसके मुँह में वैसी ही प्रकाशमान मणि थी। साँप उसी प्रकार सरकता हुआ, आदमी की ओर बिना देखे पहली मणि के पास पहुँचा और दूसरी मणि को उसके पास रख, फिर बाँबी में घुस गया।

कुछ देर बाद साँप बाँबी में से तीसरी मणि लेकर बाहर आया, फिर चौथी और फिर पाँचवीं। इस प्रकार उन्हें एक जगह एकत्रित करता रहा। आदमी मन्त्र-मुग्ध होकर यह सब कौतुक देखता रहा। उसे ध्यान ही नहीं रहा कि सूर्य ढलने लगा है और उसे रात होने से पहले शहर पहुँच जाना है। वह एकटक उन चमचमाती मणियों को देखता रहा।

जब बहुत देर हो गई तो साँप बाँबी से बाहर नहीं आया, तो उस आदमी ने हिम्मत बाँधी और जल्दी से

मणियों के निकट पहुँचकर फुर्ती के साथ उन्हें अपनी चादर में बाँधा और अपने घर की ओर भागने लगा। लेकिन, उसका गाँव बहुत दूर था। इसलिए उसने निश्चय किया कि पास के गाँव में अपने जान-पहचान वाले आदमी के यहाँ रात बिताएगा और सुबह अपने घर लौट जाएगा।

अपनी जान-पहचान वाले आदमी के घर पहुँचने पर उसकी बड़ी आवभगत हुई। अपनी गठरी सिरहाने रखकर आदमी बिस्तर पर लेट गया, मगर उसे नींद नहीं आई। उसे यही डर बना रहा कि अगर वह सो गया और किसी ने उसकी गठरी पार कर ली, तो वह जीते-जी ही मर जाएगा।

आखिर उससे रहा नहीं गया। घर के सब लोगों के सो जाने पर वह दबे पाँव उठा और अपनी गठरी लेकर बरामदे के दूसरे कोने तक गया, जहाँ कड़वे तेल का दीपक जल रहा था। नीचे ही कड़वे तेल की एक हाण्डी रखी थी। आदमी कुछ देर सोचता रहा। उसके बाद उसने हाण्डी पर से ढकने की प्लेट उठाई और चादर से मणियाँ निकाल कर हण्डिया के अन्दर डाल दीं और ढक्कन को उसी तरह हाण्डी के ऊपर रख, अपने बिस्तर तक पहुँच गया। निश्चिन्त हो जाने के कारण उसे गहरी नींद आ गई।

आधी रात को उसके परिचित की पत्नी को प्रसव पीड़ा शुरू हुई और थोड़ी ही देर में उसने एक लड़की को जन्म दिया।

जच्चा और बच्ची के लिए तेल की आवश्यकता हुई तो नवजात बच्ची की दादी ने तेल की हाण्डी पर से ढक्कन उठाया, मणियों की चमक से उसकी आँखें चुन्धिया गई। बच्ची की दादी ने समझा, नई बच्ची लक्ष्मी है और अपने साथ लक्ष्मी लेकर घर में आई है। बच्ची को सौभाग्यशाली समझ, उसने मणियों को तेल की हाण्डी से बाहर निकाला और उन्हें पोंछकर एक पोटली में सम्भाल कर रख दिया। जितने तेल की जरूरत थी, उतना तेल लेकर दादी ने हाण्डी फिर बरामदे में रख दी।

पौ-फटते ही वह आदमी उठा और तेल की हाण्डी की ओर लपका। जैसे ही उसने ढक्कन उठाया, उसके पैर के नीचे से धरती खिसक गई। हाण्डी में थोड़ा तेल तो था, मगर मणि एक न थी। वह किसी से क्या कह सकता था? उतरा हुआ सा चेहरा लिए हुए वह फिर उल्टे पैरों वन में उसी स्थान, उसी बरगद के नीचे पहुँचा और जोर-जोर से रोने लगा।

थोड़ी देर बाद उसने देखा, बाँबी में से साँप सरकता हुआ बाहर आ रहा है। उसके मुँह में पहले दिन की भाँति एक मणि भी है। आदमी का रोना-धोना थम गया। साँप ने मणि धरती पर रख दी और वापस अपनी बाँबी में चला गया।

वह आदमी काफी देर तक प्रतीक्षा करता रहा कि साँप दूसरी मणि लेकर फिर बाहर आएगा, लेकिन जब साँप बाहर नहीं आया तो आदमी ने उसी प्रकार रोना-धोना, शुरु कर दिया। वह इस प्रकार विलाप कर ही रहा था कि बाँबी में एक गम्भीर आवाज़ आई-''अरे मूर्ख! तू क्यों इस प्रकार शोक कर रहा है? तेरे पास था ही क्या, जो तू लुट गया? वे मणियाँ तेरी कहाँ थीं ? क्या तूने उन्हें अर्जित किया था? क्या तूने श्रमकर उन्हें प्राप्त किया था? फिर उनके चले जाने पर तू इस प्रकार क्यों विलाप कर रहा है?''

देख! तेरे परिचित के घर में जो कन्या उत्पन्न हुई है, अपने पिछले किसी जन्म में, मैं उनका ऋणी था। ये मणियाँ उसी की थीं, जो कल रात मैंने तेरे माध्यम से उसके पास पहुँचा दी। तू तो हरकारा भर था, जिसने मुझसे मणियाँ लेकर उस तक पहुँचा दी। तेरी मेहनत के लिए मैंने अब तुझे एक मणि दे दी है। यह तेरे श्रम का पुरस्कार है। हँसी-खुशी इसे उठा ले और अपने घर जा। गड़े घड़े या रास्ते में मिले धन से व्यक्ति धनी नहीं बनता। तू श्रम कर और अपने लिए स्वयं धन अर्जित कर। उसी से तुझे सुख-सन्तोष मिलेगा।

-39/15, प्रेम चौक, पुरानी मण्डी, अजमेर-305001
(राज.)

बाल-स्तम्भ

सुन्दरी का पति

श्रीमती कमला हणवन्तमल सुराणा

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 दिसम्बर, 2021 तक **जिनवाणी सम्पादकीय कार्यालय, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.)** के पते पर प्रेषित करें। **उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें।** श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार-200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

सुन्दरी सुबह सात बजे काम करने के लिए घर से निकलती थी। उसकी सास दो गरम रोटी और चाय बनाकर उसे बड़े प्रेम से खिलाकर भेजती थी। सुन्दरी बहुत समझदार कर्मठ महिला थी। उसके हँसते-खिलखिलाते चेहरे से सभी लोग प्रसन्न रहते थे। घर से निकलते समय भगवान से प्रार्थना करती थी कि यह दिन शुभ निकले। वह प्रतिदिन दस घरों में अलग-अलग प्रकार के काम करती थी। झाडू-पोंछा, बर्तन साफ करना, साग-सब्जी काटना, कपड़े धोना आदि-आदि। काम वाले घरों में पहुँचते ही वहाँ की स्वामिनियों को नमस्कार करके काम प्रारम्भ करती थी। मस्ती से काम करने के कारण उसे काम बोझ नहीं लगता था।

सुन्दरी की सास-''सुन्दरी बेटी! तू सुबह से शाम तक काम करती है। दो-तीन घरों का काम मैं भी करने लगूँ तो घर अच्छी तरह से चलेगा।''

सुन्दरी-''नहीं सासू माँ! आप पूरे घर का काम सम्भाले हुए हैं यह कोई कम बात नहीं है। आप सुगृहिणी हैं।''

सुन्दरी का पति स्टील के बर्तन बनाने की फैक्ट्री में कार्य करता था। वेतन भी अच्छा मिलता था, लेकिन वह कामचोर था। अवकाश में अधिक रहता था। ठाला बैठा रहता था, उसके वेतन में से अवकाश के रुपये कट जाते थे। कुछ रुपये शराब पीने में उड़ा देता था। घर में नाम के पैसे ही देता था। कोरोना वॉयरस में सुन्दरी के पति ललित को नौकरी से निकाल दिया गया। लॉकडाउन के कारण सुन्दरी भी घर बैठी थी। अब तो घर चलाना कठिन हो गया। सरकार द्वारा चावल, गेहूँ, दालें और दानवीरों द्वारा खाने के पैकेट मिलने के बाद भी कठिनाई से जीविका चल रही थी। घर में कुछ संग्रह किए हुए रुपये समाप्त होने लगे।

लॉकडाउन समाप्त हुआ, बच्चों की पढ़ाई ऑनलाइन होने लगी। सुन्दरी का बड़ा बेटा सूर्य आठवीं में पढ़ता था। उसे ऑनलाइन पढ़ाई के लिए मोबाइल की आवश्यकता पड़ी। उसके घर में एक भी मोबाइल नहीं था। वह अपने मित्र के घर जाकर पढ़ाई करता था। रोज-रोज दूसरों के घर जाकर पढ़ने में सूर्य को लज्जा का अनुभव होता था। सूर्य कुशाग्र बुद्धि का बालक था। माँ की तरह मेहनती था। उसकी माँ जिन घरों में कार्य करती थी, उनकी स्वामिनियों ने काम पर बुला लिया था, लेकिन सुन्दरी मोबाइल के पैसे देने में असमर्थ थी। सूर्य ने अपनी माँ से मोबाइल के रुपये नहीं माँगे और स्वयं कमाने की ठान ली। एक दिन काम के लिए बहुत घूमा, पर उसे काम पर लेने के लिए कोई तैयार नहीं हुआ। उसे यह उत्तर मिलता कि कुछ समय के लिए दुकानें खुलती हैं, इसलिए पुराने नौकरों से काम चल जाता है। ऐसे उत्तर सुनकर भी वह निराश नहीं हुआ। उसके घर पर जो

खाने के पैकेट देने आते थे उन व्यक्तियों के साथ काम के लिए चला गया।

सूर्य–''बाबूजी! आपके रसोड़े में मुझे काम दीजिए।''

बाबूजी–''बच्चे तू बहुत छोटा है। यहाँ का काम तू कर नहीं पाएगा।''

सूर्य–''बाबूजी एक दिन के लिए मुझे रख लीजिए मैं आपसे पैसे नहीं लूँगा। आप मेरा काम देख लीजिए।''

बाबूजी को बच्चे के विनम्र स्वभाव, लुभावनी भली शक्ल पर तरस आ गया और उसे काम पर रख लिया।

बाबूजी–''तेरा नाम क्या है?''

सूर्य–''सूर्य।''

बाबूजी–''अरे सूर्य! तभी तो तू चमक रहा है। तेरे पिताजी क्या काम करते हैं?''

सूर्य–''पिताजी स्टील की फैक्ट्री में काम करते थे, कोरोना महामारी के कारण उन्हें और अन्य पारिश्रमिकों को निकाल दिया। मैं आठवीं में पढ़ता हूँ। मेरी पढ़ाई ऑनलाइन होती है। मेरे पास स्मार्ट फोन नहीं है। मैं कमाऊँगा और मोबाइल खरीदूँगा।''

बाबूजी उसके काम से सन्तुष्ट थे और प्रतिदिन उसको मजदूरी दे देते थे। सूर्य पैसे अपनी दादी को देता था, क्योंकि उसकी माँ भी दादी को देती थी। उसकी दादी रुपये सन्दूक में इकट्ठे करने लगी।

दो-तीन महीने पश्चात् सूर्य ने दादी से कहा– ''दादी रुपये गिनो ना। पैसे इकट्ठे, कितने हुए हैं? दीपावली के शुभ दिन, मैं स्मार्ट मोबाइल खरीदूँगा। वह मेरा होगा, मैं उससे पढ़ाई करूँगा।''

दादी–''छह हजार रुपये इकट्ठे हो गये हैं।''

सूर्य–''तीन-चार हजार और चाहिए।''

लॉकडाउन खुल गया, रसोड़े के पैकेट बनने बन्द हो गए।

बाबूजी–''सूर्य! अब तुम मेरी फैक्ट्री में लग जाओ।''

सूर्य–''बाबूजी! फैक्ट्री में पूरे दिन काम करना पड़ता है मुझे तो ऑनलाइन पढ़ाई करनी है। आपकी फैक्ट्री तो बन्द है।''

सूर्य ने सोचा अब मैं कहाँ काम करूँ। सोचते-सोचते उसे याद आया मूला चाचा के यहाँ माल आ गया है। उनसे बात करूँ। बेचारा सूर्य मूला चाचा के घर गया।

सूर्य–''मूला चाचा! आपके तो घर में ही चूड़ी कटिंग का काम चलता है, इसको तो सरकार बन्द नहीं करवाएगी। चाचा मैं मास्क लगाकर आऊँगा। मुझे काम पर रख लीजिए।''

मूला चाचा–''सूर्य तुम कल से काम पर आ जाना। मुझे श्रमिक चाहिए। मेरे श्रमिक गाँव चले गए हैं।''

सूर्य बहुत खुश हुआ। चूड़ी कटिंग का कार्य सीख गया। प्रतिदिन पारिश्रमिक दादी को लाकर दे देता था।

दीपावली के दिन ललित चुपके से माँ की सन्दूक से साढ़े आठ हजार रुपये निकालकर मधुशाला वाले को देने चला गया। कोरोना के समय प्रतिदिन उधारी पर मद्यपान करता था। दीपावली के पहले दिन मधुशाला के स्वामी ने कहा था कल सारे पैसे चुका देना, नहीं तो शराब की बोतल नहीं मिलेगी। उसने उसे धमकी भी दी कि पैसे नहीं चुकाएगा तो पुलिस से पकड़वा दूँगा।

ललित पैसे चुराकर मधुशाला जा रहा था। रास्ते में जुआ खेलते लोगों की आवाज़ आई तो वह भी जुआ खेलने पहुँच गया। जुएँ में सारे रुपये गवाँ दिए। जुआरी तालियाँ बजा-बजा कर प्रफुल्लित हो रहे थे। ललित का ऐसा हाल हो रहा था कि काटो तो खून नहीं। लौटकर आ रहा था कि रास्ते में उसका मित्र मिल गया।

मित्र सोमेश–''ललित कहाँ जा रहे हो? मैं तुम्हें बाइक से छोड़ दूँगा।'' ललित की चिन्ता के कारण ध्वनि ही रुद्ध हो गई। ललित बोल क्यों नहीं रहे हो? बड़ा चिन्तित लग रहा है।''

सोमेश के बार-बार आग्रह के पश्चात् सकपकाया हुआ, काँपता हुआ अपनी सारी बीती बात बताई। सोमेश सुनकर अवाक् रह गया। सोमेश ललित को और कुछ

कहकर दुःखी करना नहीं चाहता था। दोनों ने घर में प्रवेश किया तो घर में मायूसी छाई हुई थी। सूर्य सवेरे जितना खुश था उतना ही दुःखी हो रहा था। घर में चूल्हा ही नहीं जला। सबके सब रो रहे थे। सोमेश ने रोने का कारण पूछा तो सभी मौन थे। सुन्दरी काम पर गई हुई थी।

सूर्य रोता हुआ अपने पापा की गोद में गिर सिर नीचा कर खूब रोने लगा। पापा मैंने सात-आठ महीने काम कर साढ़े आठ हजार रुपये इकट्ठे किये थे, वह सब चोरी हो गए। घर में कोई भी नहीं आया। मैं स्मार्ट मोबाइल कैसे खरीदूँगा। सूर्य की रोते-रोते घिग्घी बँध गई। सोमेश को पूरी घटना मालूम थी।

दादी-''सोमेश बेटा! घर में कोई आया नहीं। कल ही मैंने गिनकर रखे थे।'' सोमेश ने दीपावली के रंग में भङ्ग करना नहीं चाहा।

सोमेश-''बेटा सूर्य! दीपावली के उपलक्ष्य में गिरधारी, मोबाइल किश्तों पर दे रहा है। तेरे पिताजी माहवार किश्त चुकाते रहेंगे।''

सूर्य-''चाचा, पापा का काम छूटा हुआ है।''

सोमेश-''तेरे पिताजी को कहीं न कहीं काम पर लगवा देंगे। इसे काम पर सभी लेने को तैयार हैं। इसका काम बहुत अच्छा है। तू कपड़े पहन मेरे साथ चल। पहली किश्त मैं भरता हूँ और साक्षी भी मैं दूँगा।''

ललित शर्म के मारे ज़मीन में गड़ा जा रहा था। आँखें ऊँची नहीं उठ रही थी, मन में स्वयं के प्रति ग्लानि हो रही थी। हाय! इस मासूम बच्चे की अथक परिश्रम की कमाई दुर्व्यसनों में खो दी। मैं तो इनके सामने कुछ भी बोलने के लायक भी नहीं रहा हूँ। सोमेश कितना समझदार व्यक्ति है। वह सबके सामने मेरा रहस्य प्रकट कर सकता था, लेकिन उसने एक बाप की मर्यादा को बनाए रखा। उसकी मानवता धन्य है। मैं आज प्रभु की साक्षी में संकल्प लेता हूँ और दुर्व्यसनों का सदा के लिए त्याग करता हूँ।

इतने में सुन्दरी का प्रवेश हुआ। बच्चे जोर-जोर से बोलने लगे। मम्मी आ गई।

बच्चे-''मम्मी आप जल्दी आ गई। बैग में क्या लाई हैं?''

सुन्दरी-''आज दीपावली की भेंट में सभी घरों की स्वामिनियों ने मिठाई के डिब्बे और एक वर्ष के काम का बोनस दिया है। हाँ, तुम्हारे लिए नए-नए कपड़े भी लाई हूँ।''

सोमेश-''भाभी तुम्हारे आते ही घर स्वर्ग बन गया है।''

सुन्दरी ने मिठाई के डिब्बे खोले और एक थाली में मिठाई सजाकर लाई। सोमेश की मनुहार की और बच्चों में बाँट दी। रोता हुआ घर हँसने लगा। बिना दीपक जलाए ही घर जगमगाने लगा।

-ई 123, नेहरु पार्क, जोधपुर (राजस्थान)

प्र.1 सुन्दरी के चरित्र की कोई चार विशेषताएँ लिखिए।

प्र. 2 घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने पर सूर्य ने ऑनलाइन कक्षाएँ लेने का क्या उपाय निकाला?

प्र. 3 सोमेश ने ललित की किस प्रकार मदद की?

प्र. 4 ललित के समक्ष जो आर्थिक संकट उत्पन्न हुआ उसका क्या कारण था?

प्र. 5 दुर्व्यसन किस प्रकार हमारी हँसती-खेलती दुनिया को नरक बना देते हैं?

प्र. 6 तीन-तीन पर्यायवाची लिखिए-स्वामिनी, वेतन, कुशाग्र, प्रफुल्लित।

उपकारी जिनशासन

1. **जिनशासन हमें अरिहन्त एवं सिद्ध परमात्मा का बोध कराता है।**
2. **जिनशासन हमें आचार्य की परम्परा देता है।**
3. **जिनशासन हमें तीर्थङ्कर की वाणी रूप धर्म का स्वरूप बताता है।**
4. **जिनशासन हमें पाप-मुक्ति की राह बताता है।**

-संकलित

बाल-स्तम्भ [सितम्बर-2021] का परिणाम

जिनवाणी के सितम्बर-2021 के अंक में बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत 'उपयोगी उपहार' के प्रश्नों के उत्तर जिन बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, वे धन्यवाद के पात्र हैं। पूर्णांक 25 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	सुदर्शन कुमार जैन, चौथ का बरवाड़ा-स.मा. (राजस्थान)	25
द्वितीय पुरस्कार-300/-	सुहानी सुराणा, अजमेर (राजस्थान)	24
तृतीय पुरस्कार- 200/-	नमन जैन, हाउसिंग बोर्ड, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	23
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	अरिष्ट कोठारी, जयपुर (राजस्थान)	22
	काजल जैन, जयपुर (राजस्थान)	22
	दीपल जैन, कोटा (राजस्थान)	22
	अखिल पालड़ेचा, विजयनगर (राजस्थान)	22
	मनीष सूर्यकान्त चोरड़िया, जयपुर (राजस्थान)	22

बाल-जिनवाणी अक्टूबर, 2021 के अंक से प्रश्न (अन्तिम तिथि 15 दिसम्बर, 2021)

प्र. 1. पटाखे फोड़ने से किस तरह हमारे कर्मों का बन्ध होता है ?
प्र. 2. तिक्खुत्तो के पाठ में प्रयुक्त 'वन्दामि' और 'नमंसामि' दोनों शब्दों का प्रयोग क्यों किया जाता है ?
प्र. 3. What is Muhapatti? Mention four benefits of wearing Muhapatti.
प्र. 4. 'लकड़हारा नये जमाने का' कहानी हमें क्या सन्देश देती है ?
प्र. 5. भगवान महावीर स्वामी ने प्रत्याख्यान का क्या महत्त्व बतलाया है ?
प्र. 6. छोटे-छोटे नियम किस तरह हमारे जीवन को धर्ममय बना देते हैं ?
प्र. 7. ज़िन्दाबाद कविता में किन्हें ज़िन्दाबाद कहा है और क्यों ?
प्र. 8. महावीर बनने के लिए किस तरह का आचरण आवश्यक है ?
प्र. 9. When Gautam Swami asked Lord Mahavir about the special abilities of Anand Shravak, what did he answer?
प्र. 10. मूल शब्द एवं प्रत्यय अलग कीजिए-लकड़हारा, आत्मिक, नियन्त्रित और वन्दनीय।

बाल-जिनवाणी [अगस्त-2021] का परिणाम

जिनवाणी के अगस्त-2021 के अंक की बाल-जिनवाणी पर आधृत प्रश्नों के उत्तरदाता बालक-बालिकाओं का परिणाम इस प्रकार है। पूर्णांक 40 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-600/-	शुभम कुमार जैन, जयपुर (राजस्थान)	39
द्वितीय पुरस्कार-400/-	कविश जैन, चौथ का बरवाड़ा-स.मा. (राजस्थान)	38
तृतीय पुरस्कार- 300/-	नमिता जैन, अजमेर (राजस्थान)	37
सान्त्वना पुरस्कार (3)- 200/-	प्रणव भण्डारी, जोधपुर (राजस्थान)	36
	अरिन चोरड़िया, जयपुर (राजस्थान)	36
	यशवर्धन आहूजा, जयपुर (राजस्थान)	36

संस्कार केन्द्रों हेतु दो नये प्रकाशन

आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र एवं धार्मिक पाठशालाओं के अध्यापकों से निवेदन है कि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा दो नवीन पुस्तकों '*प्रभो! तुम्हारे पावन पथ पर*' और '*हमारे जीवन की नई कहानियाँ*' का प्रकाशन किया गया है, जो बच्चों के लिए संस्कार प्रदात्री हैं। अतः बच्चों के लिए इनका उपयोग करें। बालकों को संस्कारित करने का यह भी एक उत्तम साधन है। *-सम्पादक*

अहंकार के वृक्ष पर
विनाश के फल लगते हैं।

ओसवाल मेट्रीमोनी बायोडाटा बैंक

जैन परिवारों के लिये एक शीर्ष वैवाहिक बायोडाटा बैंक

विवाहोत्सुक युवा/युवती
तथा पुनर्विवाह उत्सुक उम्मीदवारों की
एवं उनके परिवार की पूरी जानकारी
यहाँ उपलब्ध है।

ओसवाल मित्र मंडल मेट्रीमोनियल सेंटर

४७, रत्नज्योत इंडस्ट्रियल इस्टेट, पहला माला,
इरला गांवठण, इरला लेन, विलेपार्ले (प.), मुंबई - ४०० ०५६.

फोन : **022 2628 7187**

ई-मेल : **oswalmatrimony@gmail.com**

सुबह १०.३० से सायं ४.०० बजे तक प्रतिदिन (बुधवार और बैंक छुट्टियों के दिन सेंटर बंद है)

गजेन्द्र निधि

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्जवल भविष्य की ओर एक कदम......

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

Acharya Hasti Meghavi Chatravritti Yojna Has Successfully Completed 13 Years And Contributed Scholarship To Nearly 4500 Students. Many Of The Students Have Become Graduates, Doctors, Software-Professionals, Engineers And Businessmen. We Look Forward To Your Valuable Contribution Towards This Noble Cause And Continue In Our Endeavour To Provide Education And Spirituals Knowledge Towards A Better Future For The Students. Please Donate For This Noble Cause And Make This Scholarship Programme More Successful. **We Have Launched Membership Plans For Donors.**

We Have Launched Membership Plans For Donors

	MEMBERSHIP PLAN (ONE YEAR)	
SILVER MEMBER RS.50000	GOLD MEMBER RS.75000	PLATINUM MEMBER RS.100000
DIAMOND MEMBER RS.200000		KOHINOOR MEMBER RS.500000

Note - Your Name Will Be Published In Jinwani Every Month For One Year.

The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad, Chennai (+91 95001 14455)

The Bank A/c Details is as follows - Bank Name & Address - AXIS BANK Anna Salai, Chennai (TN)

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund **IFSC Code** - UTIB0000168

A/c No. 168010100120722 **PAN No.** - AATG1995J

Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनायें रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पूण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवयों एवं अर्थ सहयोग एकत्रित करने करने वालों के नाम की सूची -

KOHINOOR MEMBER (RS.500000)

श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई।
श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्यूस्टन।
युवारत्न श्री हरीश जी कवाड़, चैन्नई।

DIAMOND MEMBER (RS.200000)

श्रीमान् प्रकाशचन्द जी भण्डारी, हरलूर रोड, बैंगलोर

SILVER MEMBER (RS.50000)

श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई।
श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई।
श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई।
श्रीमान् महावीर सोहनलाल जी बोथरा, जलगांव (भोपालगढ़)
श्रीमान् सोहनराज जी बाघमार, कोयम्बटूर।
कन्हैयालाल विमलादेवी हिरण चैरिटेबल ट्रस्ट, अहमदाबाद।
श्रीमान् गुप्त सहयोगी, अहमदाबाद।
श्रीमती हेमलता मदनलाल जी सांखला, मुम्बई।
श्रीमान् अमीरचन्द जी जैन (गंगापुरसिटी वाले), मानसरोवर, जयपुर
श्रीमती सुशीला जी साण्ड धर्मपत्नी स्व. श्री कस्तूरमल जी साण्ड, अजमेर

PLATINUM MEMBER (RS.100000)

श्रीमान् दूलीचन्द बाघमार एण्ड संस, चैन्नई।
श्रीमान् दलीचन्द जी सुरेश जी कवाड़, पून्नामल्लई।
श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई।
श्रीमान् प्रेम जी कवाड़, चैन्नई।
श्रीमान् अम्बालाल जी बसंतीदेवी जी कर्नावट, चैन्नई।
श्रीमान् सम्पतराज जी राजकवंर जी भंडारी, ट्रिपलीकेन-चैन्नई।
कन्हैयालाल विमलादेवी हिरण चैरिटेबल ट्रस्ट, अहमदाबाद।
प्रो. डॉ. शैला विजयकुमार जी सांखला, चालीसगांव (महा.)।
श्रीमान् विजय जतिन जी नाहर, इन्दौर।
श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई।
श्रीमान् विजयकुमार जी मुकेश जी विनीत जी गोठी, मदनगंज-किशनगढ़।
श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, तमिलनाडू।
श्रीमती पुष्पाजी लोढ़ा, नेहरू पार्क, जोधपुर।
श्रीमान जी. गणपतराजजी, हेमन्तकुमारजी, उपेन्द्रकुमारजी, कोयम्बटूर (कोसाणा वाले)
श्रीमान सुगनचन्द जी छाजेड़, चौपासनी रोड, जोधपुर।

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें - M.Harish Kavad - No. 5, Car Street, Poonamallee, **CHENNAI-56**
छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें - मनीष जैन, चैन्नई (+91 95430 68382)

'छोटा सा चिन्तन परिग्रह को हल्का करने का, लाभ बड़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का'

जिनवाणी की प्रकाशन योजना में आपका स्वागत है

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा विगत 77 वर्षों से प्रकाशित 'जिनवाणी' हिन्दी मासिक पत्रिका मानव के व्यक्तित्व को निखारने एवं ज्ञानवर्धक सामग्री परोसने का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है। इसमें अध्यात्म, जीवन-व्यवहार, इतिहास, संस्कृति, जीवन मूल्य, तत्त्व-चर्चा आदि विविध विषयों पर पाठ्य सामग्री उपलब्ध रहती है। अनेक स्तम्भ निरन्तर प्रकाशित हो रहे हैं, जिनमें सम्पादकीय, विचार-वारिधि, प्रवचन, शोधालेख, अंग्रेजीलेख, युवा-स्तम्भ, नारी-स्तम्भ आदि के साथ विभिन्न गीत, कविताएँ, विचार, प्रेरक प्रसङ्ग आदि प्रकाशित होते हैं। नूतन प्रकाशित साहित्य की समीक्षा भी की जाती है।

जैनधर्म, संघ, समाज, संगोष्ठी आदि के प्रासङ्गिक महत्त्वपूर्ण समाचार भी इसकी उपयोगिता बढ़ाते हैं। जनवरी, 2017 से 8 पृष्ठों की 'बाल जिनवाणी' ने इस पत्रिका का दायरा बढ़ाया है। अनेक पाठकों को प्रतिमाह इस पत्रिका की प्रतीक्षा रहती है तथा वे इसे चाव से पढ़ते हैं। जैन पत्रिकाओं में जिनवाणी पत्रिका की विशेष प्रतिष्ठा है। इस पत्रिका का आकार बढ़ने तथा कागज, मुद्रण आदि की महँगाई बढ़ने से समस्या का सामना करना पड़ रहा है। जिनवाणी पत्रिका की आर्थिक स्थिति को सम्बल प्रदान करने के लिए पाली में 28 सितम्बर, 2019 को आयोजित कार्यकारिणी बैठक में निम्नाङ्कित निर्णय लिये गए, जिन्हें अप्रेल 2020 से लागू किया गया है-

वर्तमान में श्वेत-श्याम विज्ञापनों से जिनवाणी पत्रिका को विशेष आय नहीं होती है। वर्ष भर में उसके प्रकाशन में आय अधिक राशि व्यय हो जाती है। अत: इन विज्ञापनों को बन्दकर पाठ्य सामग्री प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया।

आर्थिक-व्यवस्था हेतु एक-एक लाख की राशि के प्रतिमाह दो महानुभावों के सहयोग का निर्णय लिया गया। ऐसे महानुभावों का एक-एक पृष्ठ में उनके द्वारा प्रेषित परिचय/सामग्री प्रकाशित करने के साथ वर्षभर उनके नामों का उल्लेख करने का प्रावधान भी रखा गया।

जिनवाणी पत्रिका के प्रति अनुराग रखने वाले एवं हितैषी महानुभावों से निवेदन है कि उपर्युक्त योजना से जुड़कर श्रुतसेवा का लाभ प्राप्त कर पुण्य के उपार्जक बनें। जो उदारमना श्रावक जुड़ना चाहते हैं वे शीघ्र मण्डल कार्यालय या पदाधिकारियों से शीघ्र सम्पर्क करें।

अर्थसहयोगकर्ता जिनवाणी (JINWANI) के नाम से चैक प्रेषित कर सकते हैं अथवा जिनवाणी के निम्नाङ्कित बैंक खाते में राशि नेफ्ट/नेट बैंकिंग/चैक के माध्यम से सीधे जमा करा सकते हैं।

बैंक खाता नाम-JINWANI, बैंक-State Bank of India, बैंक खाता संख्या-51026632986, बैंक खाता-SAVING Account, आई.एफ.एस. कोड-SBIN0031843, ब्रॉच-Bapu Bazar, Jaipur

राशि जमा करने के पश्चात् राशि की स्लिप मण्डल कार्यालय या पदाधिकारियों की जानकारी में लाने की कृपा करें जिससे आपकी सेवा में रसीद प्रेषित की जा सके।

'जिनवाणी' के खाते में जमा करायी गई राशि पर आपको आयकर विभाग की धारा 80G के अन्तर्गत छूट प्राप्त होगी, जिसका उल्लेख रसीद पर किया हुआ है। 'जिनवाणी' पत्रिका में जन्मदिवस, शुभविवाह, नव प्रतिष्ठान, नव गृहप्रवेश एवं स्वजनों की पुण्य-स्मृति के अवसर पर सहयोग राशि प्रदान करने वाले सभी महानुभावों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। आप जिनवाणी पत्रिका को सहयोग प्रदान करके अपनी खुशियाँ बढ़ाना न भूलें।

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 9314625596

जिनवाणी प्रकाशन योजना के लाभार्थी

'जिनवाणी' हिन्दी मासिक पत्रिका की अर्थ-व्यवस्था को सम्बल प्रदान करने हेतु निम्नाङ्कित धर्मनिष्ठ उदारमना श्रावकरत्नों से राशि रुपये 1,00,000/- प्राप्त हुई है। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं जिनवाणी परिवार उनका हार्दिक आभारी है।

(1) मैसर्स नयनतारा रतनलाल सी. बाफणा एण्ड सन्स, जलगाँव
(2) श्री राजरूपमलजी, संजयजी, अंजयजी, दिवेशजी मेहता, शिवाकाशी
(3) डॉ. एस. एल. नागौरीजी, बून्दी
(4) श्री अरुणजी मेहता, सुनीताजी मेहता छत्तरछाया फाउण्डेशन, जोधपुर
(5) श्री उम्मेदराजजी, एवन्तकुमारजी, राजेशकुमारजी डूंगरवाल (थाँवला वाले), पाँच्यावाला-जयपुर
(6) श्री चंचलराजजी मेहता, अहमदाबाद
(7) श्री जिनेश कुमारजी, रोहितराजजी जैन (ढहरा वाले), हिण्डौनसिटी-जयपुर
(8) श्री सागरमलजी, हुकमचन्दजी नागसेठिया, शिरपुर
(9) श्री क्रान्तिचन्दजी मेहता, अलवर

वित्तीय वर्ष 2021-22 हेतु लाभार्थी

(1) श्री भागचन्दजी हेमेशजी सेठ, जयपुर
(2) श्री सौभाग्यमलजी, हरकचन्दजी, हनुमान प्रसादजी, महावीर प्रसादजी, कपूरचन्दजी जैन (बिलोता वाले), अलीगढ़-रामपुरा, सवाईमाधोपुर, कोटा एवं जयपुर
(3) श्री स्वरूपचन्दजी बाफना, सूरत
(4) श्री सुमतिचन्दजी कोठारी, जयपुर
(5) श्री पवनलालजी मोतीलालजी सेठिया, होलनांथा
(6) श्रीमती अलकाजी, विजयजी नाहर, इन्दौर
(7) सेठ चंचलमल गुलाबदेवी सुराणा ट्रस्ट, बीकानेर
(8) डॉ. सुनीलजी, विमलजी चौधरी, दिल्ली
(9) इन्दर कुमार मनीष कुमार सुराणा चेरिटेबल ट्रस्ट, बीकानेर
(10) श्री गणपतराजजी, हेमन्त कुमारजी, उपेन्द्र कुमारजी बाघमार (कोसाणा वाले), कोयम्बटूर
(11) Shri Ankit ji lodha, Jewels of Jaipur Gie gold creations Pvt Ltd, Mahaveer Nagar, Jaipur
(12) श्री राधेश्यामजी, कुशलजी, पदमजी, अशोकजी गोटेवाला, सवाईमाधोपुर (राज.)
(13) श्री सुरेशचन्दजी इन्दरचन्दजी मुणोत, लासूर स्टेशन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
(14) श्री कस्तूरचन्दजी, सुशील कुमारजी, सुनील कुमारजी बाफना, जलगाँव (महाराष्ट्र)
(15) पुष्पा चन्द्रराज सिंघवी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई (महाराष्ट्र)
(16) श्री राजेन्द्रजी नाहर, भोपाल (मध्यप्रदेश)
(17) श्रीमती लाडजी हीरावत, जयपुर (राजस्थान)

उदारमना लाभार्थियों की अनुमोदना
एवं
स्वेच्छा से नये जुड़ने वाले लाभार्थियों का
हार्दिक स्वागत।

JVS
PURITY

JVS Foods Pvt. Ltd.

Manufacturer of :

- NUTRITION FOODS
- BREAKFAST CEREALS
- FORTIFIED RICE KERNELS
- WHOLE & BLENDED SPICES
- VITAMIN AND MINERAL PREMIXES

Special Foods for undernourished Children
Supplementary Nutrition Food for Mass Feeding Programmes

With Best Wishes :

JVS Foods Pvt. Ltd.

G-220, Sitapura Ind. Area,
Tonk Road, Jaipur-302022 (Raj.)
Tel.: 0141-2770294
Email-jvsfoods@yahoo.com
Website-www.jvsfoods.com
FSSAI LIC. No. 10012013000138

CERTIFIED ISO 22000 CERTIFIED

Food Safety System Certification 22000

KALPA-TARU®
WELCOME TO A HOME THAT DOESN'T FORCE YOU TO CHOOSE. BUT, GIVES YOU EVERYTHING INSTEAD.
Life is all about choices. So, at the end of your long day, your home should give you everything, instead of making you choose. Kalpataru welcomes you to a home that simply gives you everything under the sun.
022 3064 3065
ARTIST'S IMPRESSION

Centrally located in Thane (W) | Sky park | Sky community | Lavish clubhouse | Swimming pools | Indoor squash court | Badminton courts

PROJECT
IMMENSA
THANE (W)
EVERYTHING UNDER THE SUN

TO BOOK 1, 2 & 3 BHK HOMES, CALL: +91 22 3064 3065

Site Address: Bayer Compound, Kolshet Road, Thane (W) - 400 601. | **Head Office**:101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. | Tel: +91 22 3064 5000 | Fax: +91 22 3064 3131 | **Email**: sales@kalpataru.com | **Website**: www.kalpataru.com

In association with
HDFC
PROPERTY FUND

This property is secured with Axis Trustee Services Ltd. and Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate/Permission would be provided, if required. All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. *Conditions apply.

If undelivered, Please return to

Samyaggyan Pracharak Mandal
Above Shop No. 182,
Bapu Bazar, Jaipur-302003 (Raj.)
Tel. : 0141-2575997

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - अशोक कुमार सेठ द्वारा डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन